नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन
सितम्बर '९०
४ रुपए

Scanned with CamScanner
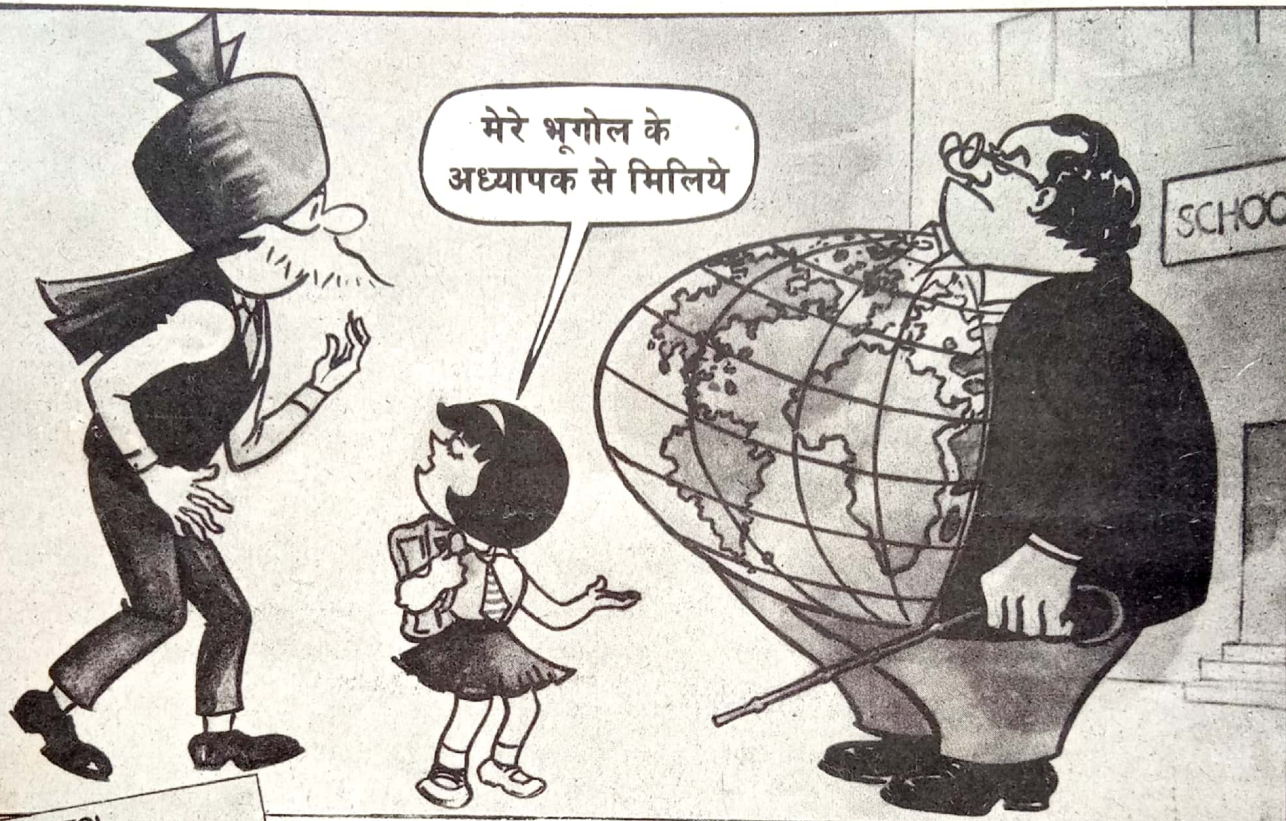
डायमण्ड कॉमिक्स
मेरे भूगोल के अध्यापक से मिलिये
SCHOO
पिंकी का जन्मदिन
फौलादी सिंह और लम्बू का अपहरण
ताऊ जी और लालची जादूगर
मामा भांजा और बालक का बलिदान
पिंकी और चमत्कारी चाचा
अंकुर बाल बुक क्लब
सवस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :–
1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क दस रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- रुपये ही विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हो तो डायमंड कामिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पाँच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।
सवस्यता कूपन
मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क दस रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता हूँ/करती हूँ।
नाम ....
पिता का नाम ....
पता ....
डाकखाना .... जिला ....
डायमंड कामिक्स (प्रा०) लिमिटेड
2715, दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002

पत्र मिला

☐ जुलाई अंक परियों का अंक था। मुख पृष्ठ भी बहुत आकर्षक था। 'बगिया के फूल', 'नीला पहाड़ पीली नदी', 'चमचम धरती' और 'जागने वाली चिड़िया' कहानी विशेष पसंद आईं। चित्र कथा 'फंदे में शेर' अनूठी थी।

—प्रज्ञा त्रिपाठी, लखनऊ

☐ अद्‌भुत, रोचक, बेजोड़। समस्त रचनाएं पठनीय। सबसे अच्छे पृष्ठ बच्चों के बनाए चित्रों के। प्रतिभा का प्रदर्शन देख निहाल हो गया। **—राजेश जैन धन्नू, देवकर (म.प्र.)**

☐ कितनी प्यारी होती 'नंदन', कितनी बढ़िया लगती 'नंदन', भारत हो या फिर हो लंदन, सबका ज्ञान बढ़ाती 'नंदन'।

—शलभ जैन, मुजफ्फरनगर

☐ वाह! 'नंदन का परी-कथा विशेषांक मन को भा गया। 'एलबम' में 'ताजमहल' की छवि अच्छी लगी। 'उजली परी', 'बजी बांसुरी', 'कैद में परी', 'भीतर हाथी' कहानियां तथा 'चीटू-नीटू' मन को छू गए। कविताएं भी खूब रोचक थीं। **—आलोककुमार 'चंदन', समस्तीपुर**

☐ इटली में इतना बड़ा विश्व कप फुटबाल मेला हुआ। चौबीस देशों के खिलाड़ियों ने भाग लिया। हमारी प्यारी पत्रिका 'नंदन' ने उनमें से एक भी खिलाड़ी का परिचय हमसे नहीं कराया। **—अनिल आनंद, दरभंगा**

☐ मैं सदा बीमार रहता हूं। जब से 'नंदन' पढ़ने लगा हूं, ठीक होने लगा हूं। ताजा अंक पूरा का पूरा पढ़ गया हूं।

—गोपालकृष्ण बिड़ला, भीलवाड़ा

☐ जब 'नंदन' दो रुपए का था, तब से इसे पढ़ रहा हूं। आपको बहुत-से पत्र लिखे, मगर जवाब नहीं मिला। मैंने भी कसम खा रखी है कि अपनी प्रिय पत्रिका को पत्र लिखता ही रहूंगा। **—सुरेंद्रकुमार जैन, रायपुरा पिपरा**

☐ इस पत्रिका ने मुझे लिखना-पढ़ना और बोलना सिखाया। इसमें सबसे अच्छी कहानियां छपती हैं। जुलाई अंक में 'तेनालीराम' ने राजा को उसकी भूल का अहसास खूब कराया। **—मो. यूसुफ हसन, रकाबगंज, हिकारी**

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : अरुण पांडेय, नई दिल्ली; संतोषकुमार वर्मा, टोंगपाल (बस्तर); हिम्मतसिंह चौहान, जोधपुर।

परी-कथा विशेषांक पर पाठकों ने हजारों पत्र भेजे। हमें अच्छी रचनाओं के लिए तो बधाई दी ही, ताजमहल का रंगीन चित्र छापने पर भी खूब सराहना की। हम पाठकों का धन्यवाद करते हैं।

—सम्पादक

Scanned with CamScanner

आओ बात करें

राजा रिपुदमन को एक रात सपना आया— सामने आम का पेड़ है । पेड़ पर एक बहुत बड़ा आम लगा है । इतना बड़ा आम राजा ने पहले कभी नहीं देखा था । आम तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाते तभी आम गायब हो जाता।

इसके बाद राजा रिपुदमन की नींद खुल गई । वह सपने के बारे में सोचते हुए अपने उद्यान में पहुंच गए । वहां आम के कई पेड़ थे । पर जितना बड़ा आम सपने में देखा था, वैसा एक भी नहीं था । राजा ने माली को सपने के बारे में बताया । फिर पूछने लगे—" क्या इतना बड़ा आम यहां नहीं है ?"

"अन्नदाता, यहां लगे आम बहुत रसीले हैं, पर जितना बड़ा आम आप बता रहे हैं, वैसा मैंने कहीं नहीं देखा ।"

राजा ने कहा— "अगर उतना बड़ा आम नहीं होता, तो फिर हमने सपने में कैसे देखा ? कहीं न कहीं उतना बड़ा आम जरूर फलता होगा । हमें पता लगाकर बताओ ।"

माली चुप हो गया । फिर कुछ दिनों की मोहलत मांगकर चलने लगा, तो रिपुदमन ने कहा— "जल्दी पता लगाकर आओ । हम अपने उद्यान में उसी आम के पेड़ लगवाएंगे ।"

एक दिन माली वन की तरफ निकल गया । उदास एक पेड़ के नीचे जा बैठा । तभी सामने वाले पेड़ से एक बंदर नीचे गिरा और बेहोश हो गया । कुछ देर बाद वहां एक साधु आए । उन्होंने बंदर के शरीर पर हाथ फेरा, तो बंदर को होश आ गया ।

यह देखकर माली सोचने लगा— 'यह साधु बाबा तो चमत्कारी हैं । शायद मेरी समस्या हल कर सकें ।' वह उठा और साधु के चरणों पर लोट गया । साधु के पूछने पर उसने सारी बात बता दी । सुनकर साधु बोले— "आओ, मेरे साथ ।"

माली को साथ ले, साधु आश्रम में आए । वहां सामने ही आम का एक पेड़ था । उस पर एक ही आम लगा था । आम आकार में बहुत बड़ा था ।

माली वापस राजधानी चला गया । उसने राजा को सारी बात बता दी । सपने का आम सचमुच कहीं मौजूद है, यह जानकार राजा प्रसन्न हो उठा । वह माली के साथ साधु के आश्रम में आया ।

साधु बाबा राजा को आम के पेड़ पास ले गए । आम देखते ही राजा ने कहा— "हां, मैंने सपने में यही आम देखा था । इसे मुझे दे दीजिए ।"

साधु ने कहा— "राजन, तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी होगी ।" कहते हुए उन्होंने आम तोड़कर राजा को दे दिया । आम से मीठी-मीठी सुगंध उठ रही थी । राजा ने आम खाया, तो बहुत आनंद आया । फिर उसकी आंखें मुंदने लगीं । वह आम के पेड़ के नीचे सो गया ।

एकाएक राजा की नींद खुल गई । सारे शरीर में जलन हो रही थी । राजा की नजर अपने हाथों पर गई, तो चौंक उठा । हाथ बहुत बड़े-बड़े और बेडौल हो गए थे । पैरों की भी यही दशा थी । 'यह क्या हुआ ।'—राजा चीख उठा । तभी उसने साधु को आते देखा । साधु के हाथ में एक वैसा ही आम था । बोले— "उस पेड़ पर एक आम सदा मौजूद रहता है । चाहे जितने तोड़ लो । तुम इस तरह के आमों के पेड़ राजमहल के बाग में लगवाना । इसे ले जाओ ।"

"बाबा मुझे क्षमा कीजिए । अब मुझे यह आम नहीं चाहिए । हां, आप मेरी एक इच्छा पूरी कर सकें, तो .... ।"

"कौन-सी इच्छा ?"— साधु ने पूछा ।

"आप मेरी कुरूपता मिटा दें । मुझे पहले जैसा बना दें ।" —राजा ने विनीत होकर कहा

साधु बाबा ने राजा के सिर पर हाथ रखा, तो उसके शरीर की जलन शांत हो गई । उसका शरीर पहले जैसा हो गया । उन्होंने कहा— "अनहोने सपने के पीछे भागोगे, तो सच्चाई से दूर हो जाओगे । सच्चाई से दूर होने पर कष्ट तो उठाना ही पड़ता है ।" यह सुनकर राजा सिर झुकाए खड़ा रह गया।

—तुम्हारे भइया

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

नंदन सितम्बर'९०

वर्ष : २६ अंक : ११

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : मंजुला एलबम : राजेन्द्रकुमार वधवा

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन

धरती डोली

—गौतमकुमार

एक दिन विश्वकर्मा ब्रह्मा की बनाई सृष्टि को देखने पृथ्वी पर आए । मनोरम दृश्यों को देख, वह बहुत खुश हुए ।

मनुष्य सर्दी-गर्मी से बचने के लिए गुफाओं में रहते थे । वृक्षों की छाल और पत्तों का वस्त्र के रूप में उपयोग करते थे । मनुष्यों की दयनीय स्थिति देख, उनके आंसू बहने लगे ।

विश्वकर्मा ने मन ही मन संकल्प किया कि वह मनुष्यों को इस दुःख से उबारेंगे । मन में यही उद्देश्य लिए वह ब्रह्मलोक पहुंचे । हाथ जोड़ स्तुति कर, ब्रह्मा से बोले— "प्रभु, मैं भूलोक से आ रहा हूं । वहां मनुष्यों को कष्ट में देखकर बहुत दुखी हूं । मनुष्यों को अपने रहने के लिए भवन बनाना नहीं आता । वस्त्र बुनना भी नहीं जानते । वे धरती पर बहुत दुखी हैं ।"

कुछ क्षण रुककर वह बोले—"प्रभु, आपकी और देवी सरस्वती की कृपा हो, तो मनुष्यों का कष्ट दूर हो सकता है ।"

ब्रह्मा मुसकराए । बोले—"हे विश्वकर्मा, मैंने सिर्फ सृष्टि रची थी । परंतु मनुष्यों को जीवन यापन की कलाओं का ज्ञान देना सरस्वती का काम है ।"

ब्रह्माजी की बातें सुन, सरस्वती मुसकराकर बोलीं— "विश्वकर्मा, तुम देवताओं के महान अभियंता हो । तुम सभी कलाओं के विशेषज्ञ हो । भूलोक में जाकर मनुष्यों में अपना ज्ञान बांटो । मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है ।"

विश्वकर्मा पृथ्वी पर लौट आए । उन्होंने विंध्याचल पर्वत पर कला नगरी का निर्माण किया । वहीं रहकर वह मनुष्यों को भवन निर्माण कला, वस्त्र बुनने की कला, मूर्ति कला आदि की शिक्षा देने लगे ।

देवी सरस्वती की कृपा और विश्वकर्मा के प्रयास से शीघ्र ही मनुष्यों का जीवन बदल गया । अब मनुष्य भवन में रहने लगे थे । वस्त्र बुनने की कला भी वे सीख चुके थे । दूर-दराज की यात्रा करने के लिए अब रथ का प्रयोग करने लगे थे ।

वसु विश्वकर्मा का प्रिय शिष्य था । वह बहुत दयालु और विनीत स्वभाव का था । एक दिन विश्वकर्मा वसु से बोले—"वत्स, मेरा उद्देश्य पूर्ण हुआ । मैं स्वर्ग जा रहा हूं । तुम सभी कलाओं में पारंगत हो चुके हो । भविष्य के लिए ऐसे कलाकार पैदा करो कि वे इस धरती के मनुष्य की जरूरतें पूरी कर सकें ।"

"जैसी आपकी आज्ञा, गुरुवर !"—वसु श्रद्धा से सिर झुकाकर बोला ।

वसु पर कला नगरी का भार सौंपकर विश्वकर्मा स्वर्ग लौट गए ।

वसु निःस्वार्थ भाव से शिष्यों को शिक्षा देने लगा । ईश्वर की कृपा से उसे किसी चीज की कमी नहीं थी । एक दिन वसु मातृदेवी की प्रतिमा बनाने में व्यस्त था । तभी आकाशवाणी हुई—'वसु, विश्वकर्मा की भव्य प्रतिमा बनाओ । उसे कला नगरी में स्थापित कर पूजन करो ।' वसु विश्वकर्मा की प्रतिमा बनाने में जुट गया । कई महीने लगातार परिश्रम करने के बाद विश्वकर्मा की प्रतिमा तैयार हुई । कला नगरी में एक सुंदर मंदिर का निर्माण कर, वसु ने प्रतिमा स्थापित की ।

वसु अब नित्य अपने शिष्यों के साथ विश्वकर्मा की पूजा करता था । वसु की पत्नी थी शुचि । देवासु उसकी एक मात्र संतान था ।

देवासु मूर्ति कला का महान ज्ञाता था । परंतु वह स्वभाव से बहुत अहंकारी और क्रोधी था । वसु की

मृत्यु के बाद देवासु आचार्य बना। उसे कभी कोई पसंद नहीं करता था।

एक बार की बात है। देवराज इंद्र देवासु से मिलने कला नगरी आए। देवासु ने उनका खूब आदर-सत्कार किया। इंद्र तो स्वर्ग लौट गए। परंतु उस दिन से देवासु ने विश्वकर्मा की पूजा करनी बंद कर दी। यही नहीं, उसने अपने सभी शिष्यों को विश्वकर्मा की पूजा न करने का आदेश दिया। अब वह अपने को विश्वकर्मा से भी श्रेष्ठ समझने लगा था। उसने अपने पिता द्वारा स्थापित विश्वकर्मा की मूर्ति भी हटवा दी। उस स्थान पर उसने अपनी प्रतिमा स्थापित करवा दी। वह अपने शिष्यों पर दबाव डालने लगा कि वे उसकी पूजा करें।

विश्वकर्मा को यह सब पता चला, तो वह बहुत दुखी हुए। उन्हें दुखी देख, नारद बोले—''प्रभु, आप बहुत ही दुखी हैं। क्या कारण है ? कृपया हमें भी बताएं।''

विश्वकर्मा बोले—''देवर्षि, आप तो अंतर्यामी हैं। देवासु को अपने ऊपर इतना अभिमान हो गया है। सारे संसार के मनुष्यों से वह अपनी पूजा करवा रहा है।''

''प्रभु, देवासु ने घोर अपराध किया है। उसे दंड मिलना ही चाहिए। अन्यथा संसार में सदा के लिए लोग आपको भुला देंगे। फिर कहीं भी आपकी पूजा नहीं होगी।''—नारद बोले।

विश्वकर्मा दुखी होते हुए बोले—''मैं क्या करूं, देवर्षि ? देवासु मेरे प्रिय शिष्य वसु का ही तो पुत्र है। क्या दंड दूं उसे ? आप ही जाकर उसे कुछ समझाइए।''

नारद विश्वकर्मा को प्रणाम कर, कला नगरी की ओर चल दिए।

कला नगरी में देवासु ने नारद का खूब आदर-सत्कार किया। देवासु के नम्र व्यवहार से नारद प्रसन्न हुए।

''हे ऋषिश्रेष्ठ, आपकी चरण रज से आज यह कला नगरी पवित्र हुई। यह मेरा अहोभाग्य है कि आप हमारे यहां पधारे। किस प्रयोजन से आना हुआ ?''—देवासु नम्रता से बोला।

—''देवासु, मैं तुम्हारी आंखें खोलने आया हूं। तुमने भगवान विश्वकर्मा के प्रति घोर अपराध किया है। जिसके कारण तुम आज सुखी-सम्पन्न हो, उन्हीं को भूल गए। उन्हीं का अपमान करने लगे।''

''ऋषिश्रेष्ठ, मैं विश्वकर्मा से श्रेष्ठ हूं। मैंने जो भी किया, उचित किया।''—देवासु बोला।

नारद देवासु को पुनः समझाते हुए बोले—''देवासु, ठंडे दिमाग से सोचो। अपनी गलती पर पश्चात्ताप करो। भगवान विश्वकर्मा से क्षमा मांगकर, उनकी पूजा करो। इसी में तुम्हारा कल्याण है।''

देवासु को नारद की ये बातें अच्छी नहीं लगीं। वह क्रोधित हो उठा। बोला—''आप मुझे उपदेश देने आए हैं। निकल जाइए यहां से।''

यह सुन, नारद भी क्रोध से कांपने लगे।

तभी एक दिव्य प्रकाश पुंज चमका। उसमें से विश्वकर्मा प्रकट हुए। बोले—''देवासु, देवर्षि नारद का अपमान कर, तुमने बहुत बड़ा अपराध किया। जिस ज्ञान और धन पर तुम इतना अहंकार करते हो, वह अभी, इसी क्षण समाप्त हो जाएगा।''

तभी भयंकर गर्जन से आकाश गूंज उठा। भूमि डोलने लगी। कुछ ही क्षणों में विशाल कला नगरी खंडहर में बदलकर भूमि में समा गई। ●

घड़ा गायब

—मगन बाबा

एक किसान था रामधन। थोड़ी-सी खेती थी उसके पास। उसका बेटा था विशन। बाप-बेटे कड़ी मेहनत करते, तब कहीं जाकर गुजारा चल पाता था।

बरसात का मौसम था। रामधन और विशन खेत में काम कर रहे थे। अचानक रामधन जोर से चीखा। विशन ने देखा, पिता के पैर से खून बह रहा है। रामधन को किसी कीड़े ने काट खाया था।

एक रोज विशन किसी काम से बाहर गया हुआ था। विमला अकेली ही खेत में काम कर रही थी। वह थक गई, तो पेड़ के नीचे बैठ सुस्ताने लगी। उसे नींद ने आ घेरा। कुछ देर बाद नींद टूटी। उसने झाड़ी के पास एक घड़ा रखा देखा। घड़े में ऊपर तक सोने की मोहरें भरी थीं। वह समझ नहीं सकी कि घड़ा कौन रख गया?

काफी सोच-विचार के बाद विमला ने कुछ मोहरें निकालीं। तभी एक आवाज सुनाई पड़ी-'इस धन के बारे में किसी को कुछ न बताना। वर्ना, सारा धन गायब हो जाएगा।'

विमला यह सुन चौंकी। आसपास उसने देखा, पर उसे कोई नजर नहीं आया। उसने घड़े को पेड़ के नीचे गड्ढे में दबा दिया। रामधन कुछ दिनों में ठीक हो गया। एक दिन मौका पाकर पत्नी ने उसे धन मिलने की बात बता दी।

रामधन पत्नी की पूरी बात सुने बिना ही खेत की ओर भागा। उसने गड्ढा खोदा। घड़ा नदारद था। पत्नी से बोला—"घड़ा कहां है?"

विमला बोली—"अब नहीं मिलेगा।" फिर उसने सारी बात बता दी। रामधन बौखलाया—"जब यह बात थी, तब तुम्हें धन के बारे में कुछ कहना ही नहीं चाहिए था। मिला हुआ धन मूर्खता से तुमने खो दिया।"

"पति से कब तक यह बात छिपाती। तुम बीमार थे। घर में तंगी थी। कुछ मोहरें मैं ले आई थी। अब तुम ठीक हो गए हो, इसलिए तुम्हें सब कुछ बता दिया।"

रामधन मन मसोसकर रह गया। कुछ दिन बीते कि विशन बीमार पड़ गया। घर में तंगी होने लगी। रामधन का स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था। एक दिन पत्नी से बोला—"जाओ, धन लेकर आओ। एक दिन तुमने ही धन मिलने की बात कहीं थी।"

पत्नी ने कहा—"कल तुम मेरे साथ चलना। तुम्हें धन अवश्य मिल जाएगा।"

अगले दिन रामधन पत्नी के साथ पेड़ के पास पहुंचा। वहां एक घड़ा रखा था जिसमें सोने की मोहरें थीं। रामधन घड़ा देख चौंका। पत्नी बोली—"देखा, मेरी बात सही निकली न!"

रामधन ने कुछ मोहरें निकालनी चाहीं, तो पत्नी ने टोका। बात बढ़ गई। तभी एक आदमी पेड़ से उतरा। बोला—"घबराओ मत, मैं एक व्यापारी हूं। व्यापार को निकला था। एक दिन कुछ चोर मेरा पीछा कर रहे थे। संयोग से मैं छिपता हुआ यहीं पहुंच गया। पास ही झाड़ी में मैंने मोहरों से भरा घड़ा छिपा दिया। वही घड़ा तुम्हारी पत्नी को मिल गया। यह मोहरें निकालने लगी, तो मैंने स्वर बदलकर कहा कि यदि धन के बारे में किसी को बताया, तो सारा खजाना गायब हो जाएगा। तुम्हारी पत्नी ने चार-पांच मोहरें यह कहते हुए निकालीं कि तुम्हारी हालत ठीक होते ही वह मोहरें यहीं रख देगी। धन मिलने की बात भी तुम्हें बता देगी। इसके जाने के बाद मैंने घड़ा निकाल लिया। वह तुम्हें कैसे मिलता? संयोग से एक दिन मैं यहां से गुजर रहा था। तुम दोनों की बातें सुनीं। तुम्हारी पत्नी की बात को सही साबित करने के लिए मुझे यहां दोबारा धन छिपाना पड़ा। अब यह सारा धन उसी का है।"—कहकर उसने घड़ा विमला की ओर बढ़ाया।

—"नहीं, मुझे चार-पांच मोहरें दे दीजिए। जब मेरा बेटा ठीक हो जाएगा तब लौटा दूंगी।"

व्यापारी ने दस मोहरें देते हुए कहा— "अब इन्हें लौटाने की जरूरत नहीं है। यह तुम्हारी ईमानदारी का पुरस्कार है।" ●

नंदन के पाठकों को
स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं
एस एफ रोड्रिग्स
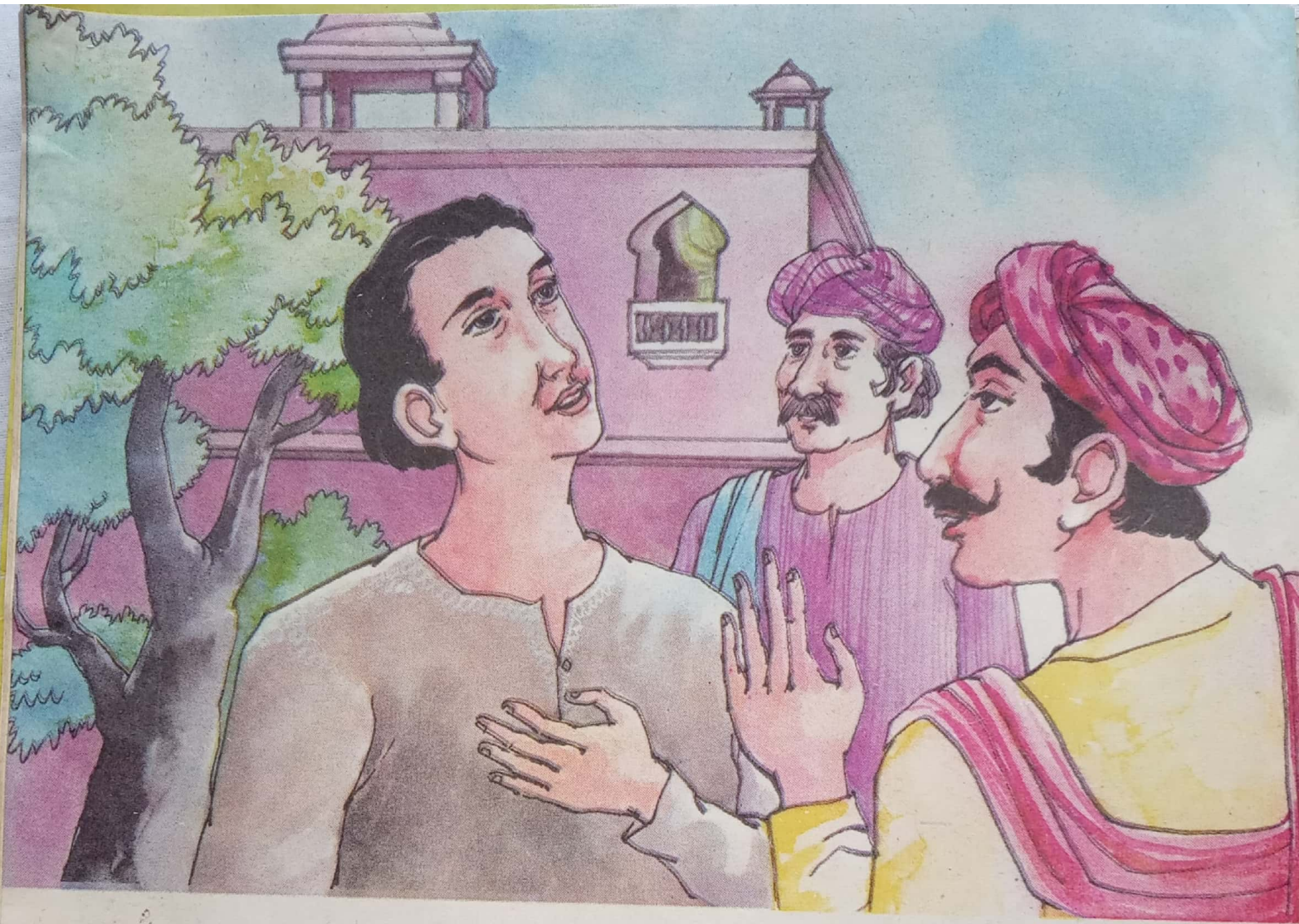
एक दिन का राजा

—चन्द्रदत्त 'इन्दु'

एक व्यापारी था रामलाल। काफी धन-सम्पत्ति कमाई थी उसने। संतान के नाम पर हरिकृष्ण नामक एक पुत्र था। पुत्र अपने पिता के समान चतुर अवश्य था, किंतु लाड़-प्यार ने उसे बिगाड़ दिया था। रामलाल सोचता था—'अकेला लड़का है। घर में रुपए-पैसे की कमी नहीं। कुछ दिन मौज उड़ा लेने दो। विवाह हो जाएगा, तो अपने आप सुधर जाएगा।'

समय बीतता रहा। धीरे-धीरे रामलाल का व्यापार बढ़ने लगा। उसने एक आलीशान हवेली भी बनवा ली। शहर में उसका मान-सम्मान बढ़ने लगा, मगर ज्यादा दिन रामलाल इस सुख को भोग न सका। एक दिन अचानक उसकी तबीयत खराब हुई। हकीम-वैद्य आए, मगर उसे कोई न बचा सका। बेटे की शादी का सपना संजोए रामलाल इस संसार से विदा हो गया।

रामलाल के बाद हरिकृष्ण को मित्रों ने घेर लिया। वे जानते थे कि हरिकृष्ण धनी बाप का बेटा है। मित्र और पड़ोसी उसे चिकनी-चुपड़ी बातों से बहलाकर उसके पैसे से मौज मनाने लगे। होते-होते बहुत-सा धन इसी तरह खर्च हो गया। पड़ोसियों ने कुछ रुपया उधार भी ले लिया था।

बेटे को इस तरह धन लुटाते देख, एक दिन मां ने उसे समझाते हुए कहा—''बेटा, तुम्हारे ये मित्र पैसे के लालच में ही आते हैं। मुसीबत में उनमें से एक भी काम नहीं आएगा।''

मां की बात पहले तो उसने अनसुनी कर दी। फिर जब देखा, धन की कमी पड़ने पर मित्र धीरे-धीरे साथ छोड़ने लगे। तो वह सावधान हो गया। उसने पड़ोसियों से अपना उधार मांगा, तो उन्होंने भी साफ

कह दिया—"हमने तुमसे धन तो क्या, फूटी कौड़ी भी उधार नहीं ली।"

धन की बरबादी करने के बाद हरिकृष्ण उदास रहने लगा। वह अक्सर सोचता—'पिता की गाढ़ी कमाई मैंने यूं ही उड़ा दी। थोड़ा-बहुत धन बचा है, मगर उससे क्या होगा?'

उस नगर का राजा बहुत न्यायप्रिय और प्रजा पालक था। वह सांझ के झुटपुटे में वेश बदलकर प्रजा का हाल-चाल जानने निकलता था। मंत्री भी साथ रहता। एक दिन राजा और मंत्री घूमते-घूमते रामलाल की हवेली के पास पहुंचे। हवेली के बाहर हरिकृष्ण उदास बैठा था।

राजा समझ गया कि यह दुखी है। उसने कहा—"लगता है, यह हवेली किसी सेठ की है। हम दोनों राहगीर हैं। दूर से आ रहे हैं। भूख भी लगी है। क्या तुम हमें खाना खिला सकते हो?"

हरिकृष्ण दयालु स्वभाव का था। वह उन्हें हवेली के अंदर ले आया। उसकी मां ने स्वादिष्ट भोजन बनाकर दोनों को खिलाया। भोजन करके राजा बहुत प्रसन्न हुए। हरिकृष्ण से बोले—"बताओ, हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं?"

हरिकृष्ण बोला—"भइया, जब मेरे मित्र ही धोखा दे गए, तो तुम मेरे लिए क्या करोगे?"

मगर राजा के बार-बार पूछने पर वह कहने लगा—"मैं एक दिन के लिए राजा बन जाता, तो इन पड़ोसियों को मजा चखा देता।"

अब तक काफी अंधेरा घिर चुका था। राजा ने मंत्री से इशारे में कुछ कहा। मंत्री ने जेब से एक फूल निकालकर हरिकृष्ण को सुंघा दिया। उसे सूंघते ही वह बेहोश हो गया। बस, मंत्री अपने बलिष्ठ कंधों पर उसे लादकर राजमहल में ले आया। राजा के आदेश पर हरिकृष्ण को राजा के शयन कक्ष में, उन्हीं के पलंग पर सुला दिया गया। कल सुबह क्या करना है, यह सब राजा ने मंत्री को समझा दिया। इसके बाद राजा दूसरे कमरे में सोने चले गए।

काफी दिन चढ़ गया। हरिकृष्ण अभी भी गहरी नींद में सो रहा था। तभी मंत्री कमरे में आया। उसने ऊंची आवाज में कहा—"महाराज, उठिए। आपके उठने का समय हो गया है। महल के बाहर प्रजाजन आपके दर्शनों को आए हैं।"

मंत्री की आवाज सुन, हरिकृष्ण की नींद टूटी। स्वयं को इतने आलीशान कमरे में देखकर वह चकित रह गया। आंखें मलता हुआ सोचने लगा—'मैं कहां आ गया! किसका घर है यह?' सोचते-सोचते वह फिर से सो गया। मंत्री ने फिर कहा—"महाराज, क्या आपकी तबीयत ठीक नहीं? इतनी देर तक आप कभी नहीं सोए। यह आपके सोने का समय नहीं है।"

अब हरिकृष्ण ने मंत्री से कहा—"आप कौन हैं? मेरी नींद क्यों खराब कर रहे हैं? मुझे राजा के कामों से क्या लेना। आप मुझे महाराजा क्यों कह रहे हैं?"

मंत्री ने सिर झुकाकर कहा—"महाराज, मैं पिछले दस वर्षों से आपका मंत्री हूं। आज तक आपने ऐसे प्रश्न नहीं पूछे। लगता है, आपने रात में बुरे सपने देखे हैं। आप मुझे कैसे भूल गए?"

यह सुनकर हरिकृष्ण सोचने लगा—'शायद राजा बनने की मेरी मुराद पूरी हो गई। वह उठा। तभी सेवकों ने उसे स्नान कराकर राजसी वस्त्र पहना दिए। वह दरबार में आया, तो पूरा दरबार उसकी

जय-जयकार कर उठा । वह सिंहासन पर बैठ गया । अब उसे विश्वास हो गया कि वही राजा है । असली राजा छिपा हुआ यह सब देख रहा था ।

तभी अचानक हरिकृष्ण को अपने पड़ोसियों का ध्यान आया । उसने मंत्री को पड़ोसियों के नाम बताकर आज्ञा दी—"उन दोनों को तुरंत गधे पर बैठाकर दरबार में लाया जाए ।"

मंत्री ने तुरंत आज्ञा का पालन किया । दोनों पड़ोसी गधों पर बैठाकर लाए गए । वहां उनको सौ-सौ कोड़े लगवाए गए । फिर उनका मुंह काला करके शहर में घुमाया गया । इसके बाद हरिकृष्ण ने कहा—"रामलाल व्यापारी की पत्नी को दो हजार स्वर्ण मुद्राएं भिजवाई जाएं ।" मंत्री ने तुरंत स्वर्ण मुद्राएं भिजवा दीं ।

अब दोपहर के भोजन का समय हो गया था । उस दिन राजा बने हरिकृष्ण ने राजमहल के सुनहरी कक्ष में बैठकर छत्तीस प्रकार के व्यंजनों वाला भोजन किया । महल की सुंदर दासियां उसकी सेवा में उपस्थित थीं । भोजन करने के बाद वह झील में बने एक कक्ष में आराम करने चला गया ।

शाम होने पर अनेक दास-दासियां उसकी सेवा में उपस्थित थीं। देर तक नाच-गाना होता रहा । अब रात्रि भोजन का समय हो आया था । रात का खाना और भी स्वादिष्ट था । इस समय बहुत-से मंत्री और दरबारी खाने में शामिल थे । सभी राजा की प्रशंसा के पुल बांध रहे थे । अपनी प्रशंसा सुन-सुनकर हरिकृष्ण बहुत प्रसन्न हो रहा था । खाने के बाद वह शयन कक्ष में सोने चला गया । वह जैसे ही आंखें बंद कर लेटा, मंत्री ने उसे फूल सुंघा दिया । फूल सूंघकर वह फिर से बेहोश हो गया ।

उसके बेहोश होने पर राजा ने मंत्री से कहा—"इसकी शाही पोशाक उतरवाकर, इसके पुराने कपड़े पहनवा दो । फिर इसे इसके घर छुड़वा दो ।" राजा के आदेश पर सेवकों ने वैसा ही किया । वे बेहोश हरिकृष्ण को उसके घर छोड़ आए । उसकी मां को कुछ पता नहीं चला कि उसे कौन ले गया और कौन वापस लाया ।

दूसरी सुबह हरिकृष्ण की आंख खुली । उसने चारों ओर देखा । अब वह राजमहल में नहीं था, मगर उसके मन पर अभी भी राजमहल का प्रभाव था । सोचने लगा—'मैं तो राजा हूं । राजमहल में सोया था, यहां कैसे आ गया ?' फिर वह जोर-जोर से पुकारने लगा—"मंत्री जी, अरे तुम कहां गए ?"

उसकी चीख-पुकार सुनकर मां दौड़ी आई । बोली—"बेटा, तुझे क्या हो गया ? तू मंत्री-मंत्री क्या पुकार रहा है ? कल तू कहां चला गया था ?"

अब वह जोर से चिल्लाया—"मैं राजा हूं । मेरे सेवक कहां गए ? आज मंत्री भी मुझे जगाने नहीं आया । उसे जल्दी बुलाओ । बाहर प्रजा मेरे दर्शनों के लिए खड़ी होगी ।"

बेचारी मां की समझ में कुछ नहीं आ रहा था । वह सोच रही थी-'पता नहीं, मेरे बेटे को क्या हो गया । यह बार-बार अपने को राजा क्यों बता रहा है ?'

इसी बीच आसपास के लोग भी वहां इकट्ठा हो गए थे । हरिकृष्ण राजमहल की बातें किए जा रहा था । लोगों ने समझा, यह पागल हो गया है । वे उसे पागलखाने ले गए ।

दो दिन वह एकांत में रहा । पेट भर खाना नहीं मिला, तो उसकी अकल अपने आप ठिकाने आ गई । उसकी समझ में आ गया कि वह राजा नहीं, व्यापारी का बेटा है । उस दिन मां उससे मिलने आई, तो वह उसके पैरों पर गिर पड़ा । रो-रोकर अपने किए पर पश्चाताप करने लगा । मां उसे फिर से घर ले आई ।

हरिकृष्ण फिर से अपनी दुनिया में लौट आया था, मगर उसकी समझ नहीं आ रहा था कि सोते-सोते वह राजमहल कैसे पहुंचा ?

कुछ दिन बाद राजा और मंत्री फिर उस हवेली के आगे से गुजरे । आज उन्होंने साधु का वेश धरा हुआ था । हरिकृष्ण उस दिन की तरह आज भी हवेली के बाहर उदास बैठा था । साधु बने राजा उसके पास पहुंचे । बोले—"बच्चा, किस चिंता में डूबे हो ?"

हरिकृष्ण ने रूखेपन से उतर दिया—" आपको

क्या मतलब ? कौन हो, मुझसे पूछने वाले ?''

राजा ने फिर कहा—''नाराज क्यों होते हो ? हमें भूख लगी है । साधुओं को भोजन नहीं कराओगे क्या ?''

हरिकृष्ण क्रोध से बोला—''जाओ-जाओ । मैं भूलकर भी भोजन नहीं कराऊंगा । एक बार दो राहगीरों को भोजन कराया था । उन्होंने धोखा किया । मुझे राजा बना दिया । फिर एक दिन में सारा कुछ छीन भी लिया । नहीं, नहीं, अब धोखा नहीं खाऊंगा ।''

तभी मंत्री ने उसे अपने पास बुलाया । फिर फूल सुंघाकर उसे बेहोश कर दिया । राजा ने कहा—''इसे फिर महल में ले चलो । एक दिन का राज सुख और भोगने दो इसे ।''

मंत्री उसे फिर महल में ले आया । उसे राजा की शैया पर सुला दिया गया ।

दिन निकला और मंत्री उसके कक्ष में उपस्थित हो गया । मंत्री ने उसे उठाते हुए कहा—''महाराज, उठिए ! आपके उठने का समय हो गया ।''

हरिकृष्ण ने आंखें खोलीं । देखा, वह फिर से राजमहल में है । उसने राजसी कपड़े भी पहने हुए थे । वह देर तक मंत्री की ओर देखता रहा ।

मंत्री बोला—''महाराज, मुझे क्या देख रहे हैं ?''

हरिकृष्ण बोला—''कौन हो तुम ? मेरे साथ यह क्या मजाक कर रहे हो ? उस दिन भी तुमने यही किया था ? तुम कोई जादूगर लगते हो । अब मैं तुम्हारे जाल में फंसने वाला नहीं हूं । मैं राजा नहीं, व्यापारी रामलाल का बेटा हरिकृष्ण हूं ।''

अब राजा भी अपनी हंसी नहीं रोक पाए । वह बाहर आ गए । बोले—''यह खेल मैंने खेला था । तुम एक दिन के लिए राजा बनना चाहते थे न ! चाहो, तो आज भी राजा बन सकते हो ।''

राजा को पहचान हरिकृष्ण ने सिर झुका दिया । बोला—''महाराज, आप दयालु हैं । मेरे जैसे नादान को आपने राजा बना दिया । मैं इस योग्य कहां ? मैं तो आपकी प्रजा बनकर ही रहना चाहता हूं ।''

●

चांद का बेटा

—कौशलेन्द्र सिंह घुरैया

कर्नाटक के जंगल में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध जंगल वनदेवी सुगंध का था । वहां बड़ी रमणीयता थी । चारों तरफ तरह-तरह के पेड़ थे । उन पर रंगबिरंगे फूल खिले थे जिन पर भ्रमर और तितलियां उड़ती फिरती थीं । जंगल के बीचों-बीच नदी बहती थी । उसके निर्मल जल में चट्टान पर बैठी वनदेवी अपने पैर हिलाकर लहरों से खेलती रहती ।

आकाश में चंद्रमा बादलों की ओट से यह देखता रहता था । उसे वनदेवी अच्छी लगती थी । एक दिन वनदेवी चट्टान पर बैठी लहरों से खेल रही थी, तभी चंद्रमा नीचे उतरा । अपने सामने एक सुंदर युवक को खड़ा देख, वनदेवी सुगंध अवाक् रह गई । तभी चंद्रमा ने कहा—''हे वनदेवी, तुम अत्यंत सुंदर हो । मैं चंद्रमा हूं । तुमसे विवाह करना चाहता हूं ।''

वनदेवी चंद्रमा का अनुरोध न ठुकरा सकी । दोनों ने विवाह कर लिया । चंद्रमा हर रात धरती पर उतर आता । वनदेवी सुगंध और चंद्रमा साथ-साथ वन में घूमते ।

फिर एक दिन सारा जंगल आनंद से भर गया । वनदेवी ने एक अनोखे वृक्ष को जन्म दिया ।

धीरे-धीरे सूरज ढला, शाम हुई । वनदेवी सुगंध की व्याकुलता बढ़ती जा रही थी । चंद्रमा के आने का समय हो रहा था । वह उसे यह बताना चाहती थी ।

तभी जंगल में सब ओर चांदनी छा गई । वह वृक्ष चांदनी में नहा उठा था । थोड़ी ही देर में चंद्रमा भी आ गया । वनदेवी सुगंध की खुशी का ठिकाना न था । वह कुछ कह न सकी । सिर्फ प्रेम से उस वृक्ष की ओर देखती रही ।

चंद्रमा ने मुसकराकर कहा—''यह हम दोनों की संतान है । तुम्हारा बेटा है, इसलिए सुगंध फैलाएगा । मेरा भी पुत्र है, इसलिए 'चंदनंदन' कहलाएगा ।''

कर्नाटक के जंगलों में ही नहीं, सारी दुनिया में चंदनंदन की सुगंध और कीर्ति फैलने लगी । बाद में यही चंदन कहलाया । ●

डाकिया

गर्मी हो या हो बरसात,
लेकर थैला अपने साथ,
रोज डाकिया आता है
ढेरों चिट्ठी लाता है।
चिट्ठी में होता संदेश
पापा और मम्मी के नाम,
जब पुकारता, आते बाहर
छोड़-छोड़ हम सारे काम।
मैं भी खुश हो जाता जब
मुझको 'नंदन' दे जाता है।
खाकी कुरता, पैंट पहन
रोज डाकिया आता है,
ढेरों चिट्ठी लाता है।

—नंदकिशोर शर्मा
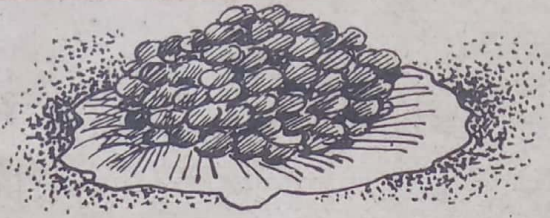
काले जामुन

रसगुल्ले जैसे रस वाले जामुन हैं,
काले-काले बड़े निराले, जामुन हैं।

झुमके के झुमके पेड़ों पर हैं लटके,
आओ भी पेड़ों से तोड़ेंगे चढ़के।
पत्तों में छिपते शरमीले, जामुन हैं
काले-काले बड़े निराले, जामुन हैं।

ये गदराए, ये हैं कच्चे, छोड़ो भी,
ये हैं पके-पके मिल इन को तोड़ो भी।
देना भाई मिलके ताली, जामुन हैं
काले-काले बड़े निराले जामुन हैं।

अभी घिरेंगे मेघ, अभी बरसे पानी,
कुहू-कुहू गाएगी आ कोयल रानी।
घिरी घटा-से ये मतवाले, जामुन हैं।
काले-काले बड़े निराले, जामुन हैं।

—रामसेवक शर्मा

पेड़

पेड़ हमारे जीवन-साथी
इन्हें लगाओ, इन्हें उगाओ !

अगर पेड़ हैं तो छाया है
अगर पेड़, तो है हरियाली,
कोयल, कौवा, तोता, मैना
सबका घर है इनकी डाली।
फूल हवा में खुशबू भरते,
और फलों से भूख मिटाओ।

इन्हें देखकर बादल आते
धरती की हैं प्यास बुझाते,
इनके पत्तों में लुक-छिपकर
पक्षी अपने गीत सुनाते।
घर-आंगन और वन-उपवन को
इनसे ही तुम खूब सजाओ।

इनसे होती शुद्ध हवा है
धूल-धुएं को दूर भगाते,
नीम, आंवला, हर्र, बहेड़ा
वैद्य इन्हीं से दवा बनाते।
सूखें, तो इनकी लकड़ी से
कुर्सी, मेज, पलंग बनाओ।

—गोपालकृष्ण कौल

जन्मदिन

आज जन्मदिन मेरा आया,
मां ने मुझको गले लगाया।
पापा नया फ्राक ले आए,
नए-नए जूते पहनाए।
परियों-सी मैं बनकर घूमूं,
खुद ही गाऊं, खुद ही झूमूं।
दीदी टाफी भर-भर लाईं
बड़े प्रेम से मुझे खिलाईं।

दोस्त सभी मुसकाते आए,
सुंदर-से उपहार वे लाए।
केक बड़ा-सा मैंने काटा,
सब मित्रों में उसको बांटा।
कोई नाचे, कोई गाए,
कोई-कोई तो शरमाए।
मैंने भी चुटकुले सुनाए
मीठे फिर पकवान उड़ाए।

—कान्ता अरोड़ा

धनुष-बाण

—राकेश जैन

पुराने जमाने की बात है। एक शिकारी शिकार के लिए जंगल में गया। शिकार की तलाश में वह बहुत दूर निकल गया। चलते-चलते थक गया था। उसे बहुत प्यास लगी थी। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाकर देखा। कहीं पानी नजर नहीं आया। आसपास कोई बस्ती भी नहीं थी। पथरीली पहाड़ी के दूसरी ओर बहुतदूर कुछ घर दिखाई पड़ रहे थे। कोई अन्य उपाय न देख, शिकारी उस ओर चल पड़ा। कुछ दूर चलने पर पहाड़ी के ढलान के पास उसे कुछ पेड़ नजर आए। वह तेजी से उस तरफ गया। उसने देखा कि एक शिला से बूंद-बूंद पानी गिर रहा था।

शिकारी की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने अपने थैले में से एक कटोरा निकाला और नीचे रख दिया। धीरे-धीरे कटोरा पानी से भर गया। उसने जी भरकर पानी पिया। पानी बहुत ठंडा और मीठा था। उसे बड़ी राहत मिली। पानी पीकर वह पास ही पेड़ के नीचे लेट गया। कुछ ही देर में उसे नींद आ गई।

जब शिकारी जागा, तो उसकी थकान कुछ कम हो गई थी। उसने अपना कटोरा निकाला और पानी पिया। शिकारी चलने लगा। तभी उसके मन में विचार आया—'कहीं मैं इस जगह को भूल न जाऊं।' उसने आसपास से कुछ पत्थर के टुकड़े इकट्ठे करके वहां ढेर लगा दिया,ताकि उस जगह की पहचान हो जाए। फिर वह आगे बढ़ गया।

वापस आते समय शिकारी फिर उस जगह पहुंचा। उसने देखा कि वहां एक चिड़िया पानी पीने के लिए बार-बार चक्कर लगा रही है। वह छोटे-छोटे पैरों से पत्थर हटाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन उसे सफलता नहीं मिल रही थी। शिकारी को उस पर दया आ गई। उसने जल्दी से पत्थर हटाए और नीचे धरती में कुछ मिट्टी खोदकर एक छोटा-सा गड्ढा बना दिया। फिर अपना कटोरा उस गड्ढे में रखकर दूर जा बैठा। धीरे-धीरे कटोरा पानी से भर गया। चिड़िया फुदकती हुई आई और आराम से बैठकर पानी पीने लगी। बार-बार चौकन्नी नजरों से देखने लगती, कहीं शिकारी उसे मारना तो नहीं चाहता ? पर शिकारी तो आराम से अपनी जगह बैठा था। पानी पीकर चिड़िया फुर्र से उड़ गई। पेड़ की डाल पर जा बैठी।

शिकारी को बहुत आनंद आया । उसने अपना कटोरा खाली करके झोले में डाल लिया और वहां से चल पड़ा ।

अगले दिन फिर शिकार से लौटते समय वह उस स्थान पर पहुंचा । इस बार उसने देखा कि कई चिड़ियां पानी पीने के लिए वहां चक्कर लगा रही थीं । शिकारी ने थैले से अपना कटोरा निकाला और वहां रख दिया, जहां चट्टान से बूंद-बूंद पानी टपक रहा था । कुछ देर में कटोरा भर गया । चिड़ियों ने जी भरकर पानी पिया और उड़कर पेड़ों पर जा बैठीं ।

शिकारी को इस खेल में अब और अधिक आनंद आने लगा था। वह देर तक फुदकती-चहचहाती चिड़ियों को देखता रहा । समय का कुछ पता ही नहीं चला ।

कुछ देर में शाम हो गई । अंधेरा घिरने लगा । शिकारी को अब घर की याद आई । वह जब कटोरा उठाने के लिए वहां गया, तो उसने देखा कि कटोरे में सफेद रंग का एक सुंदर, चमकीला रत्न पड़ा है । उसने रत्न को उठाया और गौर से देखने लगा । उसे विश्वास हो गया कि अवश्य ही यह कोई कीमती रत्न है ।

शिकारी ने वह रत्न कपड़े में लपेटकर थैले में रख लिया और वहां से चल पड़ा । वह मन ही मन बहुत खुश था । उसने निश्चय कर लिया कि वह यह रत्न राजा को भेंट करेगा ।

अगले दिन शिकारी वह रत्न लेकर राजा के महल में गया । महल के दरवाजे पर संतरी पहरा दे रहे थे । संतरी ने पूछा—"तुम कौन हो और किसलिए आए हो ?"

शिकारी बोला—"मैं एक शिकारी हूं और राजा से मिलना चाहता हूं । मेरे पास एक बहुमूल्य रत्न है । उसे मैं राजा को भेंट करना चाहता हूं ।"

शिकारी की बात सुनकर संतरी महल के भीतर गया और राजा को शिकारी का संदेश दिया ।

राजा ने शिकारी को अंदर बुलाया । कहा—"दिखाओ, कहां है वह रत्न ?"

शिकारी ने जैसे ही कपड़े में से रत्न निकाला, आसपास प्रकाश छा गया । राजा के चेहरे पर प्रसन्नता झलकने लगी । रत्न को देखकर राजा ने पहचान लिया, वह एक बहुमूल्य हीरा था ।

शिकारी को वहीं बैठाकर राजा भीतर गया । रत्न दिखाकर रानी से कहा—"देखो, यह कितना सुंदर है, कितना अद्‌भुत ! क्यों न तुम्हारे लिए इस हीरे की अंगूठी बनवा दूं ?"

रत्न देखकर रानी भी बहुत खुश हुई । बोली—"मेरे पास बहुत-से रत्न हैं । लेकिन यह तो सचमुच बेशकीमती हीरा है । मेरी इच्छा है, इसे हम अपने इष्टदेव के मंदिर में चढ़ाएं ।"

"अच्छा सुझाव है ।"—राजा ने प्रसन्न होकर कहा ।

हीरा रानी को देकर राजा वापस आया । शिकारी से बोला—"यह अनमोल हीरा तुम्हें कहां से मिला ?"

शिकारी ने राजा को सारी बात सच-सच बता दी ।

शिकारी की बात सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ । उसने शिकारी को बहुत-सा धन और वस्तुएं इनाम में दीं ।

शिकारी की खुशी का भी ठिकाना न था । वह राजा से बोला—"महाराज, मेरी एक इच्छा है । आप उस स्थान पर सुंदर तालाब बनवा दें, ताकि पशु-पक्षी वहां आकर पानी पी सकें ।"

राजा बड़ा दयालु था । वह तालाब बनवाने को राजी हो गया ।

अगले दिन राजा अपने मंत्री और सैनिकों को साथ लेकर जंगल में गया । वहां का सुंदर वातावरण देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ । उसने अपने मंत्री को आदेश दिया—"यहां एक सुंदर तालाब बनवा दिया जाए ।"

शीघ्र ही वहां एक तालाब बनकर तैयार हो गया । फिर तो दूर-दूर से पशु-पक्षी तालाब पर आने लगे । यह सब देखकर शिकारी बहुत खुश हुआ । उसकी खुशी का एक कारण और भी था । उसने सोचा

— अब मुझे शिकार की तलाश में जंगल में भटकना नहीं पड़ेगा। यहीं बैठे बढ़िया से बढ़िया शिकार मिल जाएगा।

शिकारी यह सोच ही रहा था कि सामने से हरिणों का एक जोड़ा कुलांचें भरता आता दिखाई पड़ा। उसने अपना धनुष उठाया और उस पर तीर चढ़ाया। लेकिन यह क्या? अचानक उसके हाथ कांपने लगे।

ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। शिकारी ने दोबारा तीर चढ़ाने की कोशिश की। पर इस बार भी वही हाल हुआ। उसके मन में विचार आया—'मैं यह क्या कर रहा हूं? मेरे बुलाने पर ही तो ये पशु-पक्षी यहां आए हैं। मैंने ही तो राजा से कहकर यह तालाब बनवाया है, ताकि प्यासे पशु-पक्षी अपनी प्यास बुझा सकें। इसे मैंने इनकी भलाई के लिए बनवाया है, न कि इन्हें मारने के लिए। फिर मेरे मन में इन्हें मारने का विचार आया ही कैसे?'

कुछ देर तक शिकारी इसी उधेड़बुन में रहा। दुःख और ग्लानि के मारे वह पसीने-पसीने हो चुका था। अचानक उसे जैसे रोशनी दिखाई दी। उसने अपने आप से कहा— 'मैं इन्हें धोखा नहीं दूंगा! इन निरपराध पशु-पक्षियों की हत्या नहीं करूंगा। इन्हें भी जीने का अधिकार है जैसे मनुष्य को।'

यह सोचते-सोचते शिकारी का मन भर आया। उसने अपना धनुष और बाण तालाब के किनारे पत्थर पर रख दिए। तालाब की ओर देखा। हरिणों का जोड़ा पानी पी रहा था। शिकारी को इतना आनंद मिला जैसा पहले कभी नहीं मिला था। उसने फिर एक बार जंगल में चारों ओर नजर दौड़ाई। फिर चुपचाप सिर झुकाए घाटी की तरफ चल दिया—दूर, बहुत दूर।

उसके बाद किसी ने शिकारी को वहां नहीं देखा। तालाब के किनारे पत्थर पर अब भी धनुष-बाण की आकृति बनी हुई है। कहते हैं कि यह उसी शिकारी की निशानी है। दूर-दूर से लोग उसे देखने आते हैं।

●

कीमत

—डा. बिन्दु अग्रवाल

एक गांव में तीन भाई रहते थे। तीनों में बड़ा प्यार था। वे साथ-साथ शिकार खेलने जाया करते थे। एक दिन उन्हें जंगल में एक लोमड़ी दिखाई दी। बड़े भाई ने शिकार करने के लिए उस पर तीर फेंका, पर लोमड़ी गायब हो गई।

तीनों भाई आश्चर्य में पड़ गए। तभी उनकी निगाह एक शिला पर पड़ी। उस शिला पर एक सुंदर लड़की का चित्र बना था। चित्र के चारों ओर बने बेल-बूटों के बीच में लिखा था 'जो कोई मेरे इस चित्र को मेरे पास लाएगा, मैं उसे ही अपना पति चुनूंगी।' तीनों ने शिला को उठाया, तो उसके नीचे एक थैले में तीन हजार अशर्फियां रखी मिलीं। अशर्फियां भाइयों ने बराबर-बराबर बांट लीं।

अब तीनों सोचने लगे कि कैसे इस सुंदरी को ढूंढ़ा जाए? वे चल दिए। राह में उन्हें एक बुढ़िया मिली। पूछने पर बुढ़िया ने कहा—"इस सुंदरी को कौन नहीं जानता। यह राजा की बेटी है।" बुढ़िया ने वहां तक पहुंचने का रास्ता भी बता दिया।

तीनों भाई राजा के महल में पहुंचे। राजा की बेटी चंद्रमुखी से मिले। वह सचमुच बहुत सुंदर थी। चंद्रमुखी को सबसे छोटा भाई पसंद आया। उसने कहा— "आप तीनों ही यह शिला उठाकर लाए हैं, पर मैं तो एक ही से शादी करूंगी। अब आप बहादुरी का कोई ऐसा काम करें, जिसे और कोई न कर सके। तीनों में से जो सबसे अधिक बहादुरी का काम करेगा, मैं उसी से विवाह करूंगी।"

तीनों भाई चंद्रमुखी की बात सुनकर चल दिए। बहुत दूर तक वे साथ-साथ चलते रहे, पर उन्हें बहादुरी दिखाने का कोई मौका हाथ न लगा। इसके बाद एक चौराहे पर खड़े होकर तीनों एक-दूसरे से बोले—"यहां से हम लोग अलग-अलग होते हैं। ठीक एक महीने के बाद इसी चौराहे पर मिलेंगे।"

इस निर्णय के बाद तीनों भाई अलग-अलग

रास्ते पर चल दिए। आगे एक नगर था। वहां बड़े भाई को एक दुकान पर एक शीशा दिखाई दिया। उसने दुकानदार से उसकी कीमत पूछी।

दुकानदार बोला—"सौ अशर्फी का यह शीशा और पांच सौ अशर्फी इसके रहस्य की कीमत है।"

"इसका रहस्य क्या है?" —बड़े भाई ने पूछा।

—"यह शीशा यदि सुबह के समय देखा जाए, तो दुनिया के सारे देश, शहर, गांव और वहां के लोग भी दिखाई दे जाएंगे।"

बड़े भाई ने छह सौ अशर्फियां देकर शीशा खरीद लिया।

मंझला भाई भी अपने रास्ते पर बढ़ता गया और एक नगर में पहुंचा। वहां बाजार में व्यापारी विदेशी माल बेच रहे थे। उसकी नजर चमकीले रंगों और विचित्र बेल-बूटे वाले एक कालीन पर पड़ी।

मंझले भाई ने उस कालीन की कीमत पूछी। दुकानदार बोला—"पांच सौ अशर्फियां इसकी कीमत है और पांच सौ अशर्फियों में इसका रहस्य बताऊंगा।"

"इसका रहस्य क्या है?" —मंझले भाई ने पूछा।"अरे, यह जादुई कालीन है। पलक झपकते ही यह आदमी को दुनिया के किसी भी हिस्से में पहुंचा सकता है।"—दुकानदार ने बताया।

मंझले भाई ने कालीन को खरीद लिया।

छोटा भाई भी रास्ता तय करके एक विदेशी शहर में पहुंच गया। सारी दुकानों में भटकता रहा, अंत में उसने एक पुरानी दुकान पर एक चमकती-सी चीज देखी। हाथ में उठाने पर पता चला कि वह एक जड़ाऊ कंघी है। उसने दुकानदार से उसका दाम पूछा।"एक हजार अशर्फियां इस कंघी की कीमत और दो हजार अशर्फियां इसके रहस्य का दाम।"—दुकानदार बोला।

"इसका रहस्य क्या है?"—युवक ने पूछा।

"अगर किसी बीमार के बालों में यह कंघी की जाए, तो वह स्वस्थ हो जाएगा। यदि मुर्दे के बालों में की जाए, तो वह जी उठेगा।"—दुकानदार बोला।

युवक गिड़गिड़ाकर बोला—"मेरे पास केवल एक हजार अशर्फियां हैं। कृपया इतनी अशर्फियों में ही मुझे यह कंघी दे दीजिए।"

"मैं तुम्हें कंघी दे दूंगा, पर बदले में तुम भी तो मुझे कुछ दो।"—दुकानदार ने कहा

छोटा भाई उलझन में फंस गया। एक हजार अशर्फियों के अलावा और कुछ भी तो नहीं था उसके पास। वह सिर झुकाए चुप खड़ा रहा।

तभी दुकानदार ने कहा—"देखो, तुम एक शक्तिशाली युवक हो। कंघी का रहस्य बताने के एवज में तुम मुझे अपने दाएं हाथ की शक्ति दे दो।"

"लेकिन यह कैसे हो सकता है?" —छोटे भाई ने परेशान स्वर में कहा।

"वह तुम मुझ पर छोड़ दो।"—कहकर दुकानदार ने उसका दायां हाथ पकड़ लिया। युवक को लगा जैसे हाथ निर्बल होता जा रहा है। हाथ में जोरों का दर्द होने लगा था। उसके चेहरे पर पीड़ा के भाव उभर आए। लेकिन यह सौदा हो चुका था। वह कंघी लेकर चल दिया। उसने दाएं हाथ को बाएं हाथ से थामा हुआ था। उसके मन में आ रहा था—'कहीं मैंने गलत सौदा तो नहीं किया। क्या मेरा दायां हाथ सदा ऐसे ही रहेगा?'

ठीक एक महीने बाद वे तीनों भाई उसी चौराहे पर मिले। तीनों ने एक-दूसरे को अपनी-अपनी चीजें

दिखाईं। जैसे ही बड़े भाई ने अपने शीशे में देखा। उसे मालूम हुआ कि खान की बेटी चंद्रमुखी की मृत्यु हो गई है। उसके चारों ओर अनेक लोग खड़े दुःख मना रहे हैं। झटपट मंझले भाई ने अपना कालीन बिछा दिया। तीनों भाई उस पर बैठकर जल्दी से खान के महल में पहुंच गए।

छोटा भाई जादुई कंघी से चंद्रमुखी के बाल संवारने लगा। कंघी के स्पर्श से चंद्रमुखी की जान लौट आई। वह हंसती हुई उठ बैठी।

राजा के महल में जहां कुछ देर पहले शोक मनाया जा रहा था, वहां अब खुशियां मनाई जाने लगीं। राजा ने कहा—''तीनों भाइयों के कारण ही मेरी बेटी चंद्रमुखी की जान बची है। यदि शीशा न होता, तो कैसे मालूम होता कि मेरी बेटी की मृत्यु हो गई है। यदि कालीन न होता, तो कैसे तुम लोग इतनी जल्दी यहां पहुंचते। और यदि कंघी न होती, तो मेरी बेटी की जान न बचती। मैं तीनों को ही अपना आधा धन देने को तैयार हूं।''

तीनों भाइयों ने ही बहादुरी का काम किया था, पर चंद्रमुखी तो किसी एक युवक से ही शादी कर सकती थी। इसी समय भीड़ में से अचानक एक बूढ़े फकीर की आवाज सुनाई दी--''चंद्रमुखी का विवाह उसी से किया जाए, जिसने अपने उपहार की सबसे अधिक कीमत चुकाई हो।''

राजा ने कहा—''ऐसा ही हो।''

''मैंने शीशे के लिए छह सौ अशर्फियां चुकाई हैं!''—बड़ा भाई बोला।

''मैंने कालीन के लिए एक हजार अशर्फियां चुकाई हैं!''—मंझला भाई बोला।

''मैंने कंघी के लिए एक हजार अशर्फियां चुकाई हैं और...'' कहते-कहते छोटा भाई चुप हो गया।

सबके बार-बार पूछने पर उसने हाथ के बारे में पूरी बात बता दी।

चंद्रमुखी के होंठो से एक कराह निकल गई—''मैं इनको ही अपना पति चुनती हूं, क्योंकि इन्होंने ही सबसे अधिक कीमत चुकाई है।''

उसका निर्णय सुनकर सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। राजा ने छोटे भाई से ही चंद्रमुखी की शादी खूब धूमधाम से कर दी। दोनों भाइयों को भी अपने राज्य के वजीर के रूप में नियुक्त किया। शादी के बाद छोटे भाई का हाथ धीरे-धीरे ठीक हो गया। उसकी ताकत लौट आई। ●

मुसकाते हैं फूल जहां रंगों का संसार वहां
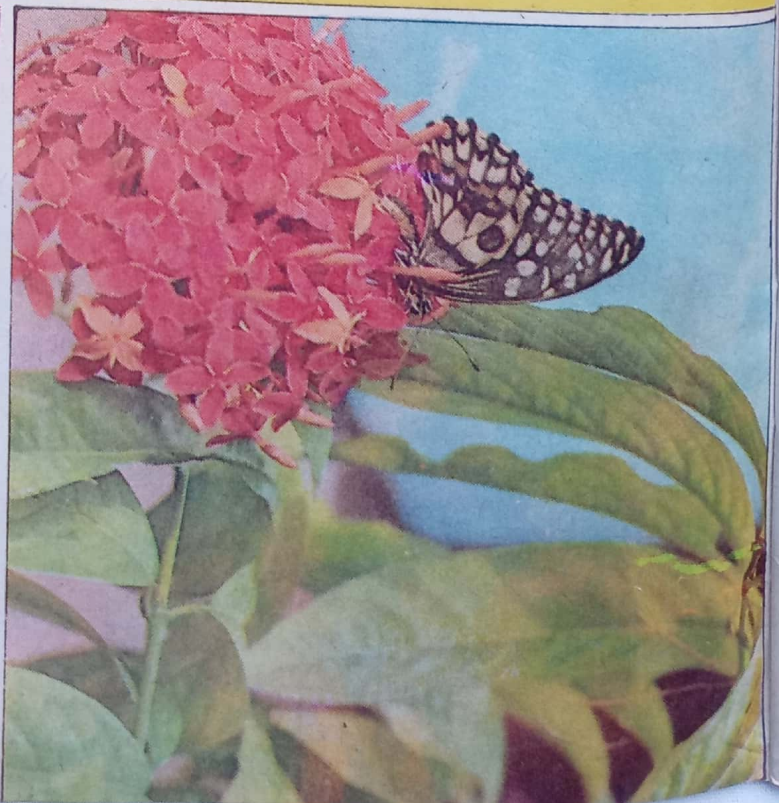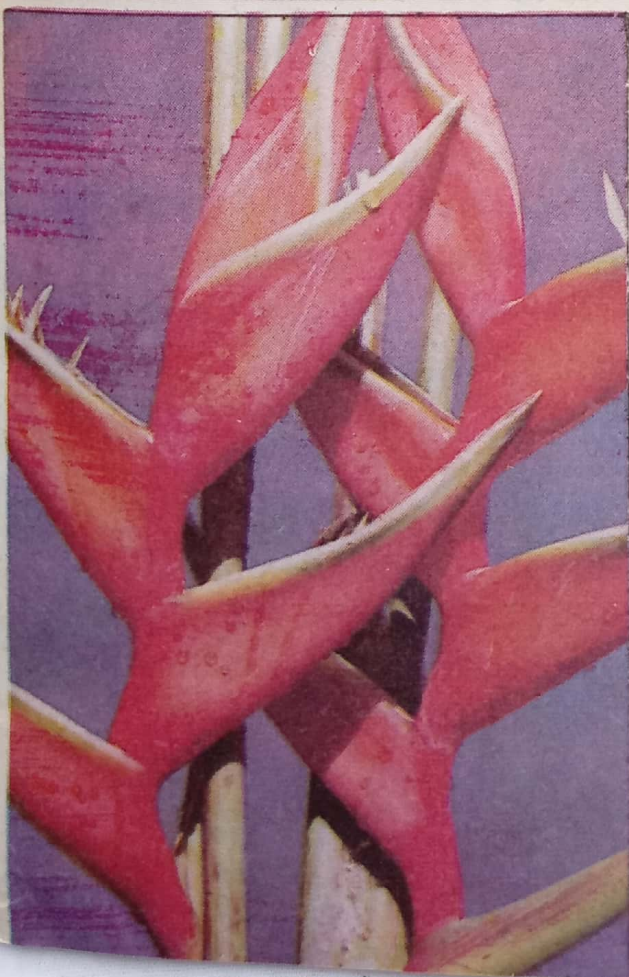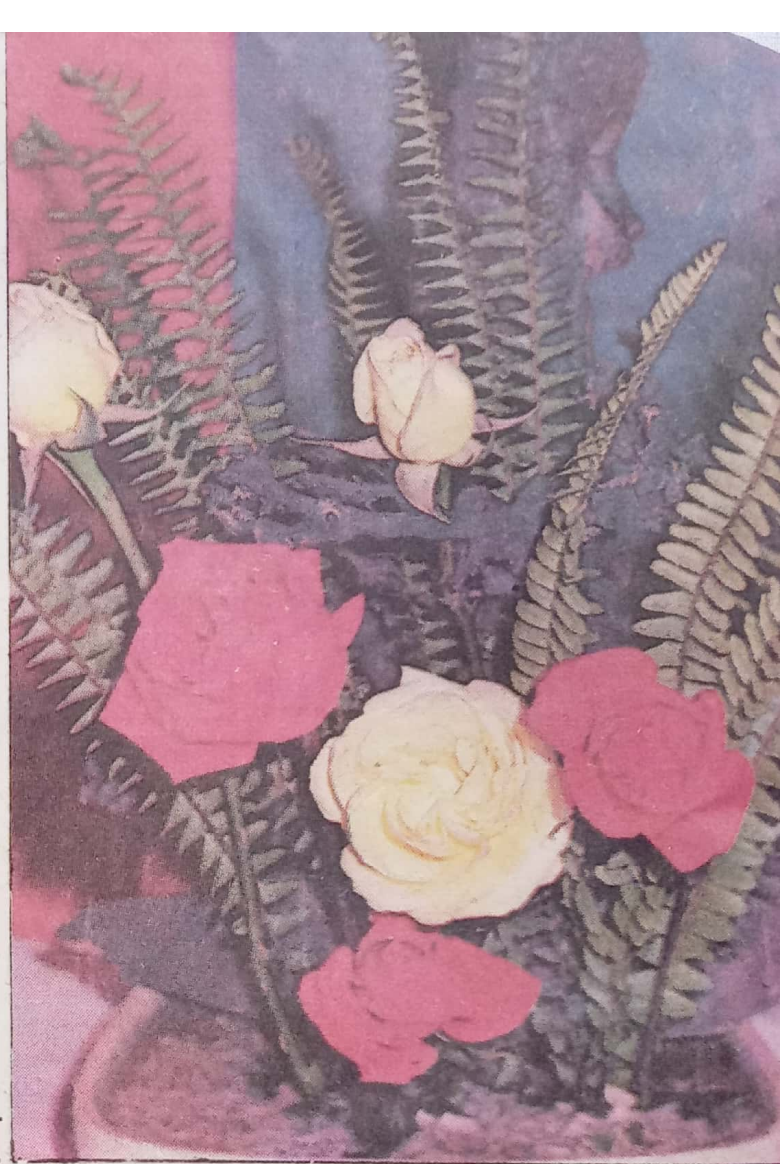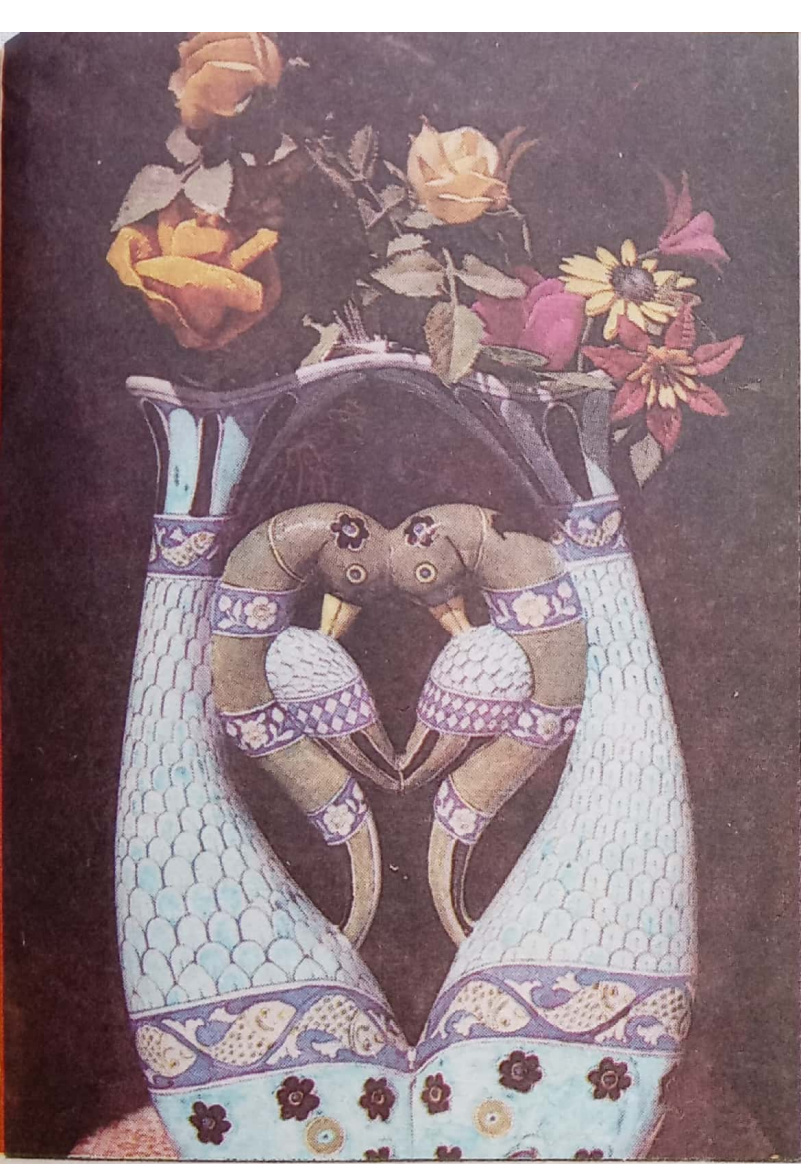
चित्र : शमशेर अ. खान, भगवानदास रुपानी, विद्याव्रत,
देबब्रत बनर्जी, सुरेश ऋतुपर्ण

विश्व की महान कृतियां : अंग्रेजी

सिंदबाद

—लारेंस हाउसमैन

बगदाद का खलीफा था हारूं अल रशीद। उन्हीं दिनों बगदाद में सिंदबाद नामक आदमी रहता था। लोग उसे सिंदबाद जहाजी के नाम से पुकारते थे। वह एक नाविक था। उसने सात समुद्र-यात्राएं की थीं। लोग कहते थे, सिंदबाद के पास अपार धन है और यह सारा धन उसने अपनी यात्राओं से कमाया है।

सिंदबाद एक शानदार हवेली में रहता था। उसमें सैकड़ों नौकर-चाकर थे। हवेली ऐसी-ऐसी अद्‌भुत और कीमती वस्तुओं से सजी थी कि देखने वालों की आंखें फटी रह जातीं। सब जानना चाहते थे कि सिंदबाद के पास इतनी दौलत कहां से आई। लेकिन सिंदबाद कभी कुछ नहीं बताता था। हां, इतना कह देता था—"कभी मौका आएगा, तो सुनाऊंगा मैं अपनी दास्तान!"

लोग पूछते—"भाई, मौका कब आएगा?" इस पर वह मुसकरा कर चुप हो जाता।

एक दिन की बात। सिंदबाद अपनी हवेली में आराम से बैठा था। तभी उसने एक फटेहाल आदमी को सड़क पर जाते देखा। सिंदबाद ने उसे हवेली में बुलवा लिया। वह सकुचाता हुआ हवेली में आया। सिंदबाद ने उस व्यक्ति से पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है?"

"सिंदबाद।"—उस व्यक्ति ने कहा।

अगले दिन सिंदबाद ने शहर के धनी-मानी लोगों को शानदार दावत दी। मेहमानों का खूब स्वागत-सत्कार हुआ। भोजन के बाद सिंदबाद जहाजी ने कहा—"मित्रो, आप सब मुझसे कहा करते हैं कि मैं अपनी यात्राओं के किस्से सुनाऊं! तो लीजिए ध्यान से सुनिए—

सिंदबाद जहाजी ने अपने सफर का पहला किस्सा सुनाना शुरू किया—

"एक बार मैं कई व्यापारियों के साथ यात्रा पर चला। हम सब एक बड़ी नौका में यात्रा कर रहे थे। माल खरीदते-बेचते हुए काफी दूर निकल गए। एक दिन नौका ने एक हरे-भरे द्वीप के तट पर लंगर डाला।

एकाएक कप्तान की आवाज सुनाई दी। वह घबराकर सबको वापस बुला रहा था। उसने कहा—"यह द्वीप नहीं, एक विशाल मछली है, जिसकी पीठ पर हम उतर गए हैं। बहुत दिनों से मछली यहां सोई पड़ी थी। अब आप लोगों द्वारा आग जलाने और घूमने से वह जाग उठी है।

हम सब घबराकर नौका की तरफ दौड़े, पर वहां तक पहुंच न सके। मछली हिली और पानी में समा गई। मेरे कई साथी डूब गए। मैं डूबने से बचने के लिए हाथ-पैर मारने लगा। एक तख्ता मेरे हाथ लग गया। मैं उसके सहारे तैरता हुआ एक द्वीप पर जा लगा।

वहां मैंने बहुत सुंदर सफेद घोड़ी को समुद्र के तट पर खड़ी देखा। तभी एक व्यक्ति तट पर आया। वह मुझे अपने साथ ले गया। मेरा हाल पूछा, तो मैंने पूरी घटना कह सुनाई। उसने मुझे भरपेट भोजन कराया। मैंने पूछा कि वह घोड़ी समुद्र तट पर क्यों खड़ी है? उस व्यक्ति ने बताया कि समुद्र में विचित्र घोड़े रहते हैं। हम इस घोड़ी की मदद से उन्हें पकड़ेंगे।"

फिर एक शाम समुद्र की लहरों से एक विचित्र घोड़ा निकला और घोड़ी की तरफ दौड़ा। उसे रस्सियों से पकड़कर बांध लिया गया। बाद में मैं उस देश के राजा से मिला। वहीं मुझे अपनी नौका का कप्तान भी दिखाई दिया। वह मुझे सकुशल बगदाद ले आया।"

अगली शाम की दावत में सिंदबाद जहाजी ने अपनी दूसरी समुद्री यात्रा की रोमांचक कहानी सुनाई—

"कुछ समय बाद मुझे पता चला कि व्यापारियों की एक टोली जहाज से जा रही है। मैं भी उनके साथ चल दिया। कई दिनों की यात्रा के बाद हमने एक द्वीप के तट पर लंगर डाल दिया। मैं जहाज से उतर कर द्वीप पर घूमने लगा। ठंडी हवा चल रही थी, जाने कब मुझे नींद आ गई।

मेरी नींद खुली, तो दिन ढल रहा था। मैं भागता हुआ तट पर पहुंचा, लेकिन जहाज जा चुका था।

मैं निराश होकर द्वीप पर घूमने लगा। तभी मैदान में एक सफेद गुम्बद-सा देखा। आकार में वह बहुत

सिंदबाद जहाजी की रोमांचक यात्राएं पूरी दुनिया में मशहूर हैं। हर भाषा में उनके अनुवाद किए गए हैं। यहां हम लारेंस हाउसमैन की पुस्तक 'द एडवेंचर्स आफ सिंदबाद द सेलर' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं।-सं.

बड़ा था। मैं उस गुम्बद के पास जा पहुंचा। उसी समय पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी और एक विशाल पक्षी उस गुम्बद पर उतरा। अब मैं समझ गया, वह गुम्बद नहीं, उस विशाल पक्षी का अंडा था। कुछ देर बाद पक्षी वहीं बैठा-बैठा सो गया।

मैं उस द्वीप से बच निकलने का उपाय सोच रहा था। तभी मेरे दिमाग में एक विचार आया। मैंने पगड़ी का एक सिरा अपनी कमर से बांधा और दूसरा सोते हुए पक्षी के पंजे से बांध दिया। कुछ देर बाद पक्षी जाग गया। और जोर से चीखकर आकाश में उड़ चला। मैं भी उसके एक पंजे से बंधा-बंधा उड़ रहा था। मेरा मन डर रहा था कि कहीं मैं जमीन पर न गिर पड़ूं। पर अब कुछ नहीं हो सकता था।

कुछ देर बाद पक्षी एक घाटी में जा उतरा। घाटी एकदम सुनसान थी— उसके चारों ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ थे। मैंने देखा घाटी के अंदर जमीन पर हीरे बिखरे हुए थे। वहीं सांप भी रेंग रहे थे। डर के मारे मेरी घिग्घी बंध गई ? मैंने सावधानी से बहुत सारे हीरे अपनी जेबों में भर लिए। और सांपों से दूर जाकर लेट गया। थकान के कारण मैं ऊंघने लगा। एकाएक मुझे जोर का झटका लगा। मैंने पाया कि विशालकाय पक्षी मुझे अपने पंजों में दबाए उड़ा जा रहा था। मैं ईश्वर को याद कर रहा था। आखिर पक्षी ने मुझे एक ऊंचे स्थान पर छोड़ दिया और वापस उड़ गया।

मैं किसी तरह वहां से नीचे उतरा। थोड़ी दूर पर समुद्र था। वहां मेरे खोए हुए साथी मिल गए। मैं सकुशल लौट आया।''

तीसरे दिन सिंदबाद ने अपनी तीसरी यात्रा की कहानी सुनाई। उसने कहा—

''हमारी यात्रा शुरू हुए कई दिन हो चुके थे। एक दिन जोरों का तूफान आया। तूफान में फंसकर हमारा जहाज एक द्वीप के निकट जा पहुंचा। तभी कप्तान ने कहा— ''सावधान, हम दैत्य द्वीप पर आ पहुंचे हैं।''

तभी एक विशालकाय दैत्य ने आकर हमारे जहाज को पकड़ लिया। वह हम सबको द्वीप पर ले गया। दैत्य एक लम्बे-चौड़े किले में रहता था। उसने हमें बहुत परेशान किया। कई साथियों को मार डाला। एक दिन हमने उसे मारने की योजना बनाई। जब वह सो रहा था तो लोहे की सलाखें गरम करके उसकी आंखों में धंसा दीं। फिर हम नाव पर द्वीप से भाग निकले। रास्ते में एक दैत्याकार सांप ने मुझे अपना शिकार बनाना चाहा, पर मैं किसी तरह बचकर वापस चला आया।''

सिंदबाद के चौथे सफर का किस्सा बहुत रोमांचक था। उसने कहा—

''चौथी यात्रा में हमारा जहाज एक चट्टान से टकराकर डूब गया। मैं अपने कुछ साथियों के संग एक द्वीप पर जा लगा। द्वीप पर एक विशाल हवेली बनी थी।

थोड़ी देर बाद हवेली से कुछ लोग बाहर आए। वे हमें पकड़कर अंदर ले गए। उन्होंने हम सबके सामने खाना परोस दिया। मेरे साथी खाने पर टूट पड़े। पर मैंने भोजन नहीं छुआ। न जाने उस खाने में क्या बात थी, मेरे साथी जितना खाते, उनकी भूख बढ़ती जाती। वे हब्शियों की तरह खाते चले जा रहे थे। उनके शरीर गुब्बारों की तरह फूलने शुरू हो गए।

मैं चुपचाप बाहर निकल आया। थोड़ी देर बाद मेरे साथियों को एक मैदान में ले जाया गया। वे जानवरों की तरह घास चर रहे थे। वे जैसे पागल हो चुके थे। मैं ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था कि अच्छा हुआ, मैंने नहीं खाया, वरना मेरा भी यही हाल होता।

मैं जल्दी-जल्दी दौड़ता हुआ किनारे पर आ गया। वहां मुझे कुछ मछुआरे मिले। वे मुझे दूसरे द्वीप पर ले गए। फिर किसी तरह मैं लौट आया।''

पांचवीं शाम को दावत के बाद सिंदबाद ने अपनी अगली यात्रा की कहानी सुनाई। उसने कहा— ''मेरे घर वाले कहते थे, अब यात्रा पर मत जाना। पर कुछ दिन बाद ही मेरा मन कहीं जाने के लिए बेचैन हो

उठता था। आखिर मैं एक दिन सफर पर चल ही दिया। और इस बार भी हमारे साथ दुर्घटना घटी।

हम डूबते-डूबते बचे। किसी तरह एक द्वीप पर पहुंचे। वहां मेरे साथियों ने एक नन्हे पक्षी को मार दिया। बस फिर क्या था— दो विशालकाय पक्षी हमारे पीछे पड़ गए। हम जहाज में भागे, तो वे अपने पंजों में पत्थर लाकर हम पर बरसाने लगे।

इस तरह हमारा जहाज डूब गया। सब साथी न जाने कहां गए। मैं एक द्वीप पर जा लगा। वहां मैं एक गूंगे बूढ़े से मिला। उसके इशारा करने पर मैंने उसे अपने कंधे पर बैठाकर वहां बहती नदी पार करा दी। पर बूढ़ा भी एक शैतान था। वह मेरी पीठ से उतरने को तैयार न हुआ। मैं उसे लिए-लिए कई दिन तक द्वीप पर भटकता रहा। आखिर किसी तरह उसने मेरा पीछा छोड़ा। मैं भागकर किनारे पर आया, तो एक नौका मिल गई। उसमें बैठकर मैं लौट आया।''

सिंदबाद ने अपनी अगली यात्रा के बारे में बताते हुए कहा— ''इस यात्रा पर मैं तूफान में भटककर एक विचित्र द्वीप के तट पर जा लगा। वहां बहुत से टूटे जहाज बिखरे हुए थे— तट पर अपार सम्पदा पड़ी थी। वहां पर एक नदी बहती थी, जो आगे जाकर पहाड़ी कंदरा में गुम हो जाती थी।

मैंने सोचा यह नदी जरूर कहीं न कहीं निकलती होगी। मैं इसी के साथ बहकर देखता हूं।' बस, मैंने एक बेड़ा बनाया और नदी में चल दिया। बेड़ा लहरों के साथ बहकर कंदरा में चला गया। अब सब तरफ घुप्प अंधेरा था, न जाने कहां से मीठी-मीठी मादक सुगंध आ रही थी। कुछ देर बाद मैं बेहोश हो गया।

जब मुझे होश आया, तो मैंने अपने को कुछ लोगों के बीच पाया। वे मुझे अपने राजा के पास ले गए। वह सेरनदिप का सुगंध द्वीप था। उसे आज तक किसी ने नहीं देखा था। सेरनदिप के राजा ने खलीफा के लिए अमूल्य भेंट देकर मुझे विदा किया और फिर मैं एक दिन बगदाद आ पहुंचा। सेरनदिप के राजा की बहुमूल्य भेंट पाकर खलीफा बहुत खुश हुए।

कुछ दिन बाद खलीफा ने मुझ से कहा— ''तुम मेरे उपहार लेकर सेरनदिप के राजा के पास जाओ।' इस तरह मैं सातवें सफर पर चल दिया। लेकिन हम सेरनदिप नहीं पहुंच सके। रास्ते में ही डाकुओं ने हमें लूटकर बंदी बना लिया।

मुझे एक व्यापारी को सौंप दिया गया। वह हाथीदांत का व्यापार करता था। एक दिन वह मुझे एक मैदान में ले गया। वहां एक बहुत ऊंचा पेड़ था। उसने कहा— ''यहां रात को हाथी आते हैं। अगर तुम मेरे लिए हाथी दांत इकट्ठा कर सको तो मैं तुम्हें आजाद कर दूंगा।''

बस, मैं पेड़ पर चढ़ गया। रात को वहां हाथियों का झुंड आया। मैंने एक हाथी को मार गिराया। इसी तरह कई दिन तक होता रहा। व्यापारी मुझ से खुश था। पर एक रात आफत आ गई। हाथियों का बड़ा झुंड वहां आया। एक बड़े हाथी ने अपनी सूंड से पेड़ को उखाड़ दिया। फिर मुझे उठाकर एक घाटी में ले गया।

मैं बहुत डर गया था। घाटी में जगह-जगह हाथी दांत बिखरे हुए थे। हाथी ने मुझे हाथी दांत के ढेर पर बिठा दिया। फिर सब हाथी चले गए। मैं समझ गया कि हाथी क्या कह रहा था। वह कह रहा था, चाहे जितने हाथी दांत ले लो, पर हमें न मारो।'

मैं वहां से व्यापारी के पास पहुंचा। उसे हाथी दांत के बारे में बताया। हाथी दांत के ढेर देखकर वह बहुत खुश हुआ। उसने मुझे आजाद कर दिया। और एक दिन मैं फिर अपने प्यारे शहर में पहुंच गया था।

मैं खलीफा से मिला। उन्हें बताया कि सेरनदिप जाना नहीं हो सका। इस पर खलीफा ने कहा— 'सिंदबाद, अब कहीं जाने की जरूरत नहीं, आराम से रहो।' और तब से मैं यहीं रह रहा हूं।'' यह कहकर सिंदबाद जहाजी ने अपनी यात्राओं के रोमांचक किस्से खत्म किए। उसने दूसरे सिंदबाद से कहा— ''मैं चाहता हूं, अब तुम मेरे पास ही रहो। मुझे एक सच्चा दोस्त चाहिए।''

इसके बाद दूसरा सिंदबाद भी सिंदबाद जहाजी के साथ उसके महल में रहने लगा। ●

घेरे का कैदी

—डा. रामलाल वर्मा

सांझ ढल रही थी। धानुका गांव के बाहर पेड़ के नीचे एक संपेरा बैठा था। दूर से चलकर आने के कारण वह थक गया था। वह सोच रहा था—'गांव में जाऊं या न जाऊं। इस समय मेरा खेल कौन देखेगा भला?' संपेरा वहीं पेड़ के नीचे लेट गया। उसका नाम था रामभज।

थोड़ी देर बाद वहां एक दाढ़ी वाला आया। उसने काले कपड़े पहन रखे थे। रामभज ने उसे देख लिया, पर वह अपने में मस्त था। वह एक तरफ खड़ा होकर कुछ बड़बड़ाता रहा। फिर हाथ हिलाया, तो झाड़ियों में से एक भयानक सांप बाहर निकल आया। उसने सांप की ओर मुंह करके कहा—"जमींदार की हवेली में जाकर उसके इकलौते बेटे को डस ले। अब जमींदार को पता चलेगा कि पिना का गुस्सा कैसा होता है।" यह कहकर काले कपड़े वाला तेजी से एक तरफ चल दिया। सांप गांव की दिशा में रेंग चला।

रामभज चकित भाव से यह सब देखता—सुनता रहा। उसकी समझ में बस इतना आया कि जमींदार का इकलौता बेटा संकट में है। उसे कुछ करना चाहिए। रामभज संपेरा था। वह सांप पकड़ने की कला जानता था। लेकिन यह सांप तो मंत्रसिद्ध था। मनुष्य से उसकी बोली में बात करता था।

रामभज ने तुरंत झोले से बीन निकाली और बजाने लगा। यह एक विशेष बीन थी। बीन बजाता हुआ रामभज सांप के पीछे-पीछे बढ़ चला। थोड़ी देर तक सांप उसी तरह जमींदार की हवेली की ओर बढ़ता रहा, लेकिन फिर सांप पर बीन की आवाज का प्रभाव होने लगा। उसके बढ़ने की गति धीमी हो गई। फिर वह एक जगह रुककर फन लहराने लगा। रामभज तेजी से बढ़ा। उसने बीन की नली से सांप के गिर्द एक घेरा खींच दिया। फिर जोर से बोला—"अब तू कहीं नहीं जा सकता।"

घेरे में कैद सांप ने आदमी की बोली में पूछा—"तू कौन है। तूने मुझे जमींदार की हवेली में जाने से क्यों रोका है? यह बीन कैसी है, जिसने मुझे इस तरह कैद कर दिया है।"

रामभज ने कहा—"मैं एक संपेरा हूं। तू जमींदार के इकलौते बेटे को डसने जा रहा था, इसलिए तुझे रोका है। यह बीन मेरे एक दोस्त की है। उसकी मृत्यु हो चुकी है। उसने यह जादुई बीन मुझे देकर कहा था कि इसकी आवाज से कोई भी सांप अपनी गति खोकर स्थिर हो जाएगा।"

सांप ने रामभज से कहा—"अब तुम मुझे इस कैद से आजाद कर दो। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

रामभज ने कहा— "मैं तुम्हें कैसे छोड़ दूं? इस घेरे से बाहर आते ही तुम हवेली में जाकर जमींदार के बेटे को डस लोगे।"

सांप ने कहा—"मैं वचन देता हूं कि घेरे से बाहर आने के बाद हवेली में नहीं जाऊंगा।"

यह सुनकर रामभज ने बीन की नाल से घेरे की रेखा को तोड़ दिया । सांप तुरंत घेरे के बंधन से बाहर निकल आया । अगले ही पल वह एक घोड़े के रूप में बदल गया ।

यह देख, रामभज के आश्चर्य का ठिकाना न रहा । अब उसकी बीन कोई चमत्कार नहीं दिखा सकती थी, पर उसने हिम्मत न हारी । न जाने उसके मन में क्या आया, वह लपककर घोड़े की पीठ पर सवार हो गया ।

घोड़ा उसे लिए भागने लगा । रामभज ने कहा—"तुम कहां जा रहे हो ?"

घोड़ा बना सांप बोला—"अब मैं उस आदमी के पास जा रहा हूं, जिसने मुझे जमींदार के बेटे को डसने की आज्ञा दी थी । मैं उसे जिंदा नहीं छोड़ूंगा ।"

इस पर रामभज ने कहा—"तू भी बड़ा विचित्र जीव है । अभी तक तू जिसके इशारे पर चल रहा था, अब उसी के प्राण लेने पर उतारू हो गया है ।"

इतनी देर में घोड़ा रुक गया । रामभज को काले कपड़ों वाला पिना दिखाई दिया । वह एक पेड़ के नीचे बैठा था । घोड़े के रुकते ही रामभज नीचे कूद गया । घोड़ा फिर सांप बन गया और पिना की ओर झपटा ।

इस बार रामभज सावधान था । उसने झट बीन बजाई और धरती पर घेरा खींचकर सांप को फिर से कैद कर दिया । फिर काले कपड़े वाले से कहा—"तुरंत भाग जाओ, नहीं तो यह सांप तुम्हें डस लेगा । मैंने इसे कैद कर दिया है ।"

पिना ने रामभज से कहा—"मैं तुम्हारा अहसान जीवन भर नहीं भूलूंगा । अगर तुम न होते, तो यह मुझे कभी न छोड़ता ।"

रामभज ने कहा—"पिना, यह बताओ, तुम जमींदार के बेटे को क्यों मारना चाहते थे ? तुम्हारे पास ऐसा क्या जादू है कि यह सांप इस तरह तुम्हारे वश में हो गया था ?"

इस पर पिना ने कहा—"जमींदार बहुत अत्याचारी है । एक बार उसने बिना बात मुझे बुरी तरह मारा था । मैंने तभी बदला लेने का निश्चय कर लिया था । इस सांप को मैंने एक बार वन में पकड़ा था, तो इसने कहा था—'मुझे छोड़ दो । तुम पर कोई संकट आए तो मुझे बुला लेना । मैं आ जाऊंगा ।' बस, मैंने जमींदार से बदला लेने के लिए ही सांप को बुलाया था । पर इस समय तो यह मेरे ही प्राणों का गाहक बन गया है ।"

रामभज ने पिना को पूरी बात बता दी । कहा—"पिना, इस बीन के कारण एक निर्दोष की जान बच गई है । तुम्हें गुस्से में इस तरह का कदम नहीं उठाना चाहिए था । देख रहे हो न, दूसरे का बुरा करने के फेर में इस समय तुम्हारे प्राण संकट में पड़ गए हैं ।"

रामभज की बात सुनकर पिना का सिर झुक गया । उसने कहा—"भाई, मैं शर्मिंदा हूं । तुमने मुझे बुरा करने से रोककर कितना अच्छा किया है, मैं यह बता नहीं सकता । सचमुच मुझे इस तरह किसी का अनिष्ट करने की बात नहीं सोचनी चाहिए थी । मुझे क्षमा करो ।"

रामभज ने धीरे से पिना की पीठ थपथपा दी । कहा—"जो हुआ, उसे भूल जाओ । ध्यान रखना, आगे ऐसा बुरा विचार मन में न आए ।" फिर पिना का हाथ थामकर वह बढ़ चला । इस पर घेरे में कैद सांप ने कहा—"रामभज, क्या मुझे सदा इसी तरह कैद रहना होगा । आखिर मेरा क्या दोष था ? इसने जैसा करने को कहा, मैं तो वही कर रहा था ।"

रामभज सांप से बोला—"अब मैं तेरी बात पर तभी भरोसा कर सकता हूं, जब तू अपना सारा विष उगल दे ।" अगले ही पल सांप ने अपना सारा विष धरती पर उगल दिया । जमीन का वह भाग नीला और काला पड़ गया । अब रामभज ने घेरा तोड़ दिया । सांप घेरे से निकला और एक सूराख में प्रवेश करता हुआ बोला—"मैं अब कभी ऊपर नहीं आऊंगा । मैंने यह देख लिया कि जब दो बुरों के बीच एक अच्छा आदमी आ जाए, तो क्या होता है ।"

सांप बिल में समा गया । रामभज और पिना आगे चल दिए । दोनों खुश थे । ●

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस**; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए।**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।
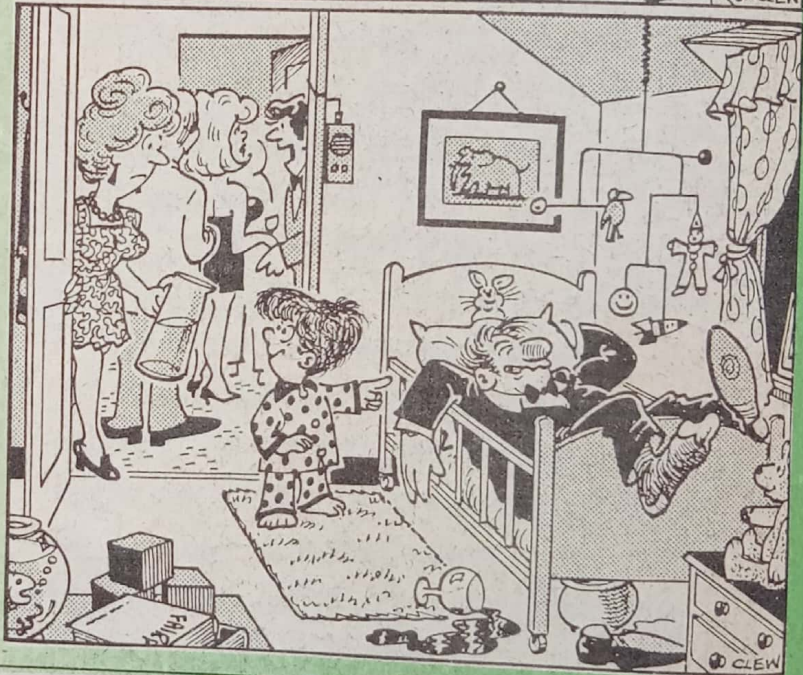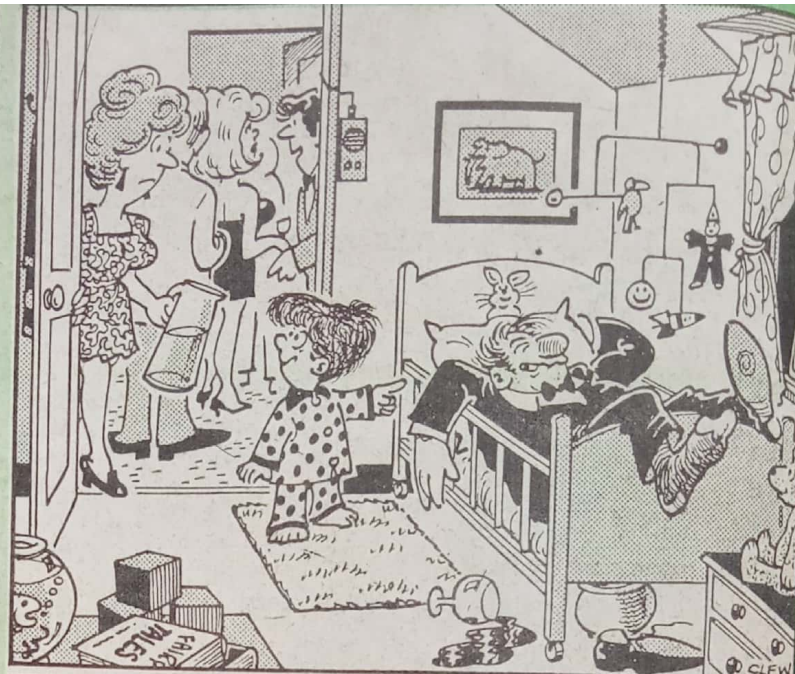
कहानी लिखो—८२

सामने दिए गए चित्र को देखकर एक रोचक कहानी लिखिए। उसे १०-९-९० तक **सम्पादक नंदन, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा, उसे प्रकाशित भी किया जाएगा। **परिणाम—नवम्बर '९०**

चित्र पहेली—८२

'सरकस' विषय पर एक रंगीन चित्र बनाकर १० सितम्बर '९० तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। चुना गया चित्र पुरस्कृत कर प्रकाशित किया जाएगा। **परिणाम—दिसम्बर '९०**

बुढ़िया-गुड़िया

—डा. गार्गी गुप्त

फ्रांका जब दो ही वर्ष की थी, तो उसकी मां भगवान को प्यारी हो गई । अब पिता ही उसकी देखभाल करता था ।

फ्रांका बहुत शर्मीली थी । वह स्कूल जाने से भी घबराती थी । सौभाग्य से उसकी टीचर बहुत अच्छे स्वभाव की थीं । धीरे-धीरे फ्रांका को अपनी टीचर बहुत अच्छी लगने लगी ।

स्कूल से लौटकर फ्रांका ने पिता से कहा—"बाब्बो ! मेरी टीचर बहुत अच्छी है । वह मुझे बहुत प्यार करती है । आप उन्हें मेरी मां क्यों नहीं बना देते ?"

बेटी की बात पिता को भली लगी । उसने टीचर आंजेला से विवाह कर लिया । आंजेला फ्रांका की नई मां बनकर घर में आ गई । फ्रांका बहुत खुश थी । लेकिन शायद भाग्य को कुछ और ही मंजूर था । समय आने पर आंजेला ने दो बेटियों को जन्म दिया । धीरे-धीरे आंजेला के रंग-ढंग बदलने लगे । फ्रांका को कभी वह अपनी आंखों का तारा समझती थी । पर अब वही उसकी आंखों में कांटे की तरह खटकने लगी । फ्रांका की हर बात पर वह खीझ उठती ।

एक दिन फ्रांका का पिता एक बड़ी-सी मछली खरीद कर लाया । उसने मछली मेज पर रख दी और बाहर चला गया । तभी फ्रांका वहां आई । अचानक मछली बोली—"फ्रांका, री फ्रांका, तू मुझे जल्दी से समुद्र में फेंक आ "

—"पागल हो गई है क्या ? जानती है तेरे न रहने पर मां मेरी कितनी पिटाई करेगी ?"

मछली ने कहा—"तू फिक्र मत कर, फ्रांका । मैं तुझे वचन देती हूं कि जब तू मुझे पुकारेगी, मैं तेरी सहायता करने दौड़ी चली आऊंगी । तू समुद्र के किनारे आकर यह कहना —

प्यारी ओ, मेरी प्यारी-प्यारी तांकीना ।
आ जा बुलाती है तुझे फ्रांकीना ।"

फ्रांका को उसकी बात पर विश्वास हो गया । वह चुपचाप गई और मछली को समुद्र में फेंक आई ।

मछली को गायब देख फ्रांका के माता-पिता ने उसे खूब मारा, फिर घर से निकाल दिया । फ्रांका ने समुद्र के किनारे जाकर टेर लगाई ।

मछली तुरंत जल से बाहर आई । बोली—"फ्रांका, जा घर जा । मेरे ऊपर भरोसा कर, तेरे माता-पिता तुझे जरूर घर में वापस बुला लेंगे ।"

फ्रांका ने घर लौटकर अपने पिता से क्षमा मांगी, तो पिता ने उसे घर में बुला लिया ।

एक दिन शहर में मुनादी हुई—'राजा अपने जन्म-दिन के अवसर पर शहर में जिस सुंदरी को फूलों का गुलदस्ता भेंट करेगा, वही उसकी रानी बनेगी ।'

राजा की सवारी वाले दिन आंजेला ने अपनी दोनों बेटियों को सुंदर वस्त्र पहनाकर खिड़की में खड़ा कर दिया, ताकि राजा पहले उन्हीं को देखे ।

राजा की सवारी फ्रांका के घर के सामने आई । उन्होंने आंजेला की दोनों बेटियों की तरफ नजर उठाकर भी नहीं देखा । द्वार के पीछे से झांकती फ्रांका की तरफ फूलों का गुलदस्ता उछाल दिया ।

यह देख, आंजेला ईर्ष्या से जल उठी । उसने राजा के सामने हाथ जोड़कर कहा— "लेकिन मेरी बेटियां तो उस कलमुंही से कहीं सुंदर है ।"

लेकिन राजा ने आंजेला की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया, फ्रांका के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की । अब आंजेला क्या करती । वह फ्रांका तथा अपनी दोनों बेटियों के साथ घोड़ा गाड़ी में राजमहल की ओर चल दी ।

आखिर आंजेला को एक तरकीब सूझ ही गई । वह घोड़ागाड़ी को एक सुनसान रास्ते की ओर ले गई ।

बेचारी भोली फ्रांका । उसे सौतेली मां पर कोई संदेह न हुआ । आंजेला ने अपनी दोनों बेटियों को पहले ही सब समझा दिया था । एक सुनसान जगह पर पहुंचकर उन्होंने घोड़ागाड़ी लौटा दी । आंजेला और उसकी बेटियों ने मिलकर जबरदस्ती फ्रांका को मूर्च्छित करने वाली दवा पिला दी । फिर आंजेला ने फ्रांका की आंखों में एक विषैली मरहम लगा दी

और उसे एक पेड़ से बांधकर तीनों रफूचक्कर हो गईं। उन्होंने राजा का गुलदस्ता भी ले लिया।

इसके बाद आंजेला अपनी बड़ी बेटी को खूब सजाकर राजमहल में ले गई। राजा से कहा—"महाराज, मेरी इस बेटी को आपने गुलदस्ता दिया था।"

राजा हैरान कि यह क्या हो गया ! फ्रांका जितनी सुंदर थी, आंजेला की बड़ी बेटी उतनी ही साधारण। लेकिन गुलदस्ता तो राजा का ही था। इसलिए राजा ने आंजेला की बड़ी बेटी से ही विवाह कर लिया।

उधर फ्रांका को काफी देर बाद होश आया। जहरीली मरहम के कारण वह अपनी दृष्टि खो चुकी थी। उसे कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। वह सहायता के लिए पुकारने लगी। काफी देर बाद एक व्यक्ति वहां से गुजरा। उसने फ्रांका के बंधन खोले। पूछा, तो फ्रांका रो पड़ी। उसने कहा—"मेरे साथ छल हुआ है। तुम मुझे समुद्र के किनारे तक पहुंचा दो।"

अजनबी ने फ्रांका को सागर तट पर छोड़ दिया, फिर चला गया। वहां फ्रांका रो-रोकर मछली को पुकारने लगी।

मछली समुद्र से बाहर आई। उसने पूछा, तो फ्रांका ने पूरी घटना सुना दी। मछली ने कहा—"फ्रांका, जरा भी चिंता न करो। समुद्र में स्नान कर लो। तुम्हारी पीड़ा जाती रहेगी।"

मछली के कहने पर फ्रांका ने समुद्र में स्नान किया। तुरंत उसकी आंखों की पीड़ा शांत हो गई। उसे पहले की तरह दिखाई देने लगा। सागर की उछलती लहरों पर तैरती मछली ने कहा—"फ्रांका, मैं चलती हूं तुम्हारे साथ। राजा को न्याय करना ही होगा।"

मछली तुरंत एक बुढ़िया के रूप में बदल गई। उसने अपनी जादुई छड़ी से राजा के महल से भी सुंदर एक महल बनाकर ठीक राजमहल के सामने खड़ा कर दिया। फिर फ्रांका को भली-भांति सजाकर राजा की खिड़की के सामने वाली खिड़की में बैठा दिया। राजा ने खिड़की से झांका, तो भौचक्का रह गया। 'यह कौन है ? इतना सुंदर महल रातों-रात मेरे महल के सामने किसने बना दिया ?' बहुत सोच-विचारकर उसने अपनी दासी के हाथ हीरे-मोतियों से कढ़ी एक सुंदर शाल उपहार में फ्रांका के पास भेज दी। दासी से शाल लेकर फ्रांका ने कहा —"ठीक है। अपने स्वामी से जाकर कहना कि इसे मैंने फर्श पर पोंछा लगाने के लिए रख लिया है।"

राजा की हैरानी की सीमा न रही। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह लड़की कौन है, जो इतने महंगे उपहार का कोई मूल्य ही नहीं समझती।

राजा ने फ्रांका के लिए हीरे-जवाहरात का एक बहुत ही कीमती हार भेजा। फ्रांका ने हार लेकर धन्यवाद दिया।

इस बार राजा ने अपनी दासी को भोजन का निमंत्रण देने भेजा। फ्रांका दासी से बोली—"मैं तुम्हारे स्वामी का निमंत्रण एक शर्त पर स्वीकार कर सकती हूं। मेरे साथ मेरी बोलने वाली गुड़िया भी रहेगी। यदि वह कुछ बोलना चाहे, तो राजा को उसकी पूरी बात सुननी होगी।"

दासी ने लौटकर राजा को सारी बात बता दी। राजा ने खुशी-खुशी फ्रांका की शर्त मंजूर कर ली।

मछली इस बार गुड़िया में बदल गई। भोजन की मेज पर राजा, फ्रांका की सौतेली बहनें और फ्रांका के साथ उसकी गुड़िया बैठ गए। भोजन के बीच गुड़िया आंजेला की ओर मुड़कर बोली—"तुमने मुझे खूब सताया है। मेरी आंखों में विषैली मरहम लगा दी। अपनी बदशक्ल बेटी की शादी राजा से कर दी।"

इस तरह वह शुरू से अंत तक फ्रांका के साथ हुए अन्याय की एक-एक बात खोलती रही। आंजेला और उसकी बेटियों के काटो तो खून नहीं।

अब राजा की समझ में आया कि यह क्या चक्कर था। उसने आंजेला तथा उसकी दोनों बेटियों को देश-निकाला दे दिया। फिर फ्रांका से क्षमा मांगी। एक दिन शुभ मुहूर्त में धूमधाम से दोनों का विवाह हो गया। ●

कटोरे के दैत्य

एक गरीब ब्राह्मण था। गरीब इसलिए कि काम-धाम नहीं करता था। भूख लगी, तो मांगकर आटा-दाल ले आता था। उसकी पत्नी थी स्वाभिमानी। एक दिन उसने पति से कहा—"भीख मांगना बुरी बात है। तुम कमाकर लाओ। कमाना न आता हो, तो कमाने की कला सीखकर आओ। वर्ना मैं खाना नहीं बनाऊंगी।"
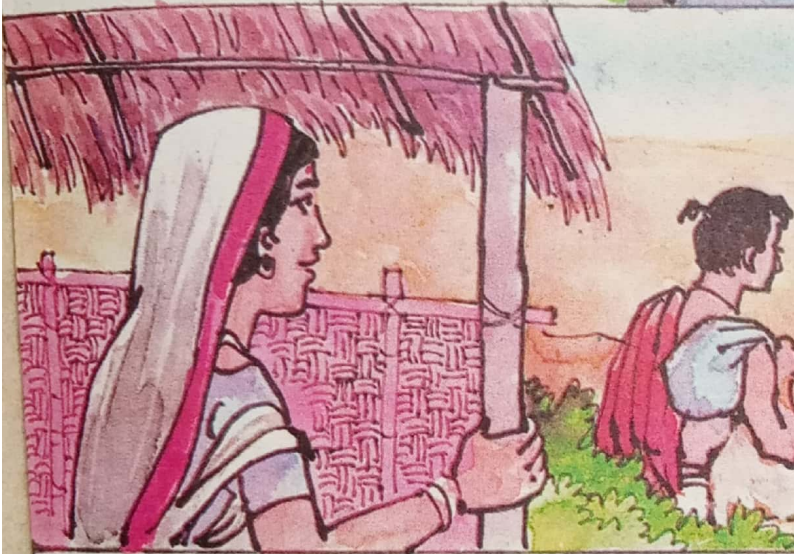
ब्राह्मण परेशान। मगर कोई चारा न था। उसने कहा—"भागवान, तू नहीं मानती, तो चला जाता हूं, कमाने की कोई कला सीखने।" पत्नी खुश थी। उसने एक पोटली में सत्तू बांधकर ब्राह्मण को दे दिया। बोली—"अब कोई कला सीखकर ही घर लौटना।" बेचारा ब्राह्मण सत्तू की पोटली उठाकर चल पड़ा।

चलते-चलते दोपहर हो गई। ब्राह्मण थक गया। छायादार पेड़ के नीचे बैठकर सत्तू खाया। फिर पैर फैलाकर सो गया। शाम तक सोता रहा। जागा, तो भेड़-बकरियों के साथ दो चरवाहे नजर आए। वे गाना गा रहे थे। ब्राह्मण ने उनसे पूछा—"तुम क्या कह रहे हो?"

वे बोले—"हम गाना गा रहे हैं। यह एक कला है। तुम शायद इस कला को नहीं जानते।" ब्राह्मण सोचने लगा—'कला मिल गई।' उसने चरवाहों से कहा—"मुझे भी यह कला सिखा दो।" चरवाहों ने उसे गाना सिखा दिया।

ब्राह्मण घर लौटा। पत्नी ने पूछा—"सीख आए कला?" ब्राह्मण बोला—"सीख आया।" कहकर वह गाने लगा। पत्नी बोली—"यह बेकार की कला क्यों सीख आए? क्या गाना गाने से पेट भर जाएगा। कल कोई ढंग की कला सीख कर आना। याद रहे, खाली लौटे, तो खाना नहीं मिलेगा।"

रात को खाट पर लेटा-लेटा ब्राह्मण सोचने लगा—'पत्नी तो मेरे पीछे हाथ धोकर ही पड़ गई । भला, कमाकर लाना, क्या कोई आसान है !' ब्राह्मण आलसी होने के साथ-साथ पेटू भी था । खाना न मिलने की बात से वह घबरा रहा था । किसी तरह रात बीती ।
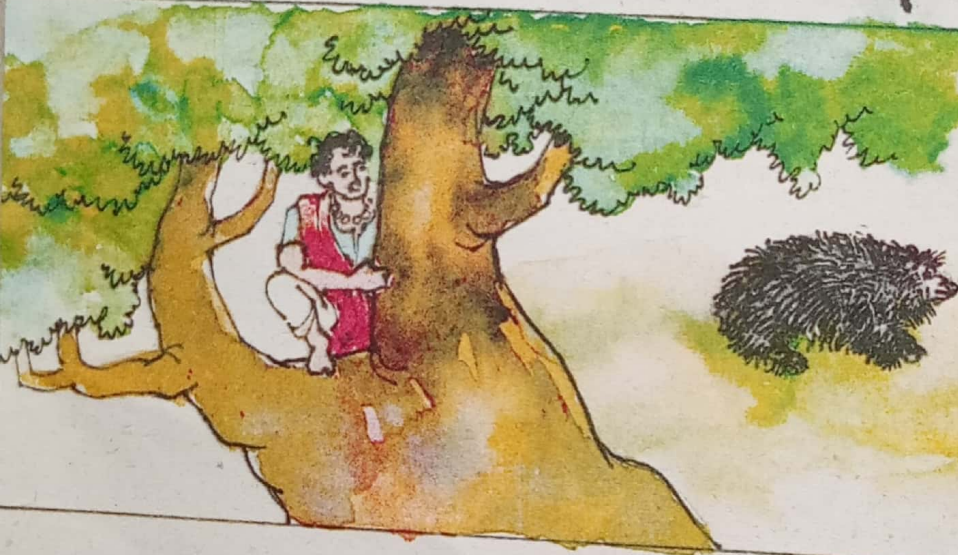
दूसरे दिन सत्तू की पोटली लेकर ब्राह्मण फिर चल दिया । इस बार चलता-चलता वह घने जंगल में पहुंचा । जंगल में उसे भालू दिखाई पड़ा । डरकर वह पेड़ पर चढ़ गया । भालू चला गया, तो पेड़ से उतरा । सोचने लगा—'यूं जान जोखिम में डालकर कमाने की कला सीखना कौन-सी बुद्धिमानी है ।' मगर पत्नी का डर था । वह फिर आगे चल पड़ा ।

कुछ दूर एक झील थी । पेड़ों की छाया भी थी । चलते-चलते वह बहुत थक गया था । सोचा—'कुछ देर आराम कर लूं । तब खाना खाकर आगे चलूंगा ।' उसने दो चुल्लू झील का पानी पिया । सत्तू की पोटली पेड़ की डाल से बांधकर सो गया ।

तभी दो वन देवियां वहां आईं । एक बोली—"आज तो बहुत भूख लगी है । मगर पकवान और मिठाइयां खाने का मन नहीं । क्या खाया जाए ?"

दूसरी वन देवी की नजर ब्राह्मण की पोटली पर पड़ी । बोली—"देखते हैं, इसमें क्या है ।"

वनदेवियों ने पोटली खोली और ब्राह्मण का सत्तू खा गईं। फिर एक वन देवी ने दूसरी से कहा—"अरे, यह भी तो भूखा होगा। नींद से जगेगा, तो क्या खाएगा बेचारा?"

दूसरी बोली—"हां, इसकी भूख का भी कुछ न कुछ प्रबंध करना भी पड़ेगा।" ऐसा कहते हुए उन्होंने पोटली में कुछ बांधकर उसे फिर से डाल पर लटका दिया। फिर अंतर्धान हो गईं।

ब्राह्मण की नींद खुली। उसने पोटली उतारकर खोली। सत्तू की जगह रखा था एक कटोरा। वह चकराया। सोचने लगा—'मेरा सत्तू कौन खा गया? भूख लगी है। भला, इस कटोरे से भूख कैसे मिटेगी?' दुःखी हो उसने पोटली से निकालकर कटोरे को जमीन पर रख दिया। आंखें बंद कर लीं। हाथ जोड़कर बोला—"भगवान, यह क्या चमत्कार है? क्या आज मुझे भूखा ही रहना पड़ेगा।"

आखें खोलीं तो चमत्कार। कटोरे से एक देवी प्रकट हुई। उस के हाथों में स्वादिष्ट पकवानों से भरे थाल थे। ब्राह्मण ने पेट भर खाना खाया। उसे खाना खिलाकर देवी कटोरे में समा गईं।

ब्राह्मण बहुत प्रसन्न था। पोटली में कटोरा बांध, वह घर की ओर चल दिया।

घर आकर उसने पत्नी को सारी बात बताई। कहा—"अब तुम खाने की चिंता न करो।" रात को पति-पत्नी ने कटोरे की देवी का लाया खाना खाया। दोनों ने तय किया—'कल आस-पड़ोस में दावत दी जाए, ताकि लोग समझ जाएं—अब हम भी दावत दे सकते हैं।'

सुबह ब्राह्मण सभी को न्योता दे आया। लोग सोच रहे थे—'इसके पास दावत देने के लिए पैसा कहां से आया ?' मगर उन्होंने दावत नामा स्वीकार कर लिया। दोपहर होने पर लोग दावत खाने आ पहुंचे। कटोरे की देवी ने पकवानों और मिठाइयों से ब्राह्मण का घर भर दिया। सबने खूब खाया। घर को भी ले गए। सभी खुश थे।

ब्राह्मण का पड़ोसी यह सब जान गया था। उसने दूसरे दिन ब्राह्मण का पीछा किया था। उसने भी वही सब करने का निश्चय किया और पोटली में सत्तू बांधकर पहुंच गया उसी पेड़ के नीचे। पोटली डाल पर लटका कर सो गया। वन देवियां आईं। उसे देखकर पहली बोली—"यह कल वाला नहीं।" दूसरी बोली—"यह उसका पड़ोसी है। बहुत लालची। इसे लालच का फल मिलना चाहिए।" उन्होंने सत्तू खाकर उसकी पोटली में भी कटोरा बांध दिया।

पड़ोसी सोकर उठा। पोटली टटोलकर देखी। अंदर कटोरा था। बस, तुरंत घर की ओर भागा। पत्नी से बोला—"ले आया कटोरा। अब देखना, कल उससे दूने आदमियों को दावत पर बुलवाऊंगा। लोग भी जान जाएंगे, मैं उससे इक्कीस हूं।"

अगले दिन पड़ोसी के घर दावत खाने वालों की भीड़ जमा हो गई। उसने कटोरे को जमीन पर रखा। कहा—"आओ, देवी, खिलाओ खाना।" मगर कटोरे में से निकले चार दैत्य। उनके हाथों में तेज उस्तरे थे। सबसे पहले उन्होंने पड़ोसी का सिर मूंडा। फिर दूसरों के सिर मूंडने लगे। सभी के सिर मूंड डाले। सारे लोग चीखते-चिल्लाते अपने-अपने घर लौट आए। सबके सिर मूंडकर दैत्य फिर कटोरे में समा गए।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष २६, अंक ११, नई दिल्ली; सितम्बर '९० श्रावण-भाद्रपद, शक सं. १९१२

कौन बताए बच्चों को, वे क्या करें?

नई दिल्ली। "मेरे पास हर दिन देश के कोने-कोने से सैकड़ों पत्र आते हैं। सभी बच्चों के होते हैं। पत्रों में बच्चे मुझसे पूछते हैं कि देश के लिए वे क्या कर सकते हैं?" थलसेना ध्यक्ष जनरल सुनीत फ्रांसिस रोड्रिग्स ने एक भेंट में बताया— "देश के बच्चों को यह बताने का काम किसका है कि देश के लिए वे क्या कर सकते हैं? क्या बच्चों की पत्रिकाएं और समाचारपत्र इतनी जिम्मेदारी भी नहीं निभा सकते?"

उन्होंने कहा— "आजकल हर काम में जिम्मेदार लोग और विशेषकर पत्र-पत्रिकाएं उलटा रुख अपनाते हैं। जो चीज, जो शिक्षा, जो मार्गदर्शन बच्चों को दिया जाना चाहिए, हर संचार माध्यम से उन्हें उससे वंचित रखा जा रहा है। क्या इससे आने वाली नई पीढ़ी कर्मठ और सच्चे मायनों में देशभक्त बन सकेगी?

अब वह समय आ गया है कि देश की पत्र-पत्रिकाएं बच्चों को लूटमार, चोरी, डाके, अपहरण आदि के स्थान पर उनमें देश-समाज के प्रति निष्ठा भरने का काम करें। जो यह समझते हैं कि बच्चे इस दिशा में बढ़ने को तैयार नहीं, या वे इन कामों के लिए बहुत छोटे हैं, वे देश और समाज का बहुत बड़ा अहित कर रहे हैं।" बच्चों के पत्रों का एक बड़ा पुलिंदा दिखाते हुए उन्होंने कहा—"ये पत्र ऐसे लोगों की सोच को झुठलाने के लिए क्या काफी नहीं हैं?"

'नंदन' के पाठकों को बधाई देते हुए उन्होंने आशा प्रकट की कि 'नंदन' इस दिशा में और जोर-शोर से प्रयास करेगा।

कुत्तों की मदद करो

स्टाकहोम। यदि किसी आदमी को जेल हो जाए, तो उसके कुत्ते की देखभाल कौन करे? स्वीडन की एक बीमा कम्पनी ने कहा था कि हम आदमी की देखभाल की जिम्मेदारी तो ले सकते हैं, मगर उसके पालतू कुत्तों की नहीं। लेकिन अदालत ने कहा है कि जब तक वह आदमी जेल से बाहर नहीं आ जाता, यह कम्पनी उसके कुत्तों की देखभाल करे।

हाथी क्यों मरा?

कोट्टायम। तिरुनक्कार मंदिर का हाथी विश्वनाथन मर गया। कुछ दिन हुए विश्वनाथन का महावत चला गया था। नए महावत को उसने स्वीकार नहीं किया। इसके लिए विश्वनाथन को जंजीरों में जकड़ा गया, भूखा रखा गया। लेकिन वह अपने महावत को नहीं भूल सका। उसके मरने पर पूरा शहर बंद रहा। मंदिर में पूजा नहीं की गई। अब एक समिति विश्वनाथन की मौत की जांच करेगी।

गरीब बच्चे खेलें

नई दिल्ली। भारत में ब्रिटेन के हाई कमिश्नर डेविड गुडाल ने झोंपड़ियों में रहने वाले बच्चों को तीस हजार रुपए की सहायता दी है। इस राशि से इन बच्चों के लिए खेल और पढ़ाई का सामान खरीदा जाएगा।

इंग्लैंड में भारत को पुरस्कार

लंदन। भारतीय मूल का किशोर प्रवीण यहां की एक राष्ट्रीय प्रतियोगिता में विजयी रहा है। इंग्लैंड के नेशनल वेस्टमिंस्टर बैंक ने 'स्पिरिट आफ एंटरप्राइज' नामक इस प्रतियोगिता का आयोजन किया था। इसमें पूरे इंग्लैंड के स्कूली छात्रों ने भाग लिया था। प्रवीण ने अपने साथियों के संग बैंक की सहायता से जलपान की छोटी-सी दुकान चलाई थी। इस प्रतियोगिता के समाचार यहां के सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए। प्रवीण गिल्फर्ड काउंटी स्कूल का छात्र है।

कितनी बार आई चिड़िया

बर्मिंघम। एक ऐसा रोबोट बनाया गया है, जो पचास किस्म के काम कर सकता है। काम सुनिए—इमारत को गरम रखना, तापमान बताना, पेड़ के नीचे हो तो कितने पक्षी आए, कितनी बार बोले? जानवर कितना चारा खाते हैं? जमीन में कितनी नमी है? रोगी की नाड़ी की गति कितनी थी? आदि-आदि। इस मशीनी मनुष्य का नाम है—स्कोर्पियो। आकार में यह एक पुस्तक के बराबर है।

बहुमूल्य कृतियां कूड़े में

त्रिवेंद्रम। शिकारियों से हाथियों को बचाने के लिए हाथी दांत की बनी चीजों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। केरल सरकार के पास हाथी दांत की लाखों रुपए मूल्य की कलाकृतियां पड़ी हैं। इन्हें बाजार में भी नहीं बेचा जा सकता। हाथी दांत से कलाकृतियां बनाने वाले कारीगरों को दूसरे रोजगार ढूंढ़ने पड़ रहे हैं।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार-
नंदन बाल समाचार

ऐसा कोई काम नहीं, जो किया न जा सके। —शेखसादी

बहुत-कुछ नया

छुट्टियां खत्म हुईं। स्कूल खुल गए। अधिकतर छात्र नई कक्षाओं में आए हैं। नई-नई पुस्तकें। कई अध्यापक भी नए हैं। ऐसे में उत्साह जागता है। पर सीखना केवल कक्षा में ही नहीं होता। बाहर भी बहुत कुछ सीखने-जानने को है। पुस्तकालय में, मनबहलाव की अनेक गतिविधियों में और खेल के मैदान में भी दूसरों से हम कैसे पेश आएं, किन से दोस्ती करें— समझना भी जरूरी है।

यों तो आदमी जीवन भर ही सीखता है। हमेशा छात्र बने रहने का बड़ा सुख है। कुछ न कुछ नया होता रहे, हम उसमें भागीदार बनें— इससे बढ़कर और क्या?

शाकाहारी बढ़े

लंदन। ब्रिटेन में शाकाहारी बढ़ रहे हैं। शाकाहारियों द्वारा यहां आयोजित रैली में हजारों लोगों ने भाग लिया। रैली में पशु हत्याओं पर रोक लगाने की मांग की गई। इसमें ब्रिटेन के कई सांसद भी शामिल हुए।

बच्चे करें देखभाल

नई दिल्ली। कंजर्वेशन सोसाइटी का कहना है कि दिल्ली में जितने भी प्राचीन स्मारक इधर-उधर बिखरे हैं, उन्हें स्कूल गोद ले लें। बच्चे इन इमारतों की देखभाल ज्यादा अच्छी तरह से कर सकते हैं। परीक्षण के लिए स्कूली बच्चों के कैम्प कुछ इमारतों के पास लगाए गए। बच्चों ने तुरत-फुरत इन इमारतों की सफाई की और इनकी मरम्मत भी कर दी।

गाजियाबाद में रेल टर्मिनल

गाजियाबाद। यहां जल्दी ही रेल टर्मिनल बनाया जाएगा। तब लम्बी दूरी की बहुत-सी गाड़ियां यहां से शुरू हुआ करेंगी।

पेड़ की ताकत

नई दिल्ली। पेड़ भी अपने को बदल रहे हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि जहां बहुत अधिक प्रदूषण होता है, वहां लगे पेड़ उस स्थिति में जिंदा रहना सीख जाते हैं। वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि पेड़ वायुमंडल के घातक तत्वों को साफ करने का काम करते हैं। पत्तियां सबसे बेहतर छलनियों का काम करती हैं। यदि अधिक संख्या में पेड़ लगे हों, तो प्रदूषण खत्म हो सकता है।

पढ़ाकू राष्ट्रपति

वाशिंगटन। अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश को किताबें पढ़ने का बहुत शौक है। उनका कहना है कि एक रोचक किताब पढ़ने के बाद बहुत बढ़िया नींद आती है।

विनी गुड़िया

केपटाउन। सुनहरे कपड़े, ढेर सारे गहने और चेहरे पर मुसकान—यह है विनी। नेलसन मंडेला की पत्नी के नाम और शक्ल जैसी यह गुड़िया यहां खूब बिक रही है। इसकी कीमत है अड़तीस डालर।

चुम्बक चलाएगा जहाज

तोक्यो। जापान में चुम्बक से चलने वाला पानी का जहाज बनाया गया है। इसका नाम है—'यामोतो वन'। इस पर साढ़े तीन करोड़ रुपए खर्च हुए हैं।

ट्रैक्टर बर्फ काटेगा

लेनिनग्राद। सोवियत संघ में नए किस्म का ट्रैक्टर तैयार किया है। यह ट्रैक्टर पानी के बीच काम कर सकता है। झील और नहरों में जमी बर्फ को काट सकता है। लकड़ी के लट्ठों को पानी में फेंक सकता है।

शिक्षा मुफ़्त

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में बारहवीं कक्षा तक के छात्रों को मुफ़्त शिक्षा दी जाएगी। सरकार का यह निर्णय इसी वर्ष से लागू कर दिया गया है। इससे लाखों छात्र-छात्राओं को लाभ होगा।

अखबार पढ़ने वाले

कोचीन। केरल के लोग सबसे अधिक अखबार और पत्रिकाएं पढ़ते हैं। ५९ प्रतिशत लोग इन पत्र-पत्रिकों में दिलचस्पी लेते हैं। बिहार और उड़ीसा में सबसे कम लोग अखबार पढ़ते हैं।

सबसे मोटे राजा

नुकुऊअलोफा। टोंगा छोटा-सा देश है। यह १५० द्वीपों से मिलकर बना है। इसके राजा ताऊफा आहाऊ को गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में स्थान दिया गया है। कारण वह दुनिया के सबसे भारी-भरकम राजा हैं। वजन सिर्फ १७४ किलोग्राम। टोंगा में आमतौर पर स्त्री और पुरुष मोटे होते हैं। दुनिया के सबसे मोटे राजा अब बहत्तर वर्ष के हो चुके हैं। डाक्टरों की सलाह पर वजन कम करने के लिए वह साइकिल चलाते हैं। पीछे-पीछे उनके अंगरक्षक दौड़ते रहते हैं।

मत मारो

वाशिंगटन। हिंसा रोकने के लिए हिंसा का प्रयोग बहुत घातक है। अमरीका के एक समाजशास्त्री ने अमरीकी और दस यूरोपीय देशों के बच्चों का अध्ययन किया। उसने पाया कि जिन बच्चों की बचपन में बहुत अधिक पिटाई की जाती है, वे अपराधी बन जाते हैं। यही नहीं बड़े होकर वे अपने बच्चों को भी बहुत मारते-पीटते हैं। इसी विषय पर हुए एक सम्मेलन में २५० वकीलों, पत्रकारों, लेखकों का मानना था कि बच्चों को शारीरिक दंड नहीं दिए जाने चाहिए।

बच्चों की रेल

नागपुर। वनबाला नामक बच्चों की रेलगाड़ी दोबारा से शुरू की जा रही है। इसमें चालीस बच्चे बैठ सकते हैं। टिकट रखा गया है दो रुपए।

नौकरियां ही नौकरियां

सिंगापुर। भारत में नौकरियां मुश्किल से मिलती हैं, मगर सिंगापुर में नौकरी करने वाले नहीं मिलते। वहां एक उम्मीदवार हो, तो उसके लिए आठ पद खाली हैं। यहां नौकरियों की संख्या लगातार बढ़ रही है जबकि रोजगार दफ़्तरों में नाम दर्ज कराने वालों की संख्या घट रही है।

कछुए के नाम जायदाद

लंदन। वह फ्रेड को अपने बेटे से ज्यादा प्यार करती थी। इस महिला का नाम डाली डाफिन था। इकहत्तर वर्ष की उम्र में डाली का निधन हुआ। इससे पहले उसने अपनी सारी सम्पत्ति फ्रेड के नाम कर दी। फ्रेड डाली का पालतू कछुआ है। अक्सर डाली जब खरीददारी करने जाती, तो बच्चा गाड़ी में बैठाकर अपने कछुए को भी ले जाती। अब 'रायल सोसायटी आफ एनीमल' फ्रेड की देखभाल करेगी।

पौधे लगाओ

नई दिल्ली। नई दिल्ली पालिका इस वर्ष डेढ़ लाख पौधे लगाएगी। चाणक्यपुरी में उप राज्यपाल श्री अर्जनसिंह ने कहा कि हमें स्वदेशी और फलदार वृक्ष लगाने चाहिए।

बौनों को मत उछालो

न्यूयार्क। यहां कई स्थानों पर बौनों को उछाल कर तरह-तरह के करतब दिखाए जाते हैं। सरकार ने ऐसे सभी खेलों पर प्रतिबंध लगा दिया है। अब जिस भी होटल में ऐसे खेल दिखाए जाएंगे, उनका लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा।

महिला व्यापारी

बान। पश्चिम जर्मनी में व्यापार करने वाली महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। इन दिनों यहां नई खुलने वाली हर तीसरी कम्पनी की मालिक महिला है। महिला व्यापारियों की एक संस्था बनी है। इस संस्था की तीन लाख सदस्य हैं। वहां की व्यापार क्षेत्र की पत्रिकाएं भविष्यवाणियां कर रही हैं कि जल्दी ही व्यापार के क्षेत्र में महिलाएं छा जाएंगी।

बोलती घड़ी

दोहा। सऊदी अरब में बोलने वाली घड़ी बनाई गई है। यह घड़ी तीन भाषाओं— अरबी, फ्रांसीसी और अंग्रेजी में बोलकर समय बताया करेगी। हर घंटे बाद यह अपने देश की राष्ट्रीय धुन भी बजाया करेगी। इस घड़ी को बनाने में साढ़े सात लाख रुपए खर्च हुए हैं।

तलवारों से तोला

दुर्ग। आमतौर पर लोगों को सिक्कों से तोला जाता है। मगर यहां रायगढ़ जिले के विधायक दिलीपसिंह देव जू को तलवारों से तोला गया। उनके वजन के बराबर १३५ तलवारें चढ़ीं।

नन्हे समाचार

☐ पुणे में नेत्रहीनों के लिए खुला विश्वविद्यालय बनाया जा रहा है।

☐ अमरीका में ऐसा रोबोट बनाया गया है जो गायों का दूध दुह सकता है।

☐ एक फार्म से तरल खाद नदी में चली गई, तो पांच लाख मछलियां मर गईं। फार्म मालिक को बासठ लाख रुपए का हर्जाना देना पड़ा।

☐ इंग्लैंड में कई खेतों में विचित्र घेरे नजर आते हैं, लोग कहते हैं, इन घेरों को अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमय जीव बनाते हैं। आजकल इन पर खोज चल रही है।

☐ कनाडा में वेनकूवर के पास एक गहरी झील में सांप जैसा जल दानव कई बार देखा गया है। आजकल एक जापानी दल उसका पता लगा रहा है।

☐ भालू जैसा जीव पांडा केवल चीन में पाया जाता है। इनकी संख्या १००० से भी कम रह गई है।

☐ ब्रिटिश संग्रहालय में रखी मिस्री ममियों की जांच की जाएगी कि उनमें एड्स के विषाणु तो नहीं, ये साढ़े पांच हजार वर्ष पुरानी हैं।

☐ पिछले दिनों एक क्षुद्र ग्रह धरती के बहुत पास से गुजरा। उस समय उसकी गति ३५,००० किलोमीटर प्रति घंटा थी।

☐ केलिफोर्निया में चिमनी साफ करने वाला जेरी फोर्ब्स अपने साथ बेटे को भी ऊपर ले जाता है। फोर्ब्स अपने बेटे को तब से ले जाने लगा है जब वह सिर्फ तीन महीने का था।

☐ पूर्वी और पश्चिमी बर्लिन के बीच दीवार टूट गई। हाल ही में एक संगीत कार्यक्रम के लिए नकली दीवार बनाई गई। उसमें एक रबड़ का पशु भी था जो छह मंजिली इमारत जितना ऊंचा था। कार्यक्रम से मिली रकम दुखी लोगों पर खर्च की जाएगी।

नं. बा. स. ३६ स

विश्वनाथन आनंद : शतरंज में भारत का नाम ऊंचा किया।

दुनिया का सबसे छोटा थिएटर : इसमें होने वाले नाटक खूब सराहे जाते हैं।

साहित्य कला परिषद द्वारा आयोजित नाट्य महोत्सव : चितरंजन पार्क केंद्र की प्रस्तुति 'महा अशांति' का एक दृश्य।
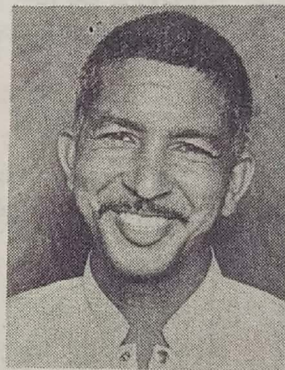
राजेंद्रप्रसाद गुप्ता ९१०० सौ कि. मी. पैदल यात्रा कर, दो अक्तूबर को लंदन पहुंचेंगे। यह पैदल यात्रा एक रिकार्ड होगी।

स्वीडन के स्टीफन एडबर्ग ने इस वर्ष बिम्बलडन चैम्पियनशिप जीती।

वायुसेना के इन चार जवानों ने सिआचिन ग्लेशियर (ऊंचाई १७,५०० फुट) का सफर अपनी मोटर साइकिलों से किया। सियाचिन तक पहुंचने का मार्ग बहुत ऊबड़-खाबड़ है।

यश की पताका

एक राजा था—शालदेव । उसने अनेक राज्य जीते । जीत ने उसे अभिमानी और कठोर बना दिया ।

उसका अभिमान आकाश को छूने लगा—
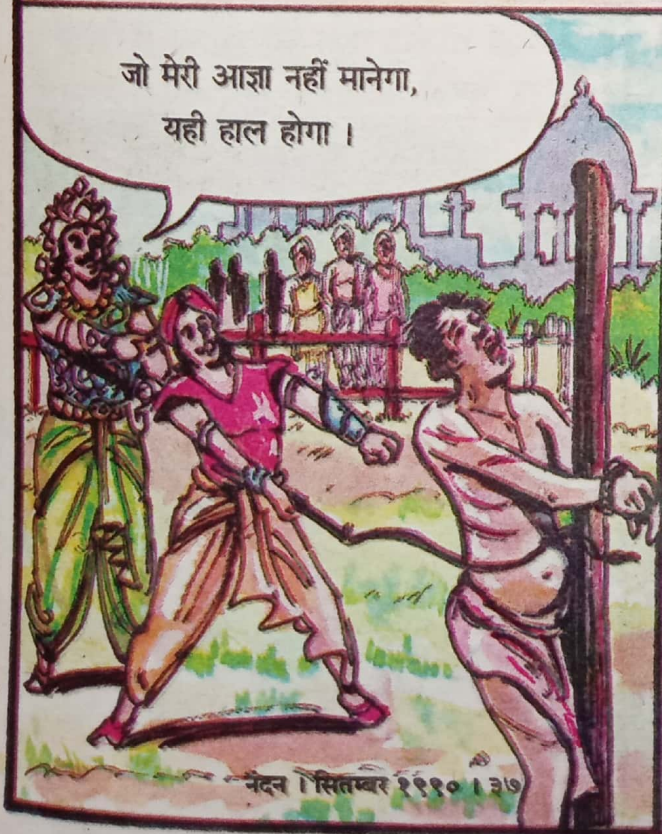
मेरे सामने सिर झुका कर बात करो साधु ।

इतना अभिमान ठीक नहीं राजन् !

उसकी निर्दयता रोज नए रूप दिखाती...

एक दिन राजा शिकार पर गया । वहां...

दोनों पानी पीकर लौटे। रास्ते में...

कमाल है। मैं इतना महान, मगर लोग मेरा नाम तक नहीं जानते। जानना चाहिए।

जी अन्नदाता !
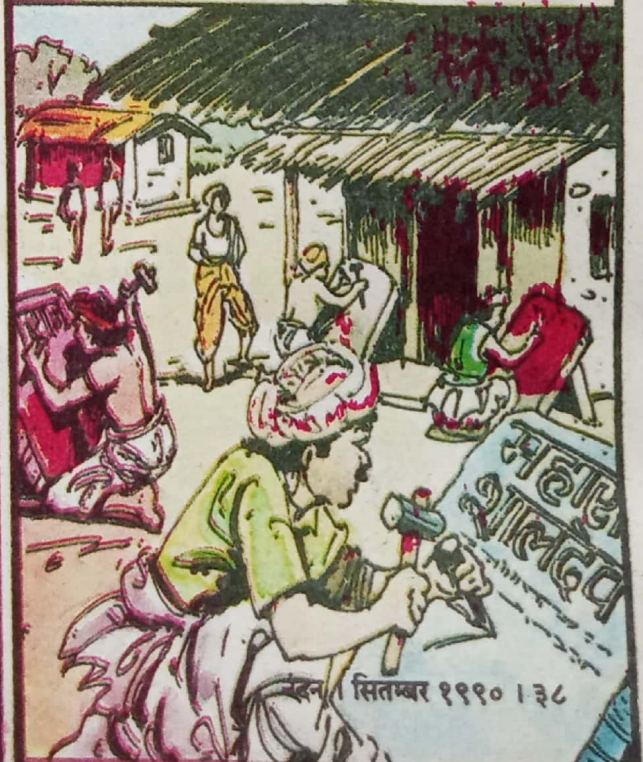
एक दिन....
हर सड़क के दोनों ओर शिला लेख लगवा दिए हैं अन्नदाता !
शाबास । कल हम देखने चलेंगे ।

राजा लाव-लश्कर के साथ शिला लेख देखने गया । किंतु
यह क्या ?
!?
!?
कौन तोड़ गया इन्हें ?

राजा का पारा चढ़ गया । शिला लेख तोड़ने के अपराध में....
सड़कों के किनारे बसे गांवों के लोगों को बंदी बना लो। उनसे पूछो, यह काम किसने किया ।

सब ओर त्राहि-त्राहि मच गई....
ऐसा निर्दयी राजा नहीं देखा ।
यहां से भागो, जान बचाओ ।
भागो ! भागो !

अगले दिन सैनिक कुछ बच्चों को पकड़ कर दरबार में लाए....

राजा और चकित....

नाम । तुरंत । कैसे ?

शिला लेखों पर नाम कोई पढ़ता, कोई नहीं । कोई कभी पढ़ता, कोई कभी । वे टूटे, तो आपके सैनिकों ने कोहराम मचा दिया । अब सबकी जुबान पर है—निर्दयी शालदेव ।

सुनकर राजा को झटका सा लगा । सिंहासन से उतर कर उसने....

उस दिन के बाद.....

फूल नदी में

—मिर्जा इरफान बेग

बहुत समय पहले कफकाज में एक सुंदर राजकुमारी थी—जमुर्रद। राजकुमारी को हरे रेशमी वस्त्र बहुत पसंद थे। इन्हें पहनने के बाद राजकुमारी इतनी सुंदर लगती, जैसे कोई सब्जपरी आकाश से धरती पर उतरकर मंद-मंद मुसकरा रही हो। जमुर्रद बादशाह की लाड़ली और प्रजा की चहेती थी। बेपनाह सुंदर होने के साथ-साथ वह बहुत नेकदिल भी थी।

एक बार की बात है। चांदनी रात में जमुर्रद अपनी सखियों के संग खेल रही थी। तभी आसमान में एक विशाल काली छाया दिखाई पड़ी, जिसने चांद को ढक दिया। कुछ क्षण बाद, जैसे ही छाया लुप्त हुई, जमुर्रद का कहीं पता न था। राज्य में सनसनी फैल गई। चप्पा-चप्पा छान मारा गया, पर जमुर्रद का कहीं पता न चला। राज ज्योतिषी ने बताया कि राजकुमारी को काले पर्वत की काली चुड़ैल ने कैद कर रखा है।

इस घटना के चर्चे चारों ओर दूर-दूर तक पहुंचे। कैफा के बादशाह सुल्तान आली इब्ने यूसुफ के सातों बेटे शिक्षा ग्रहण करके राजधानी लौटे थे। सातों राजकुमार थे बहुत बहादुर, साहसी और नेकदिल। वे सैर-सपाटे और शिकार के बहुत शौकीन थे। एक रात बादशाह ने उनसे कहा—"शाहजादो, आप लोग किसी भी दिशा में कहीं तक भी जा सकते हैं, पर दक्षिण दिशा में भूल कर भी न जाएं।"

"मगर क्यों ?—सबसे बड़े राजकुमार आसिम ने प्रश्न किया।

"दक्षिण में नदी के उस पार काले पर्वत हैं, जहां जाकर आज तक कोई वापस नहीं लौटा।"—बादशाह ने समझाया।

कुछ दिनों तक तो राजकुमारों ने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया, पर एक दिन उनके घोड़े अचानक दक्षिण की ओर मुड़ गए। नदी के उस पार फूलों भरी सुंदर घाटी थी और उनके पीछे थीं—हरियाली की चादर ओढ़े मनोरम पहाड़ियां। राजकुमारों ने अपने घोड़े नदी में उतार दिए। नदी पार कर, फूलों की महकती-दमकती घाटी से गुजरते हुए वे पहाड़ियों तक पहुंचे। पहाड़ियों के बीच एक बहुत सुंदर महल था। सूरज ढल चुका था। राजकुमारों ने रात वहीं बिताने का निश्चय किया। घोड़ों को मुख्य द्वार के निकट बांधकर वे महल में चले गए।

महल की हर वस्तु बड़ी शालीनता से सजी थी। कंदीलों के प्रकाश से कोना-कोना जगमगा रहा था। उन्हें ऐसा लगा, जैसे उन्हीं के स्वागत के लिए इसे सजाया गया हो। राजकुमारों ने महल में हर ओर देखा, वहां कोई न था। आवाजें दीं, पर कोई जवाब नहीं आया। थक-हारकर वे एक बड़े शयन कक्ष में आराम करने लगे। आंख लगी ही थी कि एक मधुर स्वर सुनाई दिया—"कैफा के शाहजादो ! आपका स्वागत है। कृपया भोजन करके आराम करें।"

राजकुमारों ने देखा और बस देखते रह गए। परी सरीखी सात लड़कियां उनके सामने खड़ी थीं। राजकुमारों ने भोजन किया और सो गए। प्रातः नाश्ते पर आसिम ने कहा—"हम आपके आभारी

हैं. . . अब हमें चलना चाहिए । घर पर सब चिंतित होंगे ।''

''परेशान न होओ शाहजादे ! आपके यहां संदेश भेज दिया गया है कि आप हमारे अतिथि हैं और सात दिन यहीं रहेंगे ।''—एक लड़की ने मुसकराते हुए कहा—''वैसे भी यह जगह बहुत सुंदर और मनभावन है । क्या नहीं है यहां ?''

सचमुच प्रकृति की सुंदरता वहां बिखरी हुई थी । खूबसूरत झरने, सुरीले राग गाते पक्षी, प्रकाश बिखेरते फूल, चट्टानों में दूध और शहद की धाराएं, सुनहरे हिरन, सींगों वाले सिंह, झील में चमकते ढेरों हीरे-मोती—सब कुछ स्वप्न लोक का-सा । राजकुमार दिन भर दूर-दूर तक घूमते और शिकार खेलते । सातों सुंदरियां उनके साथ रहतीं । इस तरह सात दिन बीत गए । अगले दिन उन्हें अपने देश लौटना था ।

सातों सुंदरियां जा चुकी थीं । बुरी तरह थके होने पर भी न जाने क्यों आज आसिम को नींद नहीं आ रही थी । किसी अनजान खतरे का आभास उसे हो रहा था । महल बहुत ही रहस्यमय था । एक दिन चुपके-चुपके उसने पूरा चक्कर लगाया था, पर इसमें कहीं कोई द्वार नहीं मिला । पहाड़ियों के बीच वह रास्ता भी नहीं दिखाई दिया, जिससे वे महल तक पहुंचे थे । महल के चारों ओर पहाड़ों की दीवार-सी खड़ी थी । फिर यह भी समझ में नहीं आया कि लड़कियां कौन हैं ? यहां अकेली क्यों रहती हैं ? महल और बाहर कहीं कोई और नहीं दिखाई पड़ा । राजकुमार जितना सोचता, रहस्य और गहरा होता जाता । वह बेचैनी से करवटें बदलता रहा । उसके भाई गहरी नींद सो रहे थे ।

रात आधी ही बीती होगी कि दरवाजा धीरे-धीरे खुला और एक अत्यंत भद्दी, कुरूप, काली-कलूटी लड़की कमरे में आई ।

''कौन हो तुम ?''—आसिम ने पूछा—''यहां क्यों आई हो ?''

''लड़की ने शाहजादे को शांत रहने का संकेत किया और उसके बिल्कुल पास आकर धीरे से बोली—''शाहजादे, आप लोगों की जान खतरे में है । यह महल काले पर्वत की काली चुड़ैल का है । ये सातों लड़कियां उसी की बेटियां हैं । काली चुड़ैल ने मेरा रंग-रूप छीनकर उन सातों में बांट दिया ।''—कहते-कहते लड़की उदास हो गई ।

आसिम की नजर लड़की के गले में पड़े हार पर पड़ी, तो वह चौंक उठा—''कफकाज की शहजादी जमुर्रद ! तुम और इस हाल में ?''

''हां, शाहजादे । शायद यही मेरी किस्मत थी । आज भोर में काली चुड़ैल आने वाली है । उसकी बेटियां आप लोगों को पकाने की तैयारी में लगी हैं । आपको अभी—इसी समय यहां से निकल जाना चाहिए ।''—जमुर्रद ने कहा ।

''मगर हम निकलें कैसे ?''—आसिम ने पूछा ।

''इन परदों को जोड़कर खिड़की से नीचे उतर जाइए । आपके घोड़े वहीं खड़े हैं । ये हरे गुलाब लाई हूं, इन्हें आपस में बांट लें । जब चुड़ैलें पीछा करते हुए आपके निकट पहुंचें, तो एक-एक फूल उनकी ओर फेंक दें । अब जल्दी कीजिए शाहजादे ।''—जमुर्रद ने आग्रह किया ।

जमुर्रद के बहुत मना करने पर भी आसिम ने उसे अपने घोड़े पर बैठा लिया । सातों घोड़े उत्तर की ओर

सरपट दौड़े जा रहे थे। काली पहाड़ियां पीछे छूट चुकी थीं। अचानक जमुर्रद चिल्लाई—"फूल फेंको!" सातों राजकुमारों ने झट एक-एक फूल फेंक दिया। चुड़ैलों ने भयानक आवाज निकाली और एक-एक फूल उठाकर लौट गईं। घोड़े और तेज हो गए। नदी अभी दूर थी। चुड़ैलें फिर आ धमकीं। राजकुमारों ने फिर फूल फेंके। इस तरह छह राजकुमार नदी पार कर गए। आसिम का घोड़ा अभी नदी के इसी पार था कि चुड़ैलें आ गईं। जमुर्रद ने चीखकर कहा—"सारे फूल नदी में फेंक दो।"

राजकुमार ने ऐसा ही किया। चुड़ैलों ने नदी में छलांग लगा दी, किंतु अगले ही पल ऐसा लगा जैसे दहकते हुए अंगारे पानी में छ-न-न छनन-न कर भाप बन गए हों। आसिम ने देखा, जमुर्रद को उसका अनुपम रूप वापस मिल गया था और अब वह स्वप्न लोक की परी लग रही थी। भोर का स्वर्णिम उजाला फैल रहा था। पर यह क्या ? उस पार फूलों की घाटी कहां गई ? दूर-दूर तक रेत ही रेत थी। तभी पहाड़ियों के पीछे आग की लपटें उठीं और शक्तिशाली विस्फोट हुआ। काली चुड़ैल अपने झुंड समेत महल में भस्म हो गई।

कुछ देर विश्राम के बाद उस पार सैकड़ों घुड़सवार नदी की ओर बढ़ते दिखाई दिए। जमुर्रद ने बताया कि ये वे लोग थे, जो उसे ढूंढ़ते हुए आए थे और चुड़ैल के महल में कैद हो गए थे। जमुर्रद ने फूल देकर उनसे विनती की थी कि उसे भी अपने साथ ले जाएं, पर उन्होंने अकेले ही बच निकलने में अपनी भलाई समझी। काले पर्वत के स्पर्श से ही वे घोड़े समेत पत्थर बन गए। अब जमुर्रद के आजाद होते ही वे जीवित हो उठे थे। जमुर्रद और सातों राजकुमारों ने उनका स्वागत किया।

उस रात कैफा की राजधानी में वह भव्य उत्सव मनाया गया, जो पहले किसी ने न देखा और न सुना। सातवें दिन शाही काफिले के संग राजकुमार आसिम की बारात कफकाज रवाना हुई। बारात में वे सभी युवक भी थे, जिन्हें नया जीवन मिला था। ●

खो गई बांसुरी

—सुभद्रा मालवी

दक्षिण चीन में एक गांव था। वहां पहाड़ से मीठे पानी का झरना बहता था। उससे गांव के खेतों की सिंचाई होती थी। उसी गांव में एक सुंदर लड़की रहती थी। उसके बाल बहुत लम्बे थे। इसी से लोग उसे लम्बे बालों वाली लड़की कहकर पुकारते थे।

एक बार झरने का पानी सूख गया। गांव वाले परेशान हो उठे। फसलें मुरझाने लगीं। वह लड़की एक दिन जंगल में घूम रही थी तो उसने ऊंचाई पर शलजम की पत्तियां चमकती देखीं। वह उत्सुक होकर वहां चली गई। उसने शलजम उखाड़ा तो पानी का झरना फूट पड़ा, और खेतों की तरफ बहने लगा।

लेकिन तभी शलजम फिर अपनी जगह जा लगा और पानी रुक गया। तेज हवा उसे उड़ाकर एक अंधेरी गुफा में ले गई। वहां भयानक दैत्य बैठा था। उसने कहा— "लड़की, इस बारे में किसी से कुछ न कहना, नहीं तो मार डालूंगा।" और तेज हवा ने उसे उड़ाकर नीचे पटक दिया। लड़की दुखी मन से घर में चली आई।

उसने किसी से कुछ नहीं कहा। पर मन ही मन वह परेशान रहने लगी। फसलें सखती जा रही थीं।
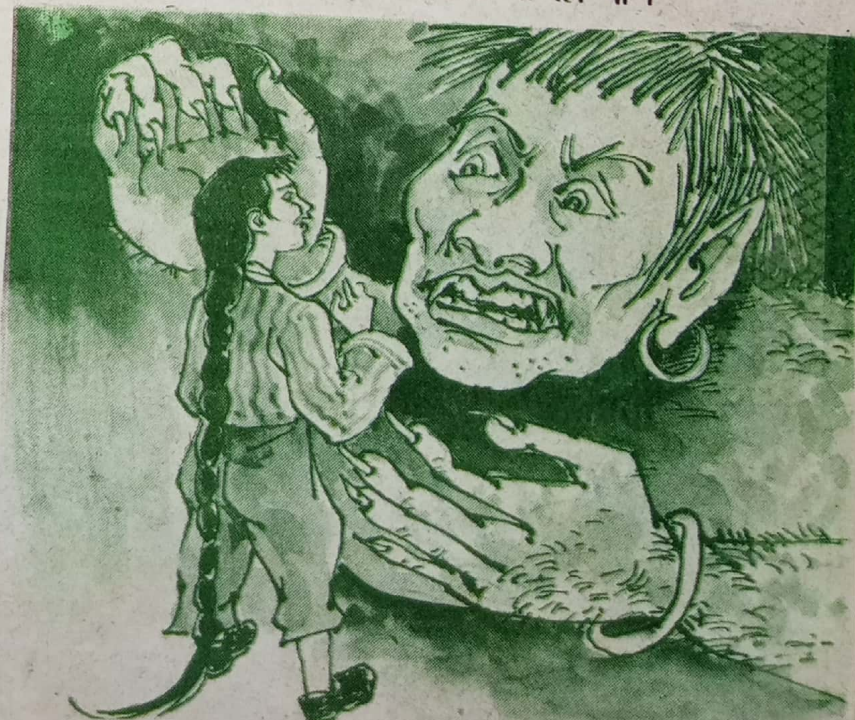
लोगों को बहुत दूर से ढोकर पानी लाना पड़ता था । एक दिन एक बूढ़ा पानी लाते समय गिर गया ।

यह देख, लड़की को बहुत दुःख हुआ । वह सोच रही थी— 'क्या लोगों को इतनी तकलीफ में देखकर भी मुझे चुप रहना चाहिए ?' उसने निश्चय किया, चाहे जो हो जाए, वह गांव वालों को झरने का रहस्य अवश्य बताएगी ।' वह गांव के बीचोंबीच पहुंची और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी— "सुनो गांव वालो ! मैं एक झरने का रहस्य जानती हूं ।"

लड़की की बात सुन, गांव में हलचल मच गई । सब उसके पीछे चल दिए । लड़की गांव वालो को लेकर उस चमकते शलजम के पौधे के पास जा पहुंची । उसने शलजम उखाड़कर फेंक दिया । फिर गांव वालों से कहा— "जल्दी से इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालो, नहीं तो गड़बड़ हो जाएगी ।" शलजम को उखाड़ते ही उसके नीचे से पानी की मोटी धार फूट पड़ी ।

गांव वालों ने तुरंत शलजम को काटकर फेंक दिया, फिर खुशी से झूमते हुए ताली बजा बजाकर नाचने लगे । इस बीच उन्हें पता नहीं चला कि लड़की वहां से गायब हो गई । हवा का झोंका उसे उड़ाकर दैत्य की गुफा में ले गया । दैत्य उस पर गरजने लगा । उसने कहा— "लड़की, तूने मेरी आज्ञा नहीं मानी । अब मैं तुझे बहुत बुरी सजा दूंगा ।"

दैत्य ने अपने दो साथियों को बुलाया । कहा— "इसे जंजीर से जकड़कर झरने के नीचे फेंक दो ।" ऐसा ही किया गया । झरने का पानी सिर पर गिरते रहने से लड़की बेहोश हो गई ।

इधर जब लोग गांव में पहुंचे तो उन्हें पता चला कि लड़की उनके साथ नहीं है । वे उसे इधर-उधर खोजने लगे, पर कुछ पता न चला । उस लड़की का एक मित्र था— जियाओ योंग । उसे अपनी मित्र के इस तरह गायब होने से गहरा दुःख हुआ था ।

गांव में एक बूढ़ा बरगद था । योंग बरगद के नीचे जा पहुंचा । उससे पूछने लगा । बरगद से आवाज आई— 'उसे दैत्य ले गया है और कष्ट दे रहा है ।' योंग उधर ही दौड़ने लगा, जिधर बरगद ने इशारा किया था । योंग ने लड़की को जंजीरों से बंधे पाया । वह बेहोश थी ।

योंग फिर बूढ़े बरगद के पास आया । बरगद से आवाज आई— "दक्षिण दिशा में चलते जाओ, सात पहाड़ चढ़ने के बाद आठवें पहाड़ पर परी मिलेगी । उससे उसकी बांसुरी मांग लेना । उसी से दैत्य पराजित होगा ।"

योंग कठिनाइयां सहता, एक के बाद दूसरा पहाड़ चढ़ता आठवें पहाड़ की परी के पास पहुंचा । परी बैठी बांसुरी बजा रही थी । उसे पहले से ही मालूम था कि योंग वहां किसलिए आया है । परी ने कहा— "योंग यह बांसुरी दैत्य को सिर्फ थोड़ी देर के लिए भगा सकती है । सदा के लिए उसे हराना चाहते हो तो तुम्हें अपनी बुद्धि पर भरोसा करना पड़ेगा ।" इतना कहकर आठवें पहाड़ की परी ने बांसुरी योंग को थमा दी ।

योंग ने इस बारे में गांव वालों से विचार-विमर्श किया । फिर तय हुआ कि लड़की की एक मूर्ति बनाई जाए । शिल्पियों ने जल्दी ही प्रतिमा तैयार कर दी । अब वे मूर्ति को लेकर दैत्य की गुफा के पास पहुंचे । योंग परी की बांसुरी बजाने लगा । उसकी आवाज सुनते ही दैत्य भाग गया ।

इसके बाद योंग तथा गांव वाले मूर्ति लेकर झरने के नीचे गए । योंग ने बांसुरी बजाई तो लड़की ने आंखें खोल दीं । योंग ने तुरंत उसके बंधन खोल दिए । उसकी जगह पत्थर की प्रतिमा रख दी और उसके बाल काट कर लगा दिए । देखने से वह मूर्ति एकदम असली लग रही थी । फिर सब लोग जल्दी-जल्दी लड़की को गांव में ले आए ।

सब प्रसन्न थे कि उन्होंने लड़की को दैत्य के चंगुल से बचा लिया था । गांव में आने के बाद लड़की के सिर पर खुजली होने लगी और उसके बाल फिर पहले जैसे हो गए । उधर लड़की की प्रतिमा झरने के नीचे जंजीरों से बंधी पड़ी थी । कुछ देर बाद दैत्य फिर अपनी गुफा में लौट आया । उसे जरा भी संदेह नहीं हुआ कि योंग ने उसे यों छका दिया था । ●

पैरों के निशान

—शांता ग्रोवर

बहुत पहले की बात है। कश्मीर में चंद्रपीड़ नाम का राजा था। वह बहुत बुद्धिमान था। प्रजा का ध्यान रखता था। अत्यंत न्यायप्रिय था। चंद्रपीड़ के शासन में किसी के साथ अन्याय नहीं होता था। प्रजा ऐसे राजा को पाकर अपने को धन्य समझती थी।

इसी राज्य में सत्यानंद नामक एक ब्राह्मण रहता था। वह बहुत विद्वान और मधुरभाषी था। उसकी विद्वत्ता की ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। घमंड तो उसे छू तक नहीं गया था। इस ब्राह्मण का एक सहपाठी मित्र नित्यानंद था। नित्यानंद ने तंत्र विद्या में सिद्धि हासिल की हुई थी। सत्यानंद की तरह ही विद्वान था नित्यानंद। परंतु वह कटु वचन बोलता था। वह घमंडी और लालची भी था, इसीलिए लोग उसे एक ढोंगी ब्राह्मण मानते थे। लोग पूजापाठ करवाने के लिए सत्यानंद को ही अपने घर बुलवाते थे। उसे बहुत इज्जत-मान के साथ अच्छी दान-दक्षिणा भी मिल जाती थी।

नित्यानंद अपने मित्र सत्यानंद से ईर्ष्या करता था। नित्यानंद अक्सर अपने मित्र सत्यानंद के घर जाता था। एक दिन वह सत्यानंद के घर गया और बोला—"सत्यानंद तुमसे बढ़कर विद्वान हूं क्योंकि मेरे पास तो तंत्र शक्ति भी है। फिर भी लोग तुम्हें ही क्यों इतना सम्मान देते हैं ?"

सत्यानंद ने समझाते हुए कहा—"मित्रवर, विद्वत्ता के साथ-साथ नम्र स्वभाव होना भी जरूरी है। तुम निःस्वार्थ भाव से अपनी शक्ति का प्रयोग करके यदि लोगों का भला करो, तो लोग तुम्हें भी पूजने लगेंगे।" फिर हंसकर सत्यानंद बोला—"तब मुझे तो कोई पूछेगा भी नहीं। मुझे तो तंत्र विद्या का बिल्कुल ज्ञान नहीं है।"

नित्यानंद को उसकी बातें बिल्कुल अच्छी नहीं लगीं। वह बोला—"ऐसी बात नहीं है। लोगों को एक न एक दिन मेरी तंत्र विद्या का लोहा मानना ही पड़ेगा।" कहते हुए वह गुस्से से कांपता हुआ बोला—"सत्यानंद, मुझे तो लगता है कि तुम ही लोगों को मेरे विपरीत भड़काते हो। यह तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा।" कहते हुए वह सत्यानंद के घर से निकल पड़ा। नित्यानंद के जाने के बाद सत्यानंद की पत्नी, जो उनकी बातें सुन रही थी, बोली—"आप अपने इन मित्र का साथ छोड़ दें। मुझे इनके विचार अच्छे नहीं जान पड़ते।"

सत्यानंद हंसकर बोला—"नित्यानंद इस समय गुस्से में था, इसलिए वह इतना कह गया। वह मेरा मित्र है। तुम बेकार में चिंता मत करो।"

नित्यानंद की डाह दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। इसी डाह ने बढ़ते-बढ़ते प्रतिशोध का रूप ले लिया। अब वह सोचने लगा— 'जब तक सत्यानंद जीवित है, लोग मुझे नहीं पूछेंगे। इसलिए सत्यानंद को अपने रास्ते से हटाना ही पड़ेगा। इस कार्य के लिए मेरी तंत्र विद्या काम आएगी।'

एक दिन नित्यानंद सत्यानंद के घर गया। सत्यानंद घर पर नहीं था। उसने चौखट के पास एक गड्ढा खोदा। उसमें कुछ हड्डियां व सिंदूर दबा दिया। वह अभी गड्ढे को पूरी तरह भर ही रहा था कि सत्यानंद कहीं बाहर से आ गया। उसने पूछा—"मित्र ! तुम नीचे बैठकर क्या कर रहे हो ?"
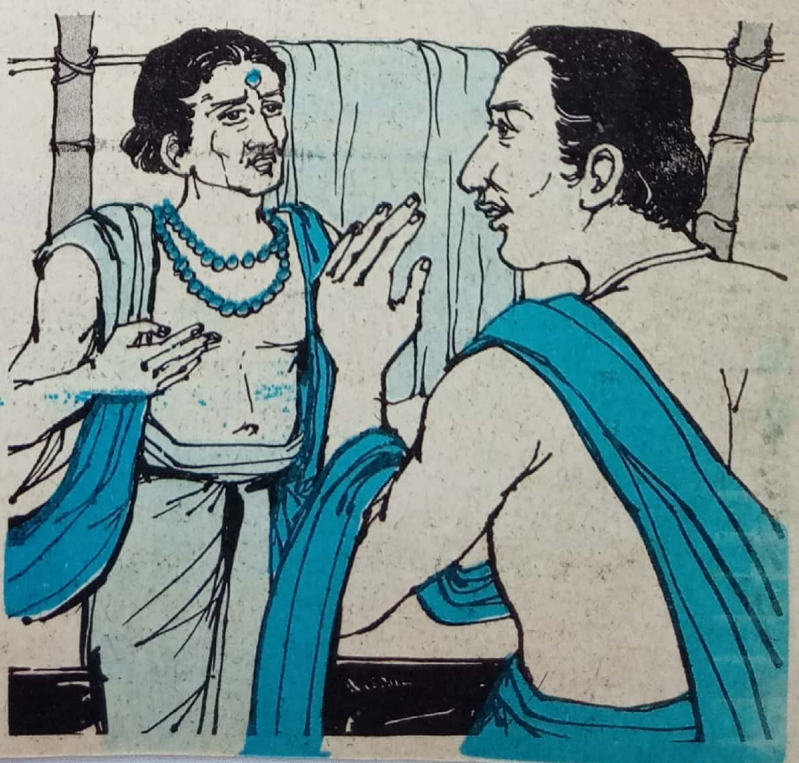
नित्यानंद हड़बड़ाकर बोला—"मेरे कुछ पैसे नीचे गिर गए थे। उन्हें ही उठा रहा हूं।"

सत्यानंद ने प्रेम भाव से अपने मित्र को घर के अंदर आने के लिए कहा। पर नित्यानंद बोला—"अभी जल्दी है। फिर कभी आऊंगा।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी।"— कहकर सत्यानंद जैसे ही अपने घर के अंदर जाने लगा नित्यानंद ने पीछे से कुछ मंत्र बोल, उसके ऊपर जल की बूंदें डाल दीं। तंत्र विद्या के प्रभाव से सत्यानंद आंगन में गिर पड़ा। उसके माथे पर दरवाजे की चौखट लगी और खून बहना शुरू हो गया। नित्यानंद अपनी तंत्र शक्ति को सफल होता देखकर तुरंत वहां से भाग गया।

सत्यानंद के गिरने की आवाज सुनकर उसकी पत्नी भागी-भागी बाहर आई। अपने पति को ऐसी हालत में देखकर तुरंत वैद्य को बुला लाई। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

ब्राह्मणी ने अन्न-जल त्याग दिया। सिपाहियों ने राजा चंद्रपीड़ को सूचना दी—"राजन! राज्य में विद्वान ब्राह्मण की मृत्यु हो गई है। उसकी पत्नी ने अन्न-जल त्याग दिया है। आज तीन दिन बीत गए हैं, पर वह कुछ भी खाने-पीने को तैयार नहीं है।"

चंद्रपीड़ ने कहा—"यह तो मेरे लिए बहुत लज्जाजनक बात है। मेरे राज्य में एक विधवा ब्राह्मणी तीन दिन से भूखी-प्यासी बैठी है।" फिर सिपाहियों को आदेश देते हुए कहा—"तुरंत जाओ और सम्मान सहित उस ब्राह्मणी को यहां ले आओ।"

ब्राह्मणी को राजा के सामने लाया गया। राजा ने ब्राह्मणी से पूछा—"माता, आपको क्या कष्ट है। आपने अन्न-जल क्यों त्याग दिया?"

राजा के पूछने पर ब्राह्मणी बोली—"राजन! सब समझते हैं कि मेरे पति की मृत्यु हुई है, पर मैं विश्वास के साथ कहती हूं कि उनकी हत्या हुई है।" यह सुनते ही सारा राज दरबार सन्न रह गया। लोग हैरान होकर ब्राह्मणी की ओर देखने लगे।

राजा ने ब्राह्मणी से पूछा—"क्या तुम्हारे पति का कोई शत्रु था?"

ब्राह्मणी बोली—"नहीं, वह तो बहुत शांतिप्रिय थे। उनमें न तो घमंड था, न ही किसी से द्वेषभाव रखते थे।"

राजा ने पूछा—"तो फिर तुम्हें किसी पर संदेह है।"

ब्राह्मणी ने कहा—"हां, राजन! मुझे उनके परममित्र विद्वान तांत्रिक नित्यानंद पर संदेह है।"

राजा ने कहा—"तुम किस आधार पर उनके मित्र पर ही यह संदेह कर रही हो।"

ब्राह्मणी बोली—"राजन! मेरे पति के माथे पर जो चोट लगी और उससे जो खून बहा, वह काले रंग का था। इससे सिद्ध होता है कि किसी ने तंत्र विद्या का प्रयोग मेरे पति पर किया था।"

राजा ने कहा—"मित्र होकर वह भला तुम्हारे पति की हत्या क्यों करेगा?"

ब्राह्मणी ने उत्तर दिया—"राजन, नित्यानंद अक्सर हमारे घर आता था। वह मेरे पति से बहस करता रहता था। उसकी बातों से लगता था कि वह मेरे पति से ईर्ष्या करता है। इसी ईर्ष्या के कारण उस धूर्त ब्राह्मण ने मेरे पति के प्राण लिए हैं।"

राजा ने तुरंत अपने कर्मचारियों को भेजकर उस तांत्रिक को बुलवा लिया। उसके आने पर राजा ने नित्यानंद से पूछा—"इस ब्राह्मणी ने तुम्हारे ऊपर अपने पति की हत्या का अभियोग लगाया है। तुम अपने को निर्दोष साबित करने के लिए क्या प्रमाण देते हो।"

नित्यानंद ने उत्तर दिया—"महाराज, यह अभियोग सरासर गलत है। मैंने इसके पति की हत्या नहीं की है। सारा नगर जानता है कि वह मेरा मित्र था। भला, मैं इसकी हत्या क्यों करने लगा? मेरे मित्र की मृत्यु तो सिर पर चौखट लगने से हुई थी।"

राजा ने कहा—"पर ब्राह्मणी के अनुसार तुमने तंत्र शक्ति से सत्यानंद की हत्या की है। इस बारे में तुम क्या कहना चाहते हो?"

सत्यानंद ने मुसकराते हुए कहा—"महाराज! आप कोई भी सबूत यदि मुझे दे दें, जिससे सिद्ध हो

कि मैंने अपने मित्र की हत्या की है, तो मैं अपराधी न होते हुए भी अपने आप को अपराधी मान लूंगा ।''

उसकी बात सुनकर राजा सोच में पड़ गया । उसने सभा स्थगित कर दी । सोचते-सोचते अपने महल की तरफ चल पड़ा । तांत्रिक ब्राह्मण और विधवा ब्राह्मणी की बातें सुनने के पश्चात उसे भी तांत्रिक ब्राह्मण अपराधी लग रहा था । पर कोई भी प्रत्यक्ष गवाह या सबूत न मिलने के कारण उसे दंड भी नहीं दे सकता था ।

राजा सोचने लगा—'नित्यानंद तो चेहरे से ही कुटिल और नीच बुद्धि वाला जान पड़ता था । बोलते-बोलते उसके चेहरे पर पसीने की बूंदें भी चमक पड़ती थीं, जबकि ब्राह्मणी अपनी बात विश्वास से कह रही थी । पर मैं तांत्रिक नित्यानंद को दोषी कैसे सिद्ध करूं ?

न्यायप्रिय राजा के सामने धर्मसंकट पैदा हो गया । उस समय उसे कुछ नहीं सूझ रहा था । वह तत्काल पूजा गृह में गया । बिना कुछ खाए-पिए भगवान से प्रार्थना करने लगा और कहने लगा—''प्रभो, कहते हैं राजा ईश्वर का प्रतिनिधि होता है । इस समय आपके प्रतिनिधि को कोई रास्ता नहीं सूझ रहा । आप ही मेरा मार्ग-दर्शन करें ।'' इस तरह विनती करते हुए राजा को नींद आ गई । उसी समय कमरा तेज रोशनी से जगमगा उठा । तभी एक आवाज गूंजी—राजन ! इस कलियुग में सत्य की खोज के लिए हठ करना उचित नहीं है । फिर भी तुम्हारे पुण्य कर्मों के प्रभाव के कारण एक बार दिव्य चमत्कार अवश्य होगा ।

अगले दिन राजा दरबार में गया । सबने देखा, राजा का चेहरा खुशी से चमक रहा था । राजा ने अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी—''दरबार के मध्य में स्थित चौक के चारों तरफ चावल का आटा फैला दो ।'' कर्मचारियों के ऐसा करते ही राजा ने तांत्रिक से कहा—''हे ब्राह्मण, अगर तुम अपने को निर्दोष सिद्ध करना चाहते हो, तो चौक के चारों तरफ तीन बार प्रदक्षिणा करो ।''

''जो आज्ञा महाराज ।''—कहकर नित्यानंद उस आटे के ऊपर चलने लगा । पर यह क्या ! दरबारियों ने देखा कि उस ब्राह्मण के पैरों के साथ-साथ दो और पैरों के चिह्न भी दिखाई दे रहे हैं । सब लोग अचरज में पड़ गए कि ब्राह्मण के साथ कौन चल रहा है ? पैरों के निशान तो चार हैं, पर ब्राह्मण एक है ।

तभी राजा ने ब्राह्मण को आदेश दिया—''रुको, तुम अपराधी साबित हो चुके हो ।''

ब्राह्मण एकदम हड़बड़ा गया । बोला—''कैसे महाराज ?''

राजा बोला— ''जरा पीछे मुड़कर देखो । तुम्हारे पैरों के पीछे-पीछे जो दूसरे दो पैरों के निशान दिखाई दे रहे हैं, वे ही तुम्हारे अपराध का सबूत हैं । तुमने ब्राह्मण की हत्या की है, यह उसी ब्रह्म हत्या के पैरों के निशान हैं ।''

तांत्रिक ने अपना सिर झुका लिया ।

राजा फिर बोला—''देखा, तांत्रिक नित्यानंद ! तुमने तो छिपकर अपराध कर लिया । पर जब भी तुम चलोगे, ब्रह्म हत्या की छाया तुम्हारे साथ-साथ चलेगी । तुम इससे बच नहीं पाओगे ।''

राजा ने तांत्रिक ब्राह्मण नित्यानंद को आजीवन कारावास की सजा सुनाते हुए कहा—''इसका अपराध मृत्यु दंड के योग्य है, क्योंकि इसने अपनी शक्ति का गलत प्रयोग किया है और एक निर्दोष ब्राह्मण श्रेष्ठ की हत्या की है । पर एक ब्राह्मण होने के नाते हम इसे मृत्यु दंड नहीं दे सकते ।''

राजा का फैसला सुनते ही विधवा ब्राह्मणी के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई । वह राजा का जयजयकार करने लगी । बोली—''जब तक आप जैसे न्याय करने वाले राजा विद्यमान हैं, तब तक हमें कलियुग होते हुए भी सतयुग का आभास होता रहेगा ।''

राजा ने अपने क्रर्मचारियों को विधवा ब्राह्मणी को आदर सहित उसके घर पहुंचाने की आज्ञा दी । और कहा—''जब तक यह जीवित रहें, इनका भरण-पोषण राजकोष के खर्च से किया जाए ।'' ●

चटपट

- लता—तुमने मेरी गुड़िया कहां छिपा दी ?
मां— वहीं जहां तुम ढूंढ़ न सको।
- एक यात्री— जल्दी से स्टेशन पहुंचाओ भाई ! कहीं गाड़ी छूट न जाए।
रिक्शा वाला— मगर स्टेशन तो नहीं छूट सकता साहब !
- अतुल— मैंने एक औरत को घोड़े से बात करते देखा और मैं समझ गया...
नरेश— वह तो होना ही था, तुम अब आदमी थोड़े ही रह गए हो।
- श्यामा— पेड़ पर चिड़िया बैठी है। मैं उसे पकड़ना चाहती हूं।
कमला— धीरे बोलो, चिड़िया ने सुन लिया, तो उड़ जाएगी।
- रजत—तुम इतनी देर से उछल क्यों रहे हो ?
संगीत– मेरी गेंद इसी तरह उछली थी और फिर गायब हो गई। मैं उछलकर देखना चाहता हूं, कहां गई !
- एक व्यक्ति—यह बत्तख कैसे उड़ेगी ? इसके पंख तो बुरी तरह भीग गए हैं।
दूसरा व्यक्ति— इसे हमारी तरह घर जाने की जल्दी नहीं है। यह धूप निकलने का इंतजार कर सकती है।
- चुन्नू—इतना सारा हलवा, इतनी जल्दी कैसे खत्म हो गया ?
मां— यह सवाल तो मुझे तुमसे पूछना चाहिए।
- एक बूढ़ा—यह बस कल शाम से उसी पेड़ के नीचे खड़ी है।
दूसरा बूढ़ा— क्या तुम भी वहीं खड़े हो कल शाम से ?
- लिफ्टमैन—एक आदमी सबसे ऊपर की छत पर गया और फिर वापस नहीं लौटा !
दूसरा आदमी— तो क्या हुआ ! ऊपर चला गया होगा।
- पहलवान— है कोई माई का लाल, जो मुझे छू भी सके।
एक आदमी— तेल और मिट्टी सने शरीर को कौन छूना चाहेगा भाई !
- रामसिंह— जब गाड़ी पुल से गुजरती है, तो मेरा कलेजा कांपने लगता है।
जीतन— कलेजा ही नहीं, इतना बड़ा लोहे का पुल भी कांपने लगता है।
- एक यात्री— बाप रे, यह बस है या आफत। कितनी खड़-खड़ कर रही है।
दूसरा यात्री— और आप भी बस से कम नहीं, घंटे भर से लगातार, बड़-बड़ कर रहे हैं।
- पिता— चुन्नू, आज मैं तुम्हें छोड़ूंगा नहीं। जाओ, मेरी छड़ी लेकर आओ।
चुन्नू— पिता जी, क्षमा करें। आज मैं आपकी आज्ञा पालन में असमर्थ हूं।
- केशव— देखो, यह गिलहरी कितनी देर से पेड़ के नीचे चुप बैठी है।
रमन— यार, गिलहरी से ही सीख लो कुछ।

तेनालीराम २६९

केवल दस दस

एक बार विजयनगर में भयानक बरसात हुई। सब ओर जल-जल हो गया। बाढ़ ने फसलें नष्ट कर डालीं। गांव के गांव तबाह हो गए।

राजा कृष्णदेव राय ने आदेश दिया—"राज्य भर के किसानों की सहायंता की जाए। जो किसान जितना लगान देता है, उससे दुगनी रकम उसे तुरंत दी जाए।"

राजा के आदेश पर तुरंत अमल हुआ। राजकोष खाली होने लगा। हर दिन राजा मंत्री से किसानों की हालत के बारे में पूछते। 'किसान आपका जय-जयकार कर रहे हैं।'—उन्हें उत्तर मिलता।

इसी बीच कुछ गांवों के लोग राजा से मिलने आए। 'महाराजा बाढ़ की समस्याओं में व्यस्त हैं।'—कहलवा कर मंत्री ने किसी को भी राजा से नहीं मिलने दिया।

उस दिन राजा बड़े प्रसन्न थे। राज्य के लगभग सभी गांवों में सहायता राशि बांटी जा चुकी थी। मंत्री गांव वालों के जय जयकार की बातें बढ़ा-चढ़ाकर सुना रहा था, तभी तेनालीराम बोला—"महाराज, गांव के कुछ गायकों ने आपकी इस उदारता पर कई गीत लिखे हैं। गीत वे आपको सुनाना चाहते हैं।"

राजा ने सहर्ष अनुमति दे दी। अगले दिन इकतारा ले, कुछ ग्रामीण गायक दरबार में आए। राजा कृष्ण-देव राय को प्रणाम कर गीत सुनाने लगे कि कैसी बाढ़ आई ? कैसे गांव के गांव बहे और कैसे महाराजा ने सहायता भिजवाई।

मगर यह क्या ? गीत सुनते-सुनते राजा की त्यौरियां चढ़ गईं। गीतों में गायकों ने बताया था कि इतनी भयानक बाढ़ आने पर भी राजा ने सहायता के तौर पर केवल दस-दस स्वर्ण मुद्राएं भिजवाईं।

मान-सम्मान पा गायक चले गए, तो राजा ने पूरे मामले की छानबीन कराई। पता चला कि सहायता की आधी से अधिक राशि मंत्री और उसके चहेतों ने बीच ही में हड़प ली थी। उन सभी को हड़पी हुई पूरी रकम तुरंत वापस करने और उन्हें एक महीने वेतन न देने का दंड दिया। फिर किसानों को पूरी सहायता देने का भार तेनालीराम को सौंप दिया। फिर राजा ने पूछा—"तेनालीराम, तुम्हें इस घोटाले का पहले से पता था, तो तुमने खुद मुझे क्यों नहीं बताया ?"

तेनालीराम हाथ जोड़कर बोला—"जिस पर गुजरे, वही कहे, तो वजन ज्यादा पड़ता है अन्नदाता।" सुनकर राजा मुसकराने लगे।
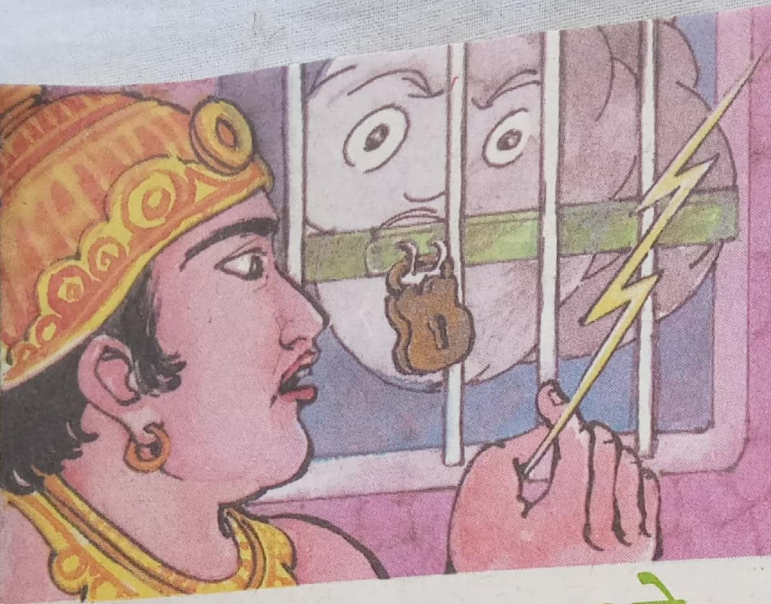
बादल आओ

—प्रभाशंकर उपाध्याय 'प्रभा'

नीले रंग के उस सुंदर मोर का नाम था मोरिया। मेघों का भानजा था वह। मोरिया जब भी सिर उठाकर अपने मामाओं को पुकारता, वे दौड़े चले आते। उन्हें देख, मोरिया खुशी से पंख फैलाकर नाचता। उसका नाच देख, मेघ ठगे रह जाते। उनकी आंखों से स्नेह के जो आंसू गिरते, धरती पर पहुंचते ही वे बूंदें बन जाते।

सारा गिरासिया कबीला मोरिया का बड़ा ध्यान रखता। उसकी वजह से गांव में कभी अकाल नहीं पड़ा था। खूब बरसात होती थी।

एक दिन मोरिया ने मेघ से हठ किया कि वह उनके संग 'चौगान-बटा' खेलेगा। यह हाकी जैसा खेल होता है। दोनों तरफ एक कप्तान और बारह खिलाड़ी होते हैं। खिलाड़ियों के हाथ में हाकी की तरह मुड़ी हुई एक छड़ी होती है।

लाड़ले भानजे की जिद मेघ मामा टाल न सके। उन्होंने अपने राजा इंद्र को कप्तान बनाया। इंद्र मेघ खिलाड़ियों के संग मैदान में उतर आए। उनके पास सोने की छड़ी थी।

मोरिया ने बारह गिरासिया नवयुवकों को चुना। उनके पास चांदी की छड़ी थी। हीरे की गेंद से खेल प्रारंभ हुआ। भैंरो बाबा खेल के निर्णायक थे। गिरासियों की कुल देवी अम्बा और अन्य देवता भी खेल देखने आए।

मोरिया और उसके साथी बहुत अच्छा खेले। एक-एक कर, बारह गोल उन्होंने मेघराज इंद्र की टीम पर ठोक दिए। उस हार से इंद्र को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने आरोप लगाया कि मेघों ने जानबूझकर अपने भानजे को जिताया है।

इंद्र ने मेघों को कैद कर दिया। मेघ धरती पर नहीं आए, तो बरसात भी नहीं हुई। सारे संसार में अकाल पड़ गया। वह अकाल बारह वर्ष तक चला। कुछ खाने को नहीं रह गया था। बहुत से लोग भूखों मर गए। सारे गिरासिया गांव छोड़कर कहीं दूर चले गए। लेकिन मोरिया कहीं नहीं गया। उसे दुःख था कि अकाल का कारण वह स्वयं है। वह भूखा-प्यासा वहीं पड़ा रहा और मन ही मन गिरासियों की कुल देवी अम्बा का जाप करता रहा।

आखिरकार अम्बा देवी प्रसन्न हुईं। उन्होंने मोरिया को वर दिया—"तुम सूर्य उगने से पहले वह सफेद कंकर चुनकर खा लो। तुम्हारी भूख मिट जाएगी। और सुबह की ताजी हवा का सेवन करने से तुम्हें प्यास भी नहीं लगेगी।"

मोरिया ने वैसा ही किया। उसकी भूख-प्यास मिट गई। वह मगन हो नाचने लगा। तभी उसे गिरासियों की दुर्दशा का ध्यान आया, तो वह रोने लगा।

राजा इंद्र ने उस गांव में आकर देखा। गांव सूना पड़ा था और मोरिया रो रहा था। इंद्र को बड़ी तसल्ली मिली। यह देखकर वरुण ने इंद्र को समझाया— खेल-खेल में गुस्सा करना उचित नहीं। सारा संसार अकाल से परेशान हैं। लोग तुम्हारी बुराई कर रहे हैं। देवता को यह शोभा नहीं देता।"

बात इंद्र को समझ में आ गई। उन्होंने मेघों को कैद से छुटकारा दे दिया। आजाद होते ही मेघ भागकर अपने भानजे का हाल जानने आए। मामाओं को देखकर मोरिया नाचने और मेओ...मेओ...पुकारने लगा। यह सुनकर मेघों की रुलाई फूट पड़ी। बस मूसलाधार बरसात होने लगी। वर्षा हुई, तो सारे गिरासिया अपने गांव लौट आए। ●

बड़ा शेर

—डा. वीरेन्द्र शर्मा

बहुत पुरानी बात है । किसी जंगल में एक शेर रहता था । एक दिन एक सियार उसके पास आया । उसने अपनी बुद्धिमानी से शेर का दिल जीत लिया । शेर उस सियार को बहुत चाहने लगा । धीरे-धीरे वे दोनों अच्छे मित्र बन गए ।

ज्यों-ज्यों समय बीतने लगा, सियार में अभिमान आने लगा । वह सोचने लगा—'जब यह शेर मेरा इतना आदर करता है, तो निश्चय ही मैं इससे अधिक बुद्धिमान हूं । भला मैं इससे किस बात में कम हूं !' इसलिए एक दिन उसने शेर से कहा—''देखो भाई ! जब हम मित्र हैं, तो मुझे आप सियार कहकर न पुकारा करें ।''

शेर ने बड़ी शिष्टता से पूछा—''तो फिर मैं तुम्हें क्या कहकर पुकारा करूं ?''

सियार बोला—''मैं क्या बताऊं । आप ही स्वयं सोचकर मेरा कोई अच्छा नाम रख लें । हो सके, तो मुझे बुद्धिमान सियार कहकर पुकारा करें ।'' शेर ने उसकी बात मान ली ।

शेर बहुत दिनों तक सियार को बुद्धिमान सियार कहकर पुकारता रहा । किंतु इससे सियार संतुष्ट नहीं हुआ । एक दिन उसने शेर से फिर कहा—''मुझे आप बुद्धिमान सियार कहकर पुकारते हैं, लेकिन न मालूम क्यों, यह मुझे अच्छा नहीं लगता ।''

शेर ने कहा—''फिर मैं तुम्हें क्या कहकर पुकारा करूं ?''

सियार ने बड़े अहंकार से कहा—''आप मुझे छोटा शेर कहकर पुकारा करें ।''

कुछ दिनों बाद सियार को छोटा शेर नाम से भी चिढ़ होने लगी । वह सोचने लगा—'भला मैं छोटा क्यों ? छोटा और बड़ा बुद्धि से होता है, शरीर से नहीं ।' एक दिन उसने शेर से कहा—''काफी दिनों से आप मुझे छोटा शेर कहते हैं । हर चीज में परिवर्तन होता है । नाम भी बदलते रहना चाहिए । अब आप मेरा यह नाम बदल दें ।''

शेर को आश्चर्य हुआ । लेकिन चूंकि सियार को वह बहुत चाहता था, इसीलिए उसने पूछा—''फिर बताओ, मैं तुम्हें क्या नया नाम दूं ?''

सियार ने उत्तर दिया—''आप मुझे बड़ा शेर कहकर पुकारा करें । आप इस जंगल के राजा हैं और आपका मित्र मैं बड़ा शेर हूं ।''

शेर को यह अच्छा तो नहीं लगा, लेकिन उसने यह कहकर टाल दिया "मैं तुम्हें बड़ा शेर तभी कहूंगा, जब तुम शेरों की तरह दहाड़ने लगोगे, जब तुम्हारी दहाड़ से पूरा जंगल गूंजने लगेगा ।"

सियार ने कहा—''यह कौन सी बड़ी बात है ! मैं अभी यह काम कर देता हूं ।''

उसी समय जंगल में किसी जगह एक मतवाला जंगली हाथी चिंघाड़ रहा था । सियार भागता हुआ वहीं पहुंच गया । वह उस हाथी के पीछे जाकर खड़ा हो गया । उसने भी जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया । चिंघाड़ते हुए हाथी ने जब सियार को पीछे खड़े देखा, तो अपनी टांग से उछालकर उसे बहुत दूर फेंक दिया । इसके बाद सियार अपने मित्र शेर के पास कभी नहीं आया । ●

दंड मिलेगा

—कुलदीप कपूर

बहुत समय पहले की बात है। कोरिया के एक गांव में किम नाम का एक लड़का रहा करता था। उसके माता-पिता बचपन में ही चल बसे थे। वह घरेलू नौकर के रूप में उसी गांव के एक साहूकार के यहां काम करता था। साहूकार उसकी ईमानदारी और मेहनत से बड़ा प्रभावित था।

एक दिन वह जंगल में लकड़ी कांटने गया। सूरज छिपने तक अपने काम में लगा रहा। लेकिन जब वह लकड़ी का बोझ लादकर चला, तो रास्ता भटक गया। मजबूर होकर उसने एक खोह में रात काटने का निश्चय किया। सुनसान अंधेरे में वहां उसे भय लग रहा था। आधी रात तक उसे नींद नहीं आई। इस बीच उसे किसी के बात करने की आवाज सुनाई पड़ी। उसमें से एक कह रहा था—"आज की क्या खबर है?"

दूसरा बोला—"क्या बताऊं? मनुष्य कितने मूर्ख होते हैं। तुम पास वाले गांव को जानते हो। वहां के लोगों को पीने का पानी लाने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है। वे नहीं जानते, वहीं के सबसे बड़े जामुन के पेड़ के नीचे एक कुआं है, जहां पानी का अथाह भंडार है।"

"तुम बिलकुल ठीक कहते हो। मनुष्य चालाक दिखते हैं, लेकिन आसपास की खबर नहीं रखते। तुम उस गरीब बूढ़े को जानते हो, जो अकेला रहता है और भूखों मर रहा है। उसे यह नहीं मालूम कि उसके घर की रसोई में चूल्हे के नीचे एक हांडी में अशर्फियां गड़ी हुई हैं।"—पहले ने कहा।

"हां, हां, तुम्हारी बात बिलकुल सच है। मैं अभी-अभी एक अमीर आदमी के घर के पास से गुजरा, तो मालूम हुआ कि उसकी लड़की गंभीर रूप से बीमार है। दवा और डाक्टरों पर बहुत सारा धन उसका पिता खर्च कर रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि
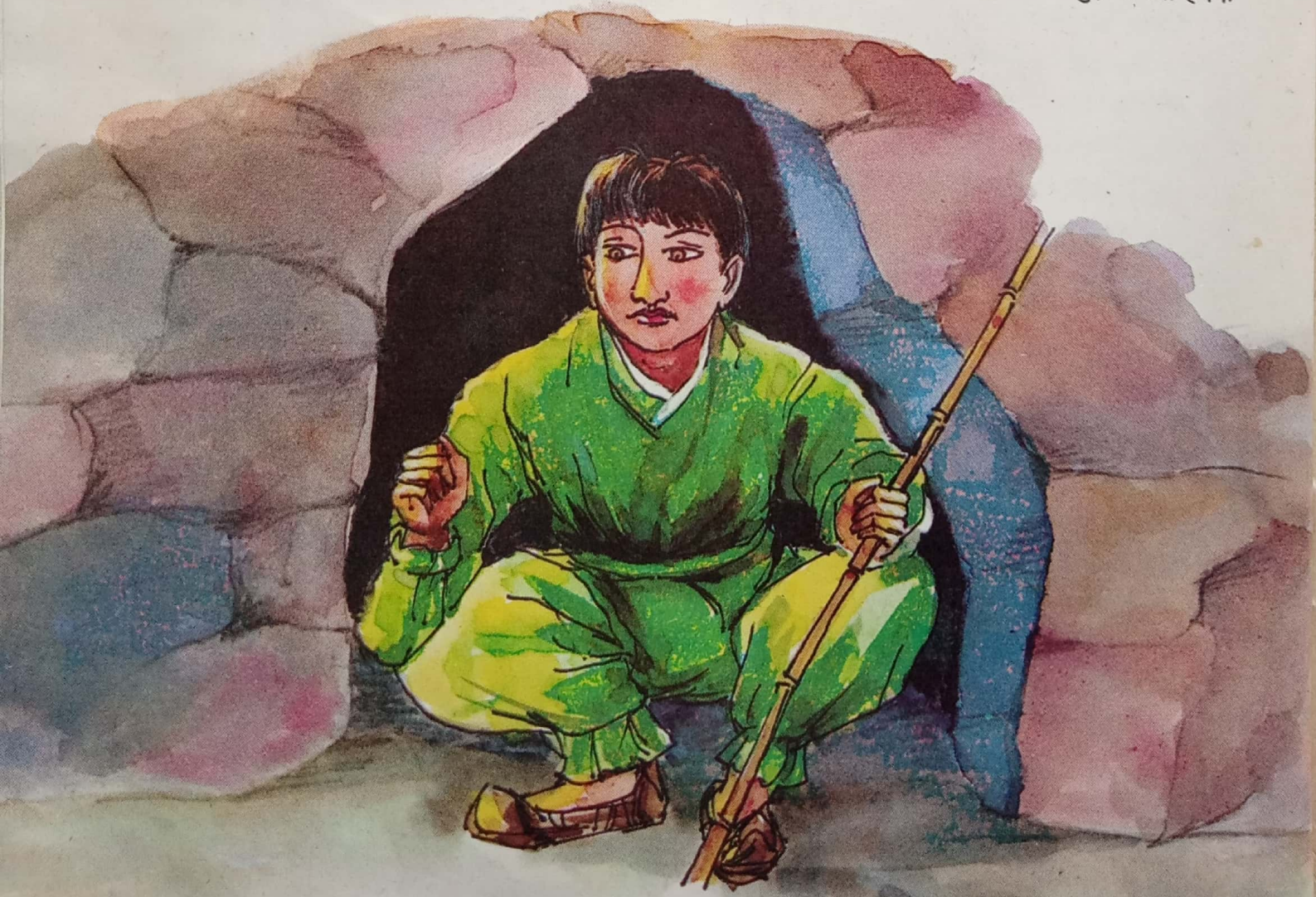
यह सब बेकार है। असल में उसी के आंगन में रखे लकड़ी के लट्ठों के पीछे एक खतरनाक जोंक छिपा है। जोंक के मुंह से छोड़ी गई विषैली हवा लड़की को लग गई है। उसी से वह बीमार है। जब तक वहां जोंक है, बीमारी ठीक नहीं होगी।''—दूसरा बोला।

किम कान लगाकर ये बातें सुन रहा था। उसे लगा कि यह बातचीत प्रेत कर रहे हैं। वर्ना इस निर्जन में कौन करेगा ऐसी बातें? थोड़ी देर बाद वहां सन्नाटा छा गया। वह समझ गया कि प्रेत अब चले गए हैं। सुबह होने में अभी देर थी।

जैसे ही सुबह हुई, वह बोझा लादे घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसने देखा, गांव की औरतें अपने सिरों पर घड़ा रखे पानी भरने जा रही हैं। उसे प्रेत के वे शब्द याद आ गए। घर पहुंचते ही उसने गांव वालों को पानी की बात बताई। वह गांव के जामुन के पेड़ के नीचे की धरती खोदने लगा। कुछ देर के बाद उसे गहराई में पानी दिखाई दिया। इस बीच यह खबर पूरे गांव में फैल गई। गांव वाले भी खुदाई में उसका हाथ बंटाने लगे। अंत में उन्हें पानी मिल गया।

किम ने सोचा—'प्रेतों की एक बात तो सच हो गई।' उसे पूरा विश्वास हो गया कि बाकी दोनों बातें भी सही होंगी। वह सीधा उस बीमार के घर पहुंचा। दरवाजा खटखटाया। कुछ देर में नर-कंकाल के समान एक बीमार व्यक्ति खांसता हुआ आया। किम ने कहा कि वह उसकी मदद करने आया है। यह कहने के बाद उसने रसोई के चूल्हे के पास खुदाई करनी शुरू कर दी। चार-पांच फुट की गहराई के बाद एक वस्तु दिखाई दी, जिसे उसने बड़ी सावधानी से खोदा। सचमुच वह मिट्टी की हांडी थी। उसे उसने बाहर निकाला। बूढ़े ने देखा, वह अशर्फियों से भरी थी। उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसने बड़ी कृतज्ञता से किम को देखा। कहा—''तुम इसमें से आधी अशर्फियां ले लो।'' लेकिन किम ने कुछ भी लेने से इंकार कर दिया।

इसके बाद किम अमीर के घर पहुंचा। उसकी लड़की जीवन और मौत से संघर्ष कर रही थी। किम
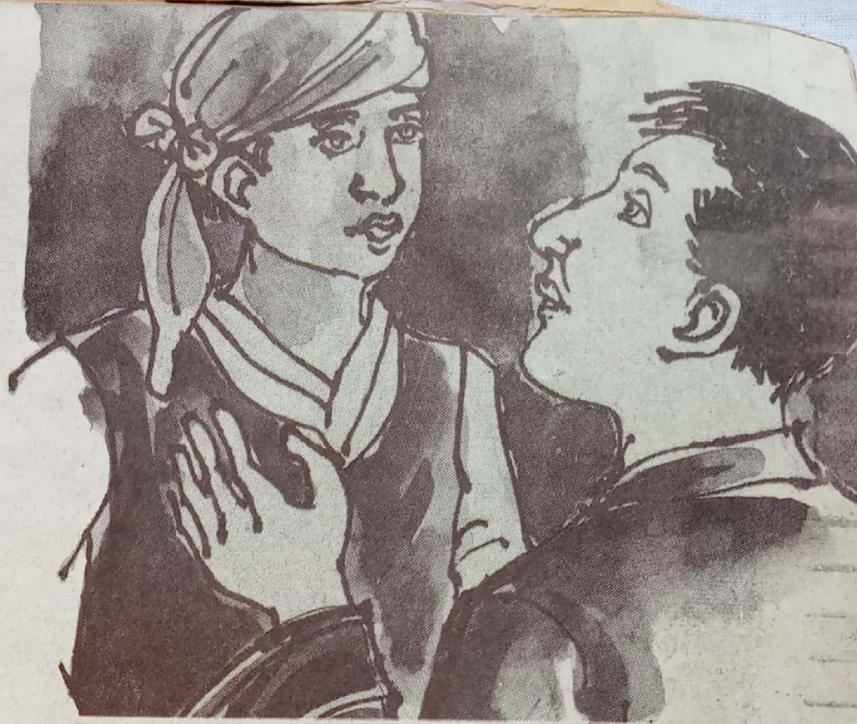
ने लड़की के पिता से कहा—''मैं इसकी जान बचाऊंगा।''

पिता ने सहर्ष स्वीकृति दे दी। किम ने एक बहुत बड़ा बर्तन मंगाया। उसमें तेल भरा और गर्म कर लिया। फिर लकड़ी के लट्ठों के पीछे उस काले रंग के जोंक को लोहे की संडसी से पकड़ा। गर्म तेल में डाल दिया और जैसे-जैसे वह छटपटाता, लड़की चीखती और वैसे-वैसे उसकी बीमारी दूर होती जाती। जैसे ही जोंक मरा, लड़की पूरी तरह स्वस्थ हो उठी। यह देखकर उसका पिता बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पुरस्कार के रूप में किम को धन देना चाहा, लेकिन किम ने धन नहीं लिया। वह घर लौट आया।

किम की चर्चा दूर-दूर के गांवों तक फैल गई थी। उससे मिलने बहुत से लोग आने लगे। इस बीच उसके एक मित्र चांग ने किम की प्रशंसा सुनी, तो वह भी उससे मिलने गया। किम ने चांग को सब कुछ सच-सच बता दिया। चांग ने सोचा— वह भी रात में छिपकर प्रेतों की बातचीत सुनेगा, जिससे उसका भी नाम हो जाएगा।

चांग उसी स्थान पर जाकर छिप गया। आधी रात को उसे दोनों प्रेतों की बातचीत सुनाई पड़ी। एक ने कहा—''तुमने देखा, गरीब किम का नाम गांव वालों के मुंह पर है, उसने हमारी सब बात सुन ली थी। लेकिन वह लड़का बड़ा नेक है।''

"तुम बिलकुल ठीक कहते हो, ईमानदार और परिश्रमी भी है। लेकिन उसका दोस्त बहुत लालची है, उसे नहीं मालूम कि उसका खुद का भाग्य कैसा है। सच वह कितना मूर्ख है"—दूसरे प्रेत ने कहा।

"क्या तुम यह कह रहे हो कि उसके घर के पूर्वी भाग वाले खम्भे के नीचे तो अपार धन गड़ा है?"—पहला बोला।

—"हां, हां...यही बात है।" यह कहकर दोनों प्रेत ठहाका लगाकर हंसने लगे। चांग यह सुनकर अपने को रोक नहीं सका। प्रेतों के जाने के बाद वह घर पहुंचा। उसने आधी रात को ही वह जगह खोदनी शुरू कर दी। शोर-गुल सुनकर उसके पिता बाहर निकल आए। आश्चर्य से पूछने लगे—"तुम क्या कर रहे हो?" इस पर चांग ने कहा—"तुम देखते जाओ। हमारा भाग्य बदलने वाला है।"

थोड़ी देर में खोदते-खोदते जब वह गहराई में पहुंचा, तो उसे लगा कि नीचे कोई चीज टकरा रही है। उसने फावड़े से जब उस पत्थर को खींचा, तो पूरा खम्भा चरमराता हुआ गिर पड़ा। उसी के नीचे वह दब गया।

दूसरे दिन दोनों प्रेत फिर अपने नियत स्थान पर मिले। एक ने कहा—"मनुष्य कितना मूर्ख होता है कि बिना कुछ समझे, लालच में अपनी जान गंवा देता है।" दूसरे ने उत्तर में कहा—"उस गरीब लड़के किम ने निःस्वार्थ सेवा की। उसने अमीर आदमी से धन भी नहीं लिया।"

—"हां, वह लड़का भला है। लेकिन हम लोगों की बात चोरी से सुनी है। उससे पूछना चाहिए कि उसने ऐसा क्यों किया?"

दूसरे प्रेत ने कहा—"कल वह लकड़ी काटने आएगा तो उसे हम लोग पकड़ लेंगे।"

सुबह किम लकड़ी काटने फिर उसी जंगल में गया। देर होने के कारण वह उसी स्थान पर जाकर लेट गया। उसे प्रेतों की बातचीत सुनाई दी। एक ने कहा—"हम लोगों की बात जिसने सुनी, यदि वह सामने आ जाए, तो उसे हम लोग भी पुरस्कार देंगे। यदि सामने नहीं आता, तो फिर वह यहीं मरा हुआ पड़ा रहेगा।"

किम यह सुनकर डर गया। फिर उसने सोचा—'डरने से काम बिगड़ जाएगा।' इसलिए साहस करके वह आगे बढ़ा। बोला—"मैं आ गया हूं। मेरे लिए क्या आज्ञा है?"

प्रेत ने कहा—"तुमने छिपकर हमारी बातें सुनी हैं। इसके लिए तुम्हें दंड देंगे।"

किम ने कहा—"मैं दंड स्वीकार करने के लिए तैयार हूं, लेकिन इससे पहले मेरा निवेदन भी सुन लें।"

एक प्रेत ने कहा—"ठीक है। तुम क्या कहना चाहते हो?"

किम बोला—"आपकी बातों का मतलब यही था कि जो चीज सुलभ हो सकती है, उसे न लेने वाला मनुष्य मूर्ख होता है। मैंने कुआं खोदा, तो गांव के लोगों को पानी मिल गया। गरीब-बेसहारे बूढ़े को अशर्फियां मिल गईं और अमीर लड़की स्वस्थ हो गई। यह सब तो मैंने अपने लिए नहीं किया। मैंने तो एक तरह आपका ही काम किया है। अब आप लोग मुझे जो दंड देना चाहें, दे सकते हैं।"

यह सुनकर दोनों प्रेत थोड़ी देर चुप रहे। उन्होंने आपस में कहा कि लड़का तो सही बात कह रहा है। फिर एक प्रेत बोला—"किम! तुम्हारी निःस्वार्थ सेवा से हम खुश हैं। तुम कुछ मांगो।"

किम बोला—"मुझे अपने लिए तो कुछ चाहिए नहीं। हां, गांव में एक मशहूर वैद्य हैं, लेकिन वृद्धावस्था के कारण उनकी आंखें कमजोर हो गई हैं। इसलिए गांव वालों को दवाएं देने में उन्हें परेशानी हो गई है। यदि आप सचमुच प्रसन्न हैं, तो वैद्य जी की आंखें ठीक कर दें।"

यह सुनते ही प्रेत बड़े खुश हुए। उन्होंने कहा—"जाओ, ऐसा ही होगा।" यह कहकर दोनों प्रेत गायब हो गए। किम की खुशी का ठिकाना नहीं था। वह सीधे वैद्य के घर पहुंचा, तो देखा वैद्य जी की आंखें ठीक हो गई थीं। ●

लाओ दूध

—सुनीता कट्टी

सैकड़ों साल पुरानी बात है। तब दक्षिण भारत दक्षिणापथ के नाम से जाना जाता था। दक्षिणापथ में एक नदी बहती थी, जिसका नाम था पम्ब। पम्ब एक घने जंगल के बीचों-बीच गुजरती थी। दोनों किनारों पर खड़े थे लताओं से लिपटे, घनी छांह वाले लम्बे-लम्बे पेड़। सांझ घिरते ही जंगल का कोना-कोना जंगली जानवरों की गुर्राहटों से गूंज उठता, पर सूरज उगते ही खरगोश, हिरण, बंदरों की उछल-कूद और चहल-पहल शुरू हो जाती।

एक दिन तड़के ही जंगल की शांति भंग हो गई। चारों ओर भगदड़ मची थी। जंगली जानवर इधर-उधर भाग रहे थे। दरअसल पम्ब के जंगल में पंडाल राज्य के राजा शिकार खेलने आए थे। घोड़े को खूब तेज दौड़ाया उन्होंने। दो हिरन और एक जंगली सूअर को मार डाला। दोपहर तक इस दौड़-धूप से वह निढाल हो गए। तब सुस्ताने पम्ब नदी के किनारे आ गए।

थोड़ी ही देर लेटे होंगे कि उनके कानों में छोटे बच्चे के किलकने की आवाज आई। इतने घने जंगल में बच्चे की आवाज ! उनके कान खड़े हो गए। धीमे-से उठ, वह उसी दिशा में बढ़ने लगे। एक विशाल बरगद के नीचे उन्होंने जो दृश्य देखा, उससे उन्हें रोमांच हो आया। पंडालनरेश ने देखा कि कमलपत्तों की नाजुक शैया पर एक नन्हा-सा बच्चा लेटा है। अपने कोमल हाथ-पांवों को हिलाते हुए किलक रहा है। उसके गले में तेजस्वी मणि बंधी हुई थी। बालक को देखते ही राजा की बांहें अनायास ही उसकी तरफ बढ़ गईं। शिशु को गले से लगाकर उन्हें विचित्र सुख मिला।

पंडालराज राजसी ठाट-बाट से नन्हे शिशु को अपने महल ले गए। भगवान की देन समझ, उन्होंने उसे बड़े प्यार से पाला। उसके गले में चमकती मणि

के कारण राजा ने उसका नाम रखा मणिकंठन।

मणिकंठन न केवल देखने में सुंदर था, उसकी वाणी में भी अजीब मिठास थी। छोटे-बड़े सभी से वह प्यार से मिलता। इसी से वह सभी को प्रिय था। धीरे-धीरे वह सभी शास्त्रों एवं कलाओं में निपुण हो गया। युद्धकला में तो उसे खास रुचि थी। अधिक निपुणता हासिल करने के लिए वह अलेप्पी के पास चीरपंचिर गया। अभी उसकी शिक्षा पूरी भी नहीं हुई थी कि उसे खबर मिली कि पंडालनरेश पर पड़ोसी राजा ने धावा बोल दिया है। खबर मिलते ही उसने पंडाल राज्य की तरफ कूच कर दिया। वहां जाकर उसने अपनी युद्ध कला का ऐसा प्रदर्शन किया कि दुश्मन के छक्के छूट गए। लूटपाट पर उतारू शत्रु राजा को लाचार होकर उसके सामने घुटने टेकने पड़े।

दिन बीतते गए। अब पंडालराज बुढ़ापे की तरफ बढ़ रहे थे। उन्होंने राज्य की भलाई के लिए राजपद मणिकंठन को देने की सोची। शीघ्र ही यह घोषणा भी करवा दी।

यह सुनते ही मंत्री की छाती पर सांप लोटने लगे। वह पंडालराज के बाद खुद राजा बनने के ख्वाब देख रहा था। कुछ सोचकर वह रानी के पास गया। बोला—"रानी जी, अनर्थ हो गया।

मणिकंठन को प्यार से पालना तो ठीक था। पर आज महाराज राज्य भी उसी के नाम कर रहे हैं। आपके इतने सारे सगे-सम्बंधियों के होते, उस पराए लड़के को राजगद्दी देने की बात महाराज सोच भी कैसे सकते हैं? राजसिंहासन पर तो उसी को बैठना चाहिए, जिसकी रगों में राजघराने का खून हो।''

रानी मंत्री की बातों में आ गई। एक दिन उसने चुपके से मणिकंठन को जहर दे दिया। पर मणिकंठन पर उसका कोई असर नहीं हुआ। रानी और चिढ़ गई। अंत में मंत्री और रानी ने मिलकर एक और उपाय सोचा। एक दिन रानी की तबीयत अचानक बिगड़ गई। जोर का सिरदर्द शुरू हुआ। राजवैद्यों ने काफी इलाज किए, पर सब बेकार। राजवैद्य बोले—''कोई पम्बारण्य जाकर शेरनी का दूध ले आए, तो मैं महारानी का सिरदर्द फौरन दूर कर दूं। पर अगर दूध न मिला, तो महारानी को बचाना मुश्किल है।''

राजवैद्य की बात पर नगर भर में खलबली मच गई। कौन जाएगा पम्बारण्य में, खूंखार शेरों से उलझने! सभी को जान प्यारी थी। आखिर महारानी कराहते हुए महाराज से बोली—''महाराज, मणिकंठन इतना शूरवीर है। क्या वह अपनी मां के लिए शेरनी का दूध नहीं ला सकता?''

''क्यों नहीं मां ? जरूर ला सकता है और वह लाएगा भी।.... पिता जी, मुझे आज्ञा दीजिए!''—मणिकंठन ने पंडालराज के पांवों पर मस्तक रख, पम्बारण्य जाने की अनुमति मांगी।

तभी मणिकंठन के मस्तक पर गिरे दो गरम आंसू। राजा को दोनों ही प्रिय थे। महारानी भी और मणिकंठन भी। एक की खातिर दूसरे को मौत के मुंह में डालना उन्हें अनुचित लग रहा था।

''पिताजी, अनुमति दीजिए!''—मणिकंठन ने फिर एक बार अनुमति मांगी, तो कलेजे पर पत्थर रख राजा ने उसे पम्बारण्य जाने की अनुमति दी। जाते-जाते राजा ने उसके हाथ में 'एरुमडि' (खाने की सामग्री से भरी पोटली) थमा दी। मणिकंठन तेजी से पम्बारण्य की ओर बढ़ा।

रास्ते में अनेक तरह की कठिनाइयां आईं। लेकिन मणिकंठन को कोई डिगा नहीं सका। वह तूफान की तरह अपने रास्ते पर बढ़ा जा रहा था। जैसे ही मणिकंठन जंगल में गया, प्रकाश-सा छा गया। मणिकंठन का तेज देख, सभी जानवर नतमस्तक थे। मणिकंठन शेरों की गुफा की ओर बढ़ा जा रहा था। आश्चर्य! जैसे ही मणिकंठन निकट पहुंचा, शेर, शेरनियां और उनके बच्चे बाहर आ गए। सभी ने सिर झुकाकर मणिकंठन को प्रणाम किया।

मणिकंठन उछलकर एक शेर पर सवार हो गया। दोनों हाथों से दो शेरनियों को पकड़ा और चल पड़ा महल की ओर। बाकी शेर-शेरनियां भी उसके पीछे-पीछे सिर झुकाए चल रहे थे।

जैसे ही यह काफिला पंडलराज के महल तक आया, सब ओर तहलका मच गया। दूर-दूर तक शेरों के गरजने की आवाज सुनाई दे रही थी। राजा-रानी, मंत्री और पुरोहित सभी दौड़े-दौड़े बाहर आए। मणिकंठन ने पुरोहित की ओर इशारा किया—''मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है। शेरनियों को ले आया। अब आप स्वयं इनका दूध दुह लें।''

सुनते ही पुरोहित कांपने लगा। मंत्री की भी घिग्गी बंध गई। दोनों हाथ जोड़कर बोले—''हमें माफ कर दीजिए। राजगद्दी के लालच के कारण हमने आपके खिलाफ षड्यंत्र किया।''

रानी भी थर-थर कांप रही थी। बोली—''मैंने झूठ बोला था बेटे। मैं लालच में अंधी हो गई थी। तुम्हें राजपाट न मिले, इसीलिए मंत्री के कहने में आकर मैंने बीमारी का बहाना बनाया था। तुम इतने योग्य पुत्र हो। फिर भी मैंने अपने ही बेटे के साथ कपट व्यवहार किया। धिक्कार है मुझे!''

मणिकंठन बोला—''मां, राजपाट मुझे नहीं चाहिए। मेरा कोई स्वार्थ नहीं है। केवल दुष्टों को सबक सिखाने के लिए मैंने अवतार लिया था। मेरा काम पूरा हुआ। अब वापस अपने लोक में जाऊंगा।''

राजा, रानी को सिर नवाकर वह वापस मुड़ा। देखते ही देखते अंतर्धान हो गया।●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, उस पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
  'नंदन' ज्ञान-पहेली; हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१।
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. —सैनिक, मैं तुम्हें छोड़ता हूं! (आओ/जाओ)

२. मैं घुप अंधेरे से— गया था। (घिर/डर)

३. यकीन नहीं हुआ, जब आसमान से — को उतरते देखा। (परी/पक्षी)

६. सप्त ऋषियों में इनकी गिनती होती है।

७. जब-जब कहा गया, वहां जाकर ही पता— । (दिया/लिया)

८. आश्चर्य!— भालू ने पंजा दिखाया। (तब/तभी)

९. समझ में नहीं आता,— कहां गया? (बाजा/राजा)

१२. हिंदी का एक प्रसिद्ध महाकाव्य।

ऊपर से नीचे

४. देखो, यह— वहीं जा रहा है। (रथ/पथ)

५. आखिर —गए न! (मान/जान)

१०. — तो दिया, पर घबरा रहा था। (बोल/तोल)

११. तुम कहो न कहो, मैं— खाऊंगा। (भी/ही)

काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २६१

नाम ____________________

आयु ______ पता ______________

१	ओ	■	■ २	र	■
■	३ प		■	■	४
५	■	६	री		थ
न	■	■	७	या	■
■	८ त		■	९	जा
१०	■	११	■	■	■
ल	■	■	१२	मा	य

अंतिम तिथि: १५-९-९०
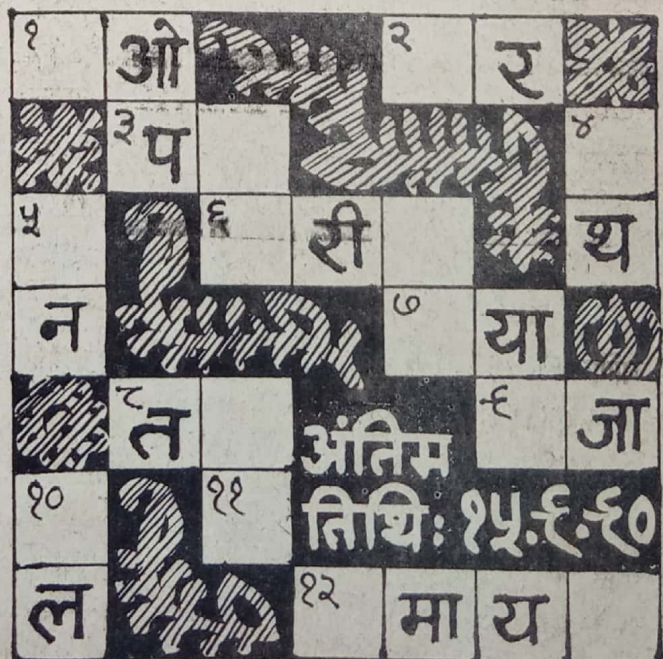
नं. ज्ञा. प. २६१
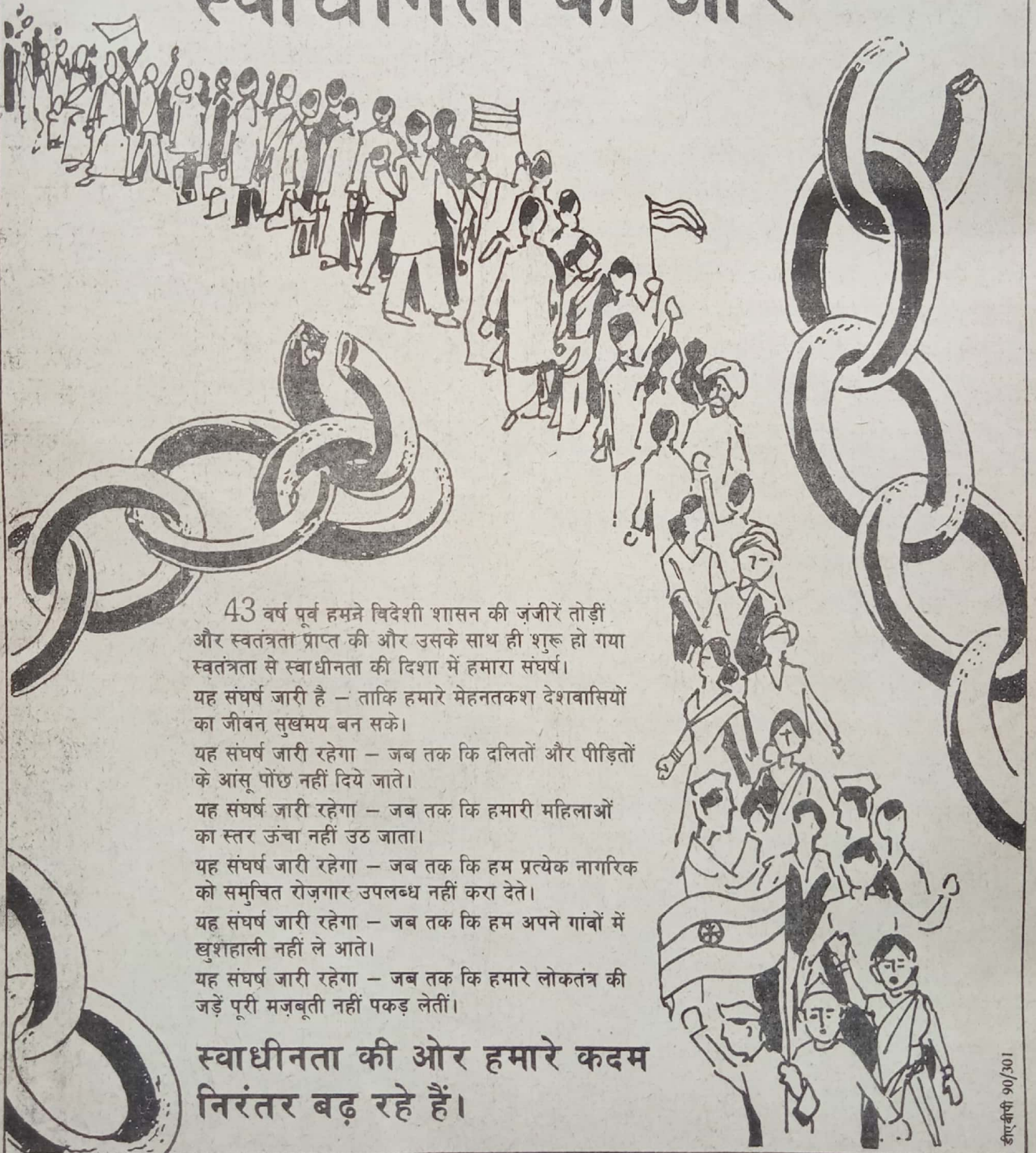
स्वतंत्रता से
स्वाधीनता की ओर
43 वर्ष पूर्व हमने विदेशी शासन की ज़ंजीरें तोड़ीं और स्वतंत्रता प्राप्त की और उसके साथ ही शुरू हो गया स्वतंत्रता से स्वाधीनता की दिशा में हमारा संघर्ष।
यह संघर्ष जारी है – ताकि हमारे मेहनतकश देशवासियों का जीवन सुखमय बन सके।
यह संघर्ष जारी रहेगा – जब तक कि दलितों और पीड़ितों के आंसू पोंछ नहीं दिये जाते।
यह संघर्ष जारी रहेगा – जब तक कि हमारी महिलाओं का स्तर ऊंचा नहीं उठ जाता।
यह संघर्ष जारी रहेगा – जब तक कि हम प्रत्येक नागरिक को समुचित रोज़गार उपलब्ध नहीं करा देते।
यह संघर्ष जारी रहेगा – जब तक कि हम अपने गांवों में खुशहाली नहीं ले आते।
यह संघर्ष जारी रहेगा – जब तक कि हमारे लोकतंत्र की जड़ें पूरी मज़बूती नहीं पकड़ लेतीं।
स्वाधीनता की ओर हमारे कदम
निरंतर बढ़ रहे हैं।
डीएवीपी 90/301

धनराज

—नीलम शर्मा

किसी गांव में एक बुढ़िया रहती थी। घर में दो ही जने थे। वह और उसका पोता। लड़के का नाम था धनराज। बहुत ही निखट्टू था धनराज। देखने में सुंदर, शरीर से स्वस्थ, मगर परले सिरे का घुमक्कड़। जवान हो गया था, मगर काम-धाम से दूर भागता। आदतें भी उसकी अजीब थीं। कभी गुमसुम बैठा रहता। हंसता तो हंसता ही चला जाता। दादी कहती—"बेटा, घर की जमा-पूंजी खर्च हो चली है। तेरे मां-बाप जो छोड़ गए थे, वह कब का खत्म हो गया। मैंने अपने दो-चार जेवर बेचकर अब तक खर्च चलाया, मगर आगे कैसे चलेगा? हम गरीबों को तो कोई उधार भी नहीं देगा। अब तू घूमना-फिरना छोड़कर कुछ काम से लग।"

दादी की बात सुनकर धनराज बोला—"दादी मां! तू चिंता क्यों करती है? मंदिर के पुजारी माधव का कहना है, जिनका कोई नहीं, उनकी देवी मां है। वह सबकी इच्छा पूरी करती है। दादी मां, तुम्हें पता नहीं। मैं रोज देवी के आगे हाथ जोड़ता हूं। देखना, एक दिन धनराज धन जरूर पाएगा।" कहकर वह बाहर घूमने चला गया। बेचारी दादी सिर पकड़कर रह गई। सोच रही थी—इसकी गुजर-बसर कैसे होगी?

एक दिन धनराज अपने एक मित्र के साथ उसकी ससुराल गया। वहां दोनों की बड़ी आवभगत हुई। रात को खाना खाने बैठे, तो थाली में खीर की कटोरी भी थी। धनराज को एक बीमारी थी। उसे रात में कम दिखाई देता था। वह खीर को रायता समझ बैठा। रायता उसे अच्छा नहीं लगता था। पूरा खाना खा लिया, मगर धनराज ने खीर नहीं खाई। खाना समाप्त करते-करते अचानक धनराज का हाथ खीर की कटोरी से टकराया। थोड़ी खीर छलककर उसकी अंगुलियों पर आ गिरी। कोई यह देख न ले, इस डर से उसने चुपचाप अंगुलियों को चाटा, तो खीर का स्वाद आया। अब उसे अखरा। सोचने लगा—'बड़ी गलती की। थाली में रखी खीर को रायता समझ बैठा।' अब कैसे खाए? वह तो खाना खत्म कर चुका था। उसका मित्र भी खाना खत्म करके उठ रहा था।

खाना खाकर दोनों चले, तो मित्र ने भी टोका—"यार, तुमने खीर क्यों नहीं खाई? किशमिश और बादाम पड़े थे खीर में।" किशमिश और बादाम की बात सुनकर तो धनराज के मुंह में पानी भर आया। उसने मित्र से कहा—"अब क्या करूं? हाथ से निकली खीर की कटोरी तो अब हाथ आने से रही।" कहकर बेचारा मन मसोसकर रह गया।

उसने मन में कुछ सोचकर मित्र से कहा—"गर्मी बहुत है। मैं अपनी खाट घर के बाहर बिछाऊंगा। रात को दरवाजा खोलकर सोने की मेरी आदत है।"

मित्र ने ससुराल वालों से कहकर उसकी खाट घर के दरवाजे के बाहर बिछवा दी। धीरे से मित्र ने अंदर से लगी कुंडी भी खोल दी। कहा—"दरवाजा खुला है। डर लगे तो अंदर आ जाना।"

काफी रात बीत गई, मगर उसे नींद नहीं आई। सोच रहा था—'काफी दिन बाद खीर खाने को मिली, मगर खा न सका।' खीर का स्वाद उसकी जीभ पर चढ़ा था, खीर खाने के लिए मन मचल रहा था। उसे विश्वास था। रसोईघर में थोड़ी-बहुत खीर जरूर बची,
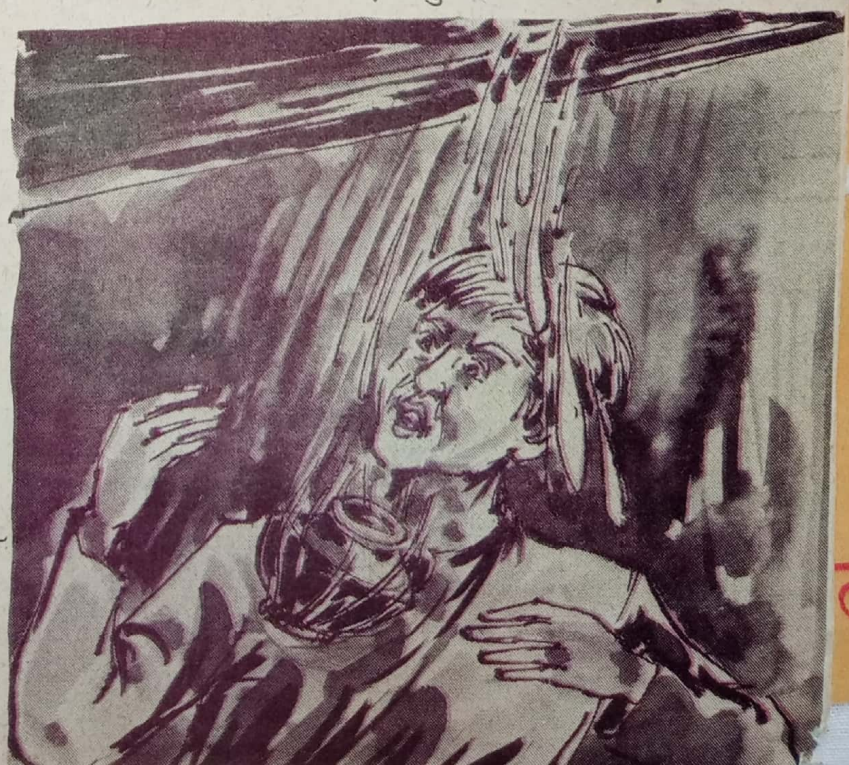
होगी, चलकर खानी चाहिए।

वह उठा। धीरे से दरवाजा खोला। दरवाजा खोलकर वह अंदर की टोह लेने लगा। सभी गहरी नींद में सोए पड़े थे। इधर-उधर देखकर वह रसोईघर में घुस गया। इस समय चांद की रोशनी घर के आंगन में फैली हुई थी। थोड़ा प्रकाश रसोईघर में भी आ रहा था। चांदनी में उसे सब-कुछ साफ दिखाई देने लगा। उसने देखा—खीर की हंडिया छींके पर रखी हुई थी। हंडिया ऊंचाई पर टंगी थी। वह पंजों के बल खड़ा होकर खीर की हंडिया को उतारने की कोशिश करने लगा, मगर इसी कोशिश में छींके की रस्सी टूट गई। हंडिया उलटकर धड़ाम से नीचे आ गिरी, हंडिया की बहुत-सी खीर उसके ऊपर गिरी। खीर गिरने से सारा सिर सफेद हो गया। मुंह पर भी खीर पुत गई। वह घबराया कि कोई देख न ले। वैसे भी हंडिया की आवाज सुनकर घर वाले जाग गए। धनराज भागकर पास के कोठे में जा छिपा। वहां भेड़ें बंधी थीं। उन्हीं के बीच वह जाकर बैठ गया।

घर वालों ने उठकर इधर-उधर देखा। कहीं कोई नहीं था। समझे—बिल्ली ने हंडिया गिराई होगी। वे जाकर सो गए। थोड़ी देर में ही फिर सन्नाटा छा गया।

उसी रात दो चोर घर में चोरी करने घुसे थे। हंडिया की आवाज सुनकर वे भी छिप गए थे। घर वाले सो गए, तो चोर उसी कोठे में आए, जिसमें धनराज छिपा था। एक चोर दूसरे चोर से बोला—''इस बिल्ली ने कबाड़ा कर दिया। हंडिया तोड़कर घर वालों को जगा दिया। अब क्या करें ?''

दूसरे चोर ने कहा—''अब शगुन बिगड़ गया। यहां चोरी करना ठीक नहीं। वैसे भी हम इससे पहले दो जगह चोरी कर चुके हैं। इस थैले में चोरी का काफी माल हैं। आज के लिए यही बहुत है। कल फिर कहीं दांव लगाएंगे।''

पहला चोर बोला—''वह तो ठीक है। मगर चोरी का नियम है कि किसी घर से खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए। हम यहां से कुछ न कुछ तो लेकर जाएंगे ही।''

दूसरे चोर ने कहा—''यह बात है, तो यहां से एक भेड़ ले चलते हैं। जाकर देवी को भेंट कर देंगे।''

''हां, तुमने ठीक कहा।''— पहले चोर ने कहा।

उन्होंने वहां से एक बड़ी बोरी ली। तय किया कि भेड़ को इसी बोरी में बंद करके ले चलते हैं। कोई समझेगा, हम अनाज ले जा रहे हैं।

चोर उनमें से कोई मोटी भेड़ ढूंढ़ने लगे। धनराज तो भेड़ों के बीच में छिपा था। कोठे में घुप्प अंधेरा था। बस चोरों ने धनराज को भेड़ समझ, बोरी में बंद कर दिया। वे बोरी को उठाकर ले चले मंदिर की ओर।

रास्ते में चोर आपस में बोले—''इस भेड़ में तो बड़ा वजन है। लगता है, काफी मोटी-तगड़ी है।'' इस तरह बातें करते वे मंदिर में जा पहुंचे। वहां चोर ने बोरी को सिर से जमीन पर पटक दिया।

चोट लगी, तो धनराज कराह उठा। उसकी चीख सुनकर चोर चौंके। बोले—''यह भेड़ आदमी की तरह क्यों चीख रही है ? ऐसी भेड़ की चीख तो हमने आज तक नहीं सुनी।''

चोर सहमे हुए थे। एक चोर ने बोरी का थोड़ा-सा मुंह खोलकर देखा। खीर में सना धनराज का सफेद-सफेद सिर चेहरा देखकर उनकी घिग्गी बंध गई। वे चिल्लाए—''भूत-भूत-भूत...''

चोर इसी भाग-दौड़ में अपना थैला भी छोड़कर भाग गए। अब धनराज बोरी से बाहर निकला। उसने अपना मुंह और सिर धोया। फिर उसे थैला दिखाई पड़ा। झट दौड़कर उसे उठा लिया। खोलकर देखा तो उसमें सोने-चांदी के कई आभूषण मिले।

धनराज देर तक खड़ा सोचता रहा—क्या करे ? फिर उसे पुजारी की बात याद आ गई। वह मंदिर में आया। बोला—''देवी मां, आखिर तूने मेरी इच्छा पूरी कर ही दी। अब कल खीर बनवाकर तेरा भोग लगाऊंगा। फिर छककर खीर खाऊंगा।'' कहता हुआ धनराज थैला लेकर घर की ओर चल पड़ा।●

चीटू-नीटू
दूसरों को हंसाने से बढ़कर कुछ नहीं...चलो, यह किताब मम्मी को भेंट करते हैं, वह हंस-हंस कर लोट-पोट हो जाएंगी
हंसी के
तुम इन उल-जलूल किताबों पर पैसा खराब करते हो...अब से तुम्हारा जेब खर्च आधा
मानीटर का कार्टून बना कर मैंने सचमुच सब की सेवा की। देखो सभी हंस रहे हैं
चीटू, इस हरकत पर तुम्हें जरूर सजा मिलेगी...पूरे पीरियड बैंच पर खड़े रहो
स्वयं बिल्ली बनकर दूसरों को हंसा रहा हूं...अब भी किसी को एतराज है क्या?
दूसरों को हंसाने के चक्कर में कभी खुद रोना पड़ता है भैया...

पुरस्कृत चित्र

स्मिता शाह द्वारा सी.एच. शाह, जी-१३०, सी.ई.ई.आर.आई. कालोनी, पिलानी-३३३०३१

इनके चित्र भी पसंद किए गए— एल.एन. शर्मा, रतलाम (म.प्र.); गीता रानी, मोहाली (पं.); अजयकुमार शर्मा सिमजोरी (पं. बंगाल); मधुसूदन कुमार, पटना; मोहनराज गुप्ता, गाजियाबाद।
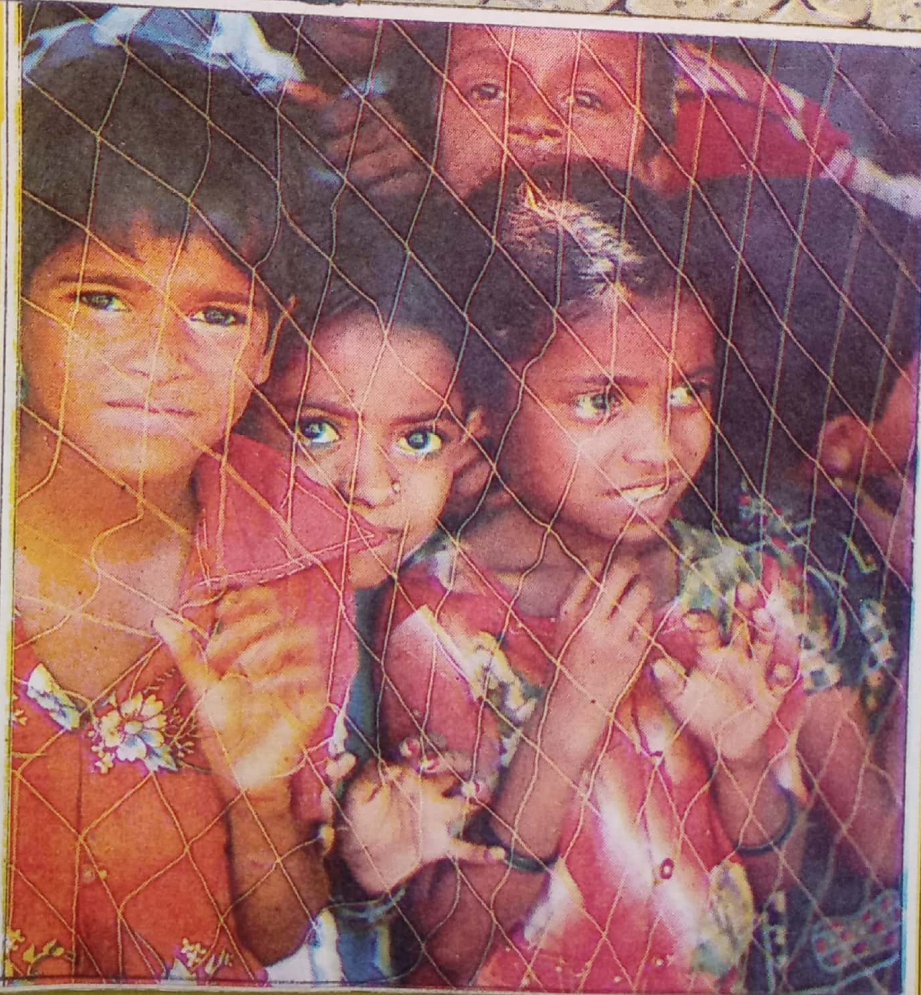
शीर्षक बताइए

जाली के इस पार है क्या ? इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई अच्छा-सा, छोटा-सा शीर्षक सोचिए। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० सितम्बर '९० तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम — नवम्बर '९० अंक

चित्र — आर.के. गोयल

पत्थर बन गए

राजू को खिलौनों से बहुत प्यार था। उसके घर में ढेर सारे खिलौने थे पर उसे हमेशा नए खिलौनों की चाह रहती थी।

एक बार उसने बाजार में अपने पिता से एक महंगी गुड़िया की जिद की। उसके पिता पहले से ही उसकी रोज-रोज की फरमाइशों से परेशान थे। बस राजू को बीच बाजार में ही डांट पड़ गई। उदास राजू टहलने का बहाना बनाकर अकेला जंगल की ओर चल पड़ा और एक पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा। उस पेड़ पर एक परी रहती थी। छोटे-से बच्चे का रोना सुनकर उसने कारण पूछा। कारण जानकर उसने राजू से कहा— "यहां से कुछ दूर बड़ा बरगद का पेड़ है। उसके निकट ही एक खिलौनों से भरा ठेला है। तुम्हें उसमें से अपनी पसंद का एक खिलौना लेना है। ध्यान रहे, लालच करोगे, तो पछताओगे।" कहकर परी गायब हो गई। ठेले भर खिलौनों के नाम से राजू फटाफट बरगद के पेड़ तक पहुंचा। पास ही एक खिलौनों से भरा ठेला खड़ा था। इतने सारे खिलौने देखकर राजू की आंखें आश्चर्य से फैल गईं। ढेर सारी गुड़ियां, कई हाथी, घोड़े, छोटी-छोटी गाड़ियां, छोटे-छोटे घर जैसे सामान देख, राजू का मन ललचा गया। उसने इधर उधर देखा। फिर झट-से कई खिलौने उठा लिए। बाकी खिलौनों को छोड़ने का उसका मन नहीं कर रहा था। उसने सोचा—'काश ! मैं एक बड़ा थैला लाया होता।' खिलौने लेकर राजू कुछ ही दूर चला था कि ठोकर खाकर गिर पड़ा और खिलौने उसके हाथ से छूट गए। राजू संभलकर उठा, पर खिलौने वहां नहीं थे। उसने खिलौने ढूंढ़े पर वे कहीं नहीं मिले। हां, कुछ दूरी पर कई पत्थर पड़े थे।

—संजय शर्मा, जयहरीखाल, पौड़ी गढ़वाल

मेहनत की कमाई

श्यामू एक गरीब मां-बाप का इकलौता लड़का था। उसे खिलौनों से खेलने का बड़ा शौक था। वह खिलौनों के लिए बड़ी जिद् करता था। एक दिन उसने जिद पकड़ ली— "खिलौने लाकर दो, वर्ना मैं खाना नहीं खाऊंगा।" उसके पिता परेशान हो गए। उनके पास खाने के लिए पैसे नहीं थे, तो खिलौने कहां से लाकर देते ? श्यामू रात को बिना खाए सो गया। सुबह उसके पिता ने देखा, श्यामू घर पर नहीं है। उन्होंने उसे बहुत ढूंढ़ा, पर वह नहीं मिला। उधर श्यामू गांव से शहर आ गया। वहां उसने देखा कि कई खिलौनों के ठेले खड़े हैं। वहां एक आदमी खड़ा था। उसने वहां जाकर कहा—"मुझे एक खिलौना दे दो।" ठेले वाला बोला—"मुफ्त में नहीं दूंगा। तुम्हें यह ठेला लेकर खिलौने बेचने होंगे। बाद में तुम्हें एक खिलौना दूंगा।"

श्यामू ने हां कर दी। वह शाम तक ठेला लेकर पूरे शहर का चक्कर लगाता रहा, मगर एक-दो खिलौने ही बिके। तेज भूख भी लगी थी। थकान से बदन चूर-चूर हो रहा था। काफी घूमने के बाद श्यामू कुछ खिलौने और बेच सका। तब वह खिलौने बेचने वाले के पास आया। उस आदमी ने उसे एक खिलौना दिया अब उसे पता चला मेहनत से कमाया गया पैसा कितना कीमती होता है। अब उसे पिता की विवशता का कारण समझ में आ गया था।

—वैभव रस्तोगी, नई दिल्ली

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : मधुलिका वर्मा, नई दिल्ली; वनीता गुदनिए, हैदराबाद।

नई पुस्तकें

चमत्कारी बकरा : लेखक : पावेल बाझोव; मूल्य-४ रुपए ७५ पैसे।

'फूलनगर के बौने' और 'मेज पर गपशप' (नजानू की कहानियां कथा माला) : दोनों के लेखक : निकोलाई नोसोव; प्रत्येक का मूल्य— ३ रुपए ७५ पैसे।

चलें देखने चिड़ियाघर, नन्हे-मुन्ने जानवर : कवि-स. मर्शाक; मूल्य— ३ रुपए २५ पैसे। इन सभी पुस्तकों के प्रकाशक : रादुगा प्रकाशन, मास्को।

सोवियत संघ में प्रकाशित ये चारों पुस्तकें बेहद आकर्षक ढंग से छापी गई हैं। चित्र बहुत अच्छे हैं। पहली पुस्तक 'चमत्कारी बकरा' बूढ़े कोकोवान्या की कहानी है। कोकोवान्या अकेला है। अनाथ दार्योंका के बारे में उसे पता चलता है कि उसके माता-पिता नहीं हैं। वह जिस परिवार में रहती है वे लोग उसे तंग करते हैं। कोकोवान्या दार्योंका को अपने साथ लाता है। उसकी बिल्ली मुर्योंका भी आती है। कोकोवान्या ऐसे जंगली बकरे की तलाश में है जिसका चांदी का खुर है। वह जहां खुर मारता है, वहीं से रत्न निकलते हैं। एक बार दार्योंका और उसकी बिल्ली मुर्योंका भी कोकोवान्या के साथ जाते हैं। दार्योंका को बकरा भी दिख जाता है। टोपी भर रत्न भी मिलते हैं, मगर बकरे के साथ-साथ बिल्ली मुर्योंका गायब हो जाती है। पुस्तक का घटनाक्रम, एक अनाथ मगर साहसी बालिका दार्योंका की कथा बच्चों को जरूर पसंद आएगी।

'फूलनगर के बौने' और 'मेज पर गपशप' पुस्तकें नजानू कथा माला के अंतर्गत लिखी गई हैं। दोनों पुस्तकों की भाषा मजेदार है। फूलनगर बौनों की नगरी है। यहां पढ़ाकू है, जानू-नजानू हैं, शीशू है। एक बार नजानू कह देता है कि सूरज का एक टुकड़ा धरती पर गिरने वाला है। भगदड़ मच जाती है। सब अपना घर छोड़कर भागने लगते हैं। तब जानू आकर कहता है कि नजानू की गप को आपने सच कैसे मान लिया? 'मेज पर गपशप' में नजानू नायक है। वह अपने आसपास बैठी लड़कियों को किस्से सुना रहा है कि कैसे वह चमत्कारी गुब्बारे में बैठकर, यहां तक पहुंचा है। गुब्बारा बनाने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है! जबकि नजानू तो है ही ऐसा जो कुछ नहीं जानता।

चौथी पुस्तक नन्हे-मुन्ने गीतों की है। पुस्तक में कुल उनतीस गीत हैं। शेर, हाथी, ऊंट, शेर का बच्चा, मगरमच्छ, कंगारू, सफेद भालू, शुतुरमुर्ग, कुत्ता, एस्किमो कुत्ता, उल्लू आदि पर परिचयात्मक गीत हैं। प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चों के लिए ये गीत अच्छे हैं। कहीं-कहीं भाषा गड़बड़ करती है।

कानाबाती कुर्र : लेखक; घमंडीलाल अग्रवाल; प्रकाशक : पंकज प्रकाशन, सी. ८/१५८ ए. लोरेंस रोड, दिल्ली-३५; मूल्य : १० रुपए।

इस संकलन की कविताओं के विषय बिलकुल अनोखे हैं। जैसे— 'सुबह', 'हवा सुबह की', 'हंसी' कविताएं बहुत अच्छी हैं। एक पंक्ति—'दादा हंसते मार ठहाका, पर दादी की मंद हंसी।' तख्ती जिसके बारे में अब शहरी बच्चे बहुत कम जानते हैं— बढ़िया कविता है। साधारण ढंग से छपी इस किताब में कुल अट्ठाईस कविताएं हैं।

नंदन ज्ञान पहेली : २५९ (परिणाम)

इस बार सर्वशुद्ध हल किसी का नहीं आया। एक गलती वाले प्रतियोगियों में पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है।

एक गलती : १७ : प्रत्येक को ६० रुपए

१. धीरज अग्रवाल, फिरोजाबाद; २. अंजनीकुमार, मुजफ्फरपुर (बि.); ३. विनय सागर, लखनऊ; ४. स्वर्णकमल कौशिक, समस्तीपुर (बि.); ५. संजीवकुमार गोयल, शिमला; ६. संजीव मैनी, नई दिल्ली; ७. संजय शर्मा, गढ़वाल; ८. संगीता, रायपुर; ९. दीप्ति भदौरिया, फर्रुखाबाद; १०. सीनेंद्रसिंह गहलौत, धार (म.प्र.); ११. सीमा कृपलानी, ब्यावर (राज.); १२. शिवानी अग्रवाल, अम्बाला; १३. आशाकुमारी, गया; १४. दिव्या कल्याणी, सहारनपुर, १५. रीतेश किशोर, दिल्ली; १६. ओमप्रकाश चौधरी, बर्दवान; १७. कविता रामरतन बुबना, नासिक।

समझ का फेर

यह सृष्टि की नई-नई रचना के दिनों की बात है। मनुष्य तब कड़ी मेहनत के बाद अपना पेट भर पाता। वन में जो भी खाने को मिलता खा लेता। तब वह खेती करना और नहाना भी नहीं जानता था, इसलिए हमेशा बीमार भी रहता। एक दिन शंकरजी के नंदी ने उसे रोक कर पूछा—"क्यों भाई नहाते नहीं क्या ?"

मनुष्य बोला—"नहाना क्या होता है ?"

नंदी ने कहा—"जिस तरह हम पेट के लिए खाते हैं उसी तरह शरीर के लिए नहाना जरूरी है।"

"तो हम कितनी बार नहाएं और कितनी बार खाएं ? "—मनुष्य ने पूछा।

नंदी ने शंकरजी को सारी बात बताई फिर पूछा—"भगवान, मुझे मनुष्य पर दया आती है। वह बेचारा दिन भर काम करता है, तब कहीं जाकर एक वक्त खा-पाता है। नहाना भी नहीं जानता। वह दिन में कितनी बार नहाए और कितनी बार खाए ?"

शंकरजी बोले—"उससे कहना दो बार सुबह-शाम नहाए और एक बार खाए।"

नंदी खुश होकर मनुष्य के पास आ बोला—"एक बार नहाना और दो बार खाना।"

मनुष्य ने नंदी के कहे अनुसार करना शुरू कर दिया। अब मनुष्य की मुसीबतें और बढ़ गईं। कई दिनों बाद नंदी और मनुष्य की मुलाकात फिर हुई। मनुष्य को अस्वस्थ देख नंदी बड़ा दुखी हुआ। वह फिर शंकरजी के पास पहुंचा।

बोला—"प्रभु, मैंने मनुष्य को आपके बताए अनुसार दो बार खाने और एक बार नहाने को कहा।"

शंकरजी मुसकराए—"अरे मूर्ख ! मैंने दो बार नहाने और एक बार खाने को कहा था। अब मनुष्य की आदत बन गई है। वह दो बार ही खाएगा और एक बार नहाएगा। लेकिन उसे पूरा भोजन मिले इसके लिए उससे खेती करने के लिए कहना। तुम्हारी मूर्खता से उस पर मुसीबत आई है इसलिए तुम्हारे वंशजों को खेती में उसकी मदद करनी होगी।"

—ईश्वरलाल वलवी

Scanned with CamScanner

मछली को बांधा

— केदारनाथ

घने जंगल में एक भारी-भरकम हाथी रहता था। उसकी सूंड़ के दोनों ओर बड़े-बड़े दांत थे जो उसकी शान को दोगुना कर देते थे। वह पूरे जंगल में घूमता रहता। जंगल के दूसरे जानवर उसके भारी-भरकम शरीर को देखकर भयभीत रहते। यह सब देखकर हाथी को भी बड़ा घमंड हो गया। वह अपने आपको जंगल का राजा समझने लगा। जंगल का राजा बाघ हाथी के इस घमंड को जान गया था। वह हाथी को सबक देना चाहता था।

एक दिन हाथी पानी पीने तथा नहाने के लिए जंगल के बड़े तालाब में उतरा। उस तालाब में ढेर सारी मछलियां रहती थीं। उनमें एक मछली खूब बड़ी और ताकतवर थी। वह भी अपने आपको जल की रानी कहा करती थी। संयोग की बात जैसे ही हाथी पानी में उतरा, बड़ी मछली ने उसे देख लिया। उसने हाथी से पूछा—"तुम कौन हो ?"

हाथी ने चिंग्घाड़ कर कहा—"अरे वाह ! तुम मुझे नहीं जानतीं ? मैं इस जंगल का राजा हूं। तुम कौन हो ?"

मछली ने व्यंग्य से कहा—"आश्चर्य है, इस तालाब में खड़े होकर तुम यह पूछ रहे हो कि मैं कौन हूं ? मैं जल की रानी हूं। यह तालाब मेरा है और इस समय तुम मेरी दया पर निर्भर हो।"

मछली की बात सुनकर हाथी का गुस्सा भड़क उठा। उसने क्रोध भरे स्वर में कहा—"क्या तुम नहीं जानतीं कि यह तालाब भी इस बड़े जंगल का ही एक हिस्सा है ? इस तरह इस तालाब का भी मालिक मैं ही हूं।"

इस तरह दोनों में काफी देर तक तू-तू मैं-मैं होती रही। बात बढ़ चली। दोनों में से कोई भी अपना अधिकार छोड़ने को तैयार नहीं था। काफी बकझक और तकरार के बाद दोनों ने अपनी-अपनी ताकत आजमाने का फैसला किया।

लेकिन दोनों में से किसी को भी यह पता नहीं चला कि पास की झाड़ी में छिपा हुआ बाघ उनकी सारी बातें चुपचाप सुन रहा था। बाघ सारी बात जान गया था। हाथी को सबक देने का यह अच्छा मौका उसके हाथ लग गया था। बाघ ने सोचा कि किसी तरह मछली की मदद करके उसे विजय दिला दी जाए। मछली से हारकर हाथी बड़ा शर्मिंदा होगा और खुद को राजा कहना बंद कर देगा।

इधर मछली और हाथी इस मुकाबले में जीतने के उपाय ढूंढ़ने में लगे थे। मछली हाथी को अपनी ताकत का अहसास कराने के लिए बड़ी बेचैनी से कोई उपाय सोच रही थी। पर उसे कुछ भी सूझ नहीं रहा था। तभी बाघ उसके सामने पहुंच गया। उसने मछली से पूछा—"बहुत परेशान हो मछली रानी, क्या बात है ?"

मछली ने हाथी से अपने मुकाबले की बात बताई। बाघ तो पहले से सारी बात जानता था। मछली के सामने अनजान बनने का नाटक कर रहा था। उपाय भी वह सोचकर ही आया था। लेकिन कुछ देर तक सोचने का दिखावा किया। फिर बोला—"देखो, हाथी को हराने का एक उपाय है, बड़ा आसान उपाय। रस्से का एक छोर हाथी के पास रहेगा, दूसरा छोर तुम्हारे पास। दोनों को रस्सा अपनी ओर खींचना है। हाथी ताकतवर है। जाहिर है, वह जीत जाएगा। लेकिन अगर तुम थोड़ी होशियारी और फुर्ती दिखाओ, तो आसानी से हाथी को हरा सकती हो।"

मछली ने उत्सुक होकर पूछा—"वह कैसे ?"

बाघ ने समझाया—"तुम अपनी ओर वाले रस्से के छोर को पानी के अंदर छिपी किसी चट्टान से खूब मजबूती से बांध देना। हाथी को तो इसका पता भी नहीं चलेगा। वह चट्टान में बंधे रस्से को खींच नहीं पाएगा और इस तरह आसानी से हार जाएगा। अपनी हार से लजाकर वह शायद इस जंगल को भी छोड़कर भाग जाए।"

नियत जगह और समय पर हाथी आ पहुंचा।

मछली उसका इंतजार कर रही थी । दोनों मुकाबला शुरू ही करने वाले थे कि तभी बाघ भी वहां पहुंच गया । उसने दोनों से पूछा—"तुम लोग यहां क्या कर रहे हो ?"

हाथी ने बाघ को बताया—"हम दोनों यहां अपनी-अपनी ताकत आजमाने के लिए आए हैं । अच्छा हुआ जो आप आ गए । अब आप ही हमारे पंच हुए । हार-जीत का फैसला आप ही करेंगे ।" हाथी को अपनी जीत का पक्का भरोसा था ।

बाघ पंच बनने के लिए तैयार हो गया । हाथी ने बाघ को विस्तार से बताया कि मुकाबला किस तरह होगा । बाघ उसकी बात बड़े ध्यान से सुनता रहा । एक खूब लम्बा, मोटा और मजबूत रस्सा लाया गया । बाघ ने रस्से का एक छोर हाथी के पांव में और दूसरा छोर मछली के पंख से बांध दिया । दोनों को थोड़ा पीछे हटकर अपनी-अपनी जगह पर जम जाने का आदेश दिया । हाथी तालाब से थोड़ी ही दूरी पर पैर जमाकर खड़ा हो गया । मछली भी पानी के अंदर चली गई । उसने बड़ी फुर्ती से अपने पंख से बंधा रस्सा खोला और पास की एक कड़ी चट्टान से बांध दिया । और वहीं छिप गई । बाघ ने दहाड़ कर उन्हें जोर आजमाइश शुरू करने का इशारा किया । हाथी जोर लगाकर रस्सा खींचने लगा । परंतु उसे जरा भी सफलता नहीं मिली । कभी वह इधर जाता, कभी उधर । सूंड़ को हिलाता-डुलाता । मगर मछली टस से मस न हुई । जरा-सी मछली में इतनी ताकत ! सोच वह पसीने-पसीने हो गया । मछली आराम से चट्टान के पास ही तैर रही थी । बेचारे हाथी को क्या पताकि रस्सा एक चट्टान से बंधा है, मछली से नहीं । भला चट्टान को वह कैसे खींच पाता ? वह जोर लगाता रहा, लगाता रहा ।

हाथी की यह दशा देखकर बाघ को हंसी आ गई । बड़ी देर तक जोर लगा लेने के बाद हाथी ने हार मान ली । बाघ ने उसके पांव से रस्सा खोल दिया । हाथी दुम दबाकर वहां से भाग गया । उसने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा । ●

—योगराज थानी

बातें रंग-बिरंगी

'एस्ट्रो टर्फ' और 'पॉली ग्रास' के मैदान : दुनिया के किसी भी कोने में यदि हॉकी का अंतर्राष्ट्रीय मुकाबला होगा, तो वह 'एस्ट्रो टर्फ', 'सिंथेटिक टर्फ', 'सुपर टर्फ', या 'पॉली ग्रास' पर ही होगा। ओलम्पिक खेलों में पहली बार इस तरह के मैदान का प्रयोग १९७६ में किया गया। मांट्रियल ओलम्पिक में हॉकी मैच इसी मैदान पर खेला गया था। इसका नतीजा यह हुआ कि जिस भारत ने १९७५ में विश्व कप पर अधिकार जमाया था, वह ओलम्पिक खेलों में सातवां स्थान प्राप्त कर सका। विश्व कप में जिस टीम को सातवां स्थान प्राप्त हुआ, उसने ओलम्पिक में पहला स्थान प्राप्त किया। इस वर्ष एशियाई खेलों का आयोजन चीन की राजधानी पेइचिंग में होगा। यह खेल 'पाली ग्रास' पर खेला जाएगा। भारत में इस तरह का मैदान केवल बंगलौर में है। आजकल भारतीय टीम के खिलाड़ियों को वहीं प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

गेंद और बल्ले के दो सम्राट : क्रिकेट जगत में जो स्थान बल्लेबाजी में भारत के सुनील गावस्कर का है, वही स्थान गेंदबाजी में न्यूजीलैंड के रिचर्ड हैडली का है। एक को महानतम बल्लेबाज और दूसरे को विश्व का महानतम गेंदबाज कहा जाता है। क्रिकेट में किसी भी खिलाड़ी का रिकार्ड तब तक नहीं बताया जा सकता, जब तक वह संन्यास न ले ले, वरना तो हर दिन नया रिकार्ड बनेगा।

सुनील गावस्कर ने १२५ टेस्टों में ३४ शतकों की सहायता से १०,१२२ रन बनाए। हैडली ने ८६ टेस्टों में ४३१ विकेट लेने का रिकार्ड बनाया। ये दोनों ही रिकार्ड क्रिकेट जगत के ऐतिहासिक रिकार्ड माने जाते हैं। हरफन मौला खिलाड़ियों में उनका भी स्थान सबसे ऊपर है। जहां उन्होंने ४३१ विकेट लिए वहीं ३,१२४ रन भी बनाए।

छोटी उम्र : बड़ा नाम: लान टेनिस के हर खिलाड़ी की यह इच्छा होती है कि वह बिम्बलडन में भाग ले। केप्रियाती की उम्र केवल १४ साल थी, तो वह सबसे कम उम्र में विम्बलडन में मैच जीतने वाली खिलाड़ी बन गई। यों तो सबसे कम उम्र में बिम्बलडन खेलने का गौरव आस्ट्रिया की मिता विलमा को हासिल है। उसने १३ साल की उम्र में हिस्सा लिया था लेकिन वह पहले दौर में ही हार गई थीं।

केप्रियाती ने कहा—"यह मेरे जीवन में खुशी का वह क्षण था, जिसे जीवन भर नहीं भूल पाऊंगी।"

जूनियर चैंपियन : लैंडर पेइस : पहले जूनियर प्रतियोगिता में भाग लेना होता है, फिर सीनियर में। लैंडर पेइस की उम्र केवल १७ वर्ष है। वह भारत के ऐसे तीसरे खिलाड़ी हैं जिन्होंने विम्बलडन का जूनियर खिताब जीता। सबसे पहले यह गौरव रामनाथन कृष्णन् ने १९५४ में, उसके बाद उनके पुत्र रमेश कृष्णन् ने १९७९ में और अब लैंडर पेइस ने प्राप्त किया।

मौलाना अबुल कलाम आजाद ट्राफी : हर वर्ष चोटी के खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार दिया जाता है। विश्वविद्यालयों को भी एक ट्राफी दी जाती है' जिसे मौलाना अबुल कलाम आजाद ट्राफी कहते हैं। इसकी शुरूआत १९५६-५७ में की गई थी। इस ट्राफी के जीतने वाले विश्वविद्यालय को खेलों का साज-सामान खरीदने के लिए ५०,००० रुपए नकद भी दिए जाते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय ने पिछले साल और इस साल यह ट्राफी जीती थी।

लम्बी दौड़, लम्बा नाम : पी. टी. ऊषा जितनी बड़ी धाविका हैं उतना ही बड़ा उनका नाम है। बहुत-से लोगों को तो शायद उनका पूरा नाम पता भी न होगा। ऊषा हिन्दी नहीं जानतीं, लेकिन 'नंदन' पाठकों के लिए विशेष रूप से उन्होंने हिन्दी में हस्ताक्षर किए।

पिलावुल्लाकण्डी तेक्के पराम्बिल ऊषा

शीर्षक बताइए : परिणाम

जैसा चित्र, वैसे ही एक से एक बढ़िया मजेदार शीर्षक भेजे पाठकों ने। जुलाई '९० अंक में छपे चित्र पर इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

पास रहे जब मेरा खिलौना, याद न आए रोना-धोना।
—रुचि अग्रवाल, म.नं. ५/१, दोनिमलाई टाउनशिप, जि. बिल्लारी (कर्नाटक)।

रोना-धोना बंद, हंसी बड़ी स्वच्छंद।
—ए. मनोहर, द्वारा-ए. सी. मूर्ति, पो. बा. नं. ५३, सम्भलपुर।

गुड़िया बैठी बिछा बिछौना, खूब हंसी पा एक खिलौना।
—मलाराम बंसल, ग्रा.पो. नेवरा, जि. जोधपुर (राजस्थान)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए— अमित साहू, विदिशा (म.प्र.); ध्रुवकुमार पांडेय, शाहजहांपुर (उ.प्र.); फारूक सैयद नसीर, गोपालगंज (बि.)।

आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. पलंग के ऊपर दीवार पर चित्र डोरी से लटक रहा है।
२. दाएं कोने में रखे खिलौना भालू का अगला दायां पंजा दिखाई दे रहा है।
३. फर्श पर लुढ़के पात्र से अधिक पानी फैला हुआ है।
४. तार से लटकते खिलौना जोकर के कपड़े सफेद हैं।
५. पलंग के पास फर्श पर बिछा कालीन अधिक बड़ा है।
६. दरवाजे का हेंडिल गायब है।
७. बाएं कोने में रखी किताब पर लिखी एक पंक्ति गायब है।
८. कालीन पर खड़े बच्चे का दायां हाथ मुड़ा हुआ है।
९. जग हाथ में लिए खड़ी औरत ने नेकलैस पहन रखा है।
१०. दरवाजे से दीखते आदमी का मुंह ज्यादा खुला हुआ है।

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ———————————— आयु ———
पूरा पता ————————————
————————————
रुचि ————————————

पुस्तक पढ़ने तथा लेखन में रुचि :

१. सोनल जैन, १४ वर्ष, जैन मोहल्ला, दौसा (राज.); २. प्रशांतकुमार सिन्हा, १६, रिमांडहोम, पूर्णिया (बि.); ३. नीरज लिटौरिया, १४, एफ/१४, पूर्वी कालोनी, बीना, सागर (म.प्र.) ४. मौ. तनवीर अंसारी, १४, कस्बा—फलावदा, मो.ऊंचा, मेरठ; ५. विजय बाहेती, ११, ७ नित्यधन मुखर्जी रोड, हावड़ा; ६. वीरेंद्रकुमार खत्री, १५, हसपुरा, औरंगाबाद (बि.); ७. संतोषकुमार, १६, क्वा. नं. एफ.पी-१६, पो. इंद्रपुरी; जि. रोहतास; ८. युवराज सरकार, १३, जी/३, सैक्टर-१६, राउरकेला; ९. सुधाकर झा, १६, क्वा. नं. १८, रोड नं. ८, गर्दनी बाग, पटना; १०. फसीहुररहमान शाही, १४, मो. अरवल शाही, जहानाबाद; ११. इरफान अहमद, १६, इश्तियाक टेलर्स, मंडी धनौरा, मुरादाबाद; १२. प्रवीणकुमार सचदेवा, १२, म.नं. ५२/४४ ई १, गली नं. १७, आनंदपर्वत, नई दिल्ली; १३. बवेंद्रप्रसाद जोशी, १४, द्वारा राजेंद्रप्रसाद जोशी, ग्रा.+पो-मातली, उत्तरकाशी (उ.प्र.); १४. सूर्यप्रकाश छाबड़ा, १२, पंडित हाता, चक्रधरपुर (बि.); १५. सुकुमार सारंगी, १६, गांधीनगर, क्वा. नं. १-बी-१३९, जि. रांची; १६. रामेशकुमार, १३, जी.ई.एल. मिशन कम्पाउंड, आनंदपुर, लोहरदगा (बि.); १७. दिनेश पसारी, १०, कोट मोहल्ला, डीडवाना (राज.); १८. अंजुम आरा, १२, मातृ आश्रम रोड, जामताड़ा, जि. दुमका (बि.); १९. कमलकांत स्वामी, १५, करणी फोटो स्टेट, कचहरी रोड, रायसिंह नगर, श्रीगंगानगर (राज.); २०. बृजेशकुमार १६, निकट—राधाटाकीज, शाजापुर (म.प्र.); २१. कविता निगम, ४७०, सत्ती तालाब, उन्नाव; २२. जुगनू माहेश्वरी, १६, ५/६/२ बामाचरण राय रोड, कलकत्ता; २३. कुमारी गिरीश, ८. द्वारा एस. उपाध्याय, आदर्श नगर, समस्तीपुर (बि.)।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. संतोषकुमार मालवीय, १५ वर्ष, कटपीस गली, बाम्बे बाजार, खंडवा (म.प्र.); २. राजकुमार लाल दास, १५, म.नं. २३ बी. गली नं. २६, चितरंजन (प.बं.); ३. तुलसीराम चड़ार, १३, बेगमगंज, जि. रायसेन (म.प्र.); ४. कमलेश चांयदे, १६, एफ-६०ए, तीन बंगला, रेलवे कालोनी, इटारसी; ५. जयश्री वाणी; १२, गुरुदत्त किराना एंड जनरल स्टोर्स, नंदूरवार (महा.); ६. कुमार भारती, ९, ग्रा.पो. रुपसा, भागलपुर; ७. अनुपम मिश्रा, १२, कल्पावास, बेतिया हाता, गोरखपुर; ८. इफ्तेखार आलम, १५, सुभाष नगर, म.नं. १ए-७१, पो. अमलो, जि. गिरिडीह (बि.); ९. पवनकुमार कालड़ा, १६, १०८, गली मनिहारन, बरेली; १०. अविनाशकुमार सिन्हा, १२, ग्रा.+पो. महुआडीह, (बि.); ११. अमित रस्तोगी, १५, ४ महीपाल नगर, रायबरेली; १२. मनोजकुमार, १६, ग्रा.पो. रधौली, जि. मधुबनी (बि.); १३. नेहा मायावाला, ८, मायावाला बिल्डिंग, स्टेशन रोड, हापुड़; १४. किशोर पाट पिंगुवा, १४, मोरावादी मंडा बगीचा, हरिहरसिंह रोड, रांची; १५. पवनकुमार गर्ग, १६, गांधी रोड पिलखुवा, गाजियाबाद; १६. पुरुषोत्तम गुप्ता, १६, ब्लाक कालोनी, खाते गांव, देवास (म.प्र.); १७. नितीशकुमार जायसवाल, ११ , पी.के. फार्मेसी, खैराचातर गिरीडीह (बि.); १८. सुनीता अरोरा, १६, निकट विजय लक्ष्मी टाकीज के पास, चंदौसी, मुरादाबाद; १९. संजयकुमार सर्राफ, १६, पवन भंडार, न्यू मार्केट जयनगर, मधुबनी (बि.); २०. प्रवीण श्रीवास्तव, १६, माधव स्टोर्स, कचहरी स्टेशन रोड छपरा (बि.); २१. नारायण सेवानी, १४, ५८६ नरसिंह वार्ड, एक्शन कोल्ड ड्रिंक्स फैक्टरी, जबलपुर; २२. अजयकुमार सिंहल, १४, मंडी धनौरा, मुरादाबाद; २३. राजीवकुमार जैन, १५, निकट जैन मंदिर, जि. एटा (उ.प्र.)।

पहेली तथा डाक टिकट संग्रह में रुचि :

१. लक्ष्मण शर्मा, १६ वर्ष, ११, अम्बा मार्केट, अम्बाला; २. रीतेश जैन, १२, ६६, नलिनि सेंट रोड, कलकत्ता; ३. शिंकू शरद, १०, मोहम्मदपुर, पावर हाउस, पो. गुरुकुल नारसन, हरिद्वार; ४. वियोम जैन, १०, ४३९/१३, भोलानाथ नगर, शाहदरा, दिल्ली; ५. नितिन मित्तल, १५, राजेंद्र नगर, मोदीनगर, गाजियाबाद; ६. आकाश सिंह, १६, ५४ एफ, उर्मिला कुंज,लंका, जि. गाजीपुर (उ.प्र.); ७. शशिकांत प्रसाद, १६, ८/३, ई. डब्ल्यू.एस. कालोनी, अल्लापुर, इलाहाबाद; ८. तूलिका अग्रवाल, ९, डालमिया बालिका सीनियर हायर सैकेंड्री स्कूल, चिड़ावा, झुंझुनूं (राज.); ९. विकास मित्तल, १३, निकट आई.बी.पी. पेट्रोल पम्प, भागा, धनबाद (बि.); १०. मोहनलाल, १२, ग्रा. सूरी, पो. सूठी, जि. मंदसौर (म.प्र.)।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

Amul
MILK CHOCOLATE
बदमाश मोटू के लिए
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
रोती पिंकी के लिए
RADEUS/AMC/036/90-H
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
शैतान छोटू के लिए
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
प्यारी प्रीति के लिए
Amul
Badambar
चश्मे चिंटू के लिए
Amul
CRUNCH
MILK CHOCOLATE
मेरी टीचर के लिए
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
Amul
CRISP
Amul
MILK CHOCOLATE
यह सारे मेरे लिए
वितरक—
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फेडरेशन लिमिटेड,
आणंद ३८८ ००१.
अमूल चॉकलेट-प्यार की मीठी भेंट

रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४
MAGGI CLUBBERS FUN LOVERS
MAGGI CLUB
लॉज़ ऑफ़ दि जंगल गेम
स्नैप
सफ़ारी गेम
मैगी क्लब: आओ मनाएं
जंगल में मंगल!
अपने उपहार मुफ़्त लो!
मैगी नूडल्स के 5 खाली रैपरों के आगे वाले
हिस्से से यह चिन्ह काटो और अपनी पसंद के
मुफ़्त उपहार पाने के लिए हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों
में तुम्हें मैगी क्लब की ओर से एक रोचक व आकर्षक
उपहार मिल जाएगा.
यह मत भूलो :
अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो हमें
लिखते समय अपने मनचाहे उपहार के नाम के
साथ अपना नाम और पता ज़रूर लिखना.
और यदि तुम पहले से मैगी क्लब के सदस्य
हो तो अपना मेम्बरशिप नम्बर भी
साथ भेजना.
डिज़्नी टुडे कॉमिक
Disney TODAY
फ़ॉरेस्ट फ़ेसिज़ कैप और मास्क
जंगल स्टैन्डीज़ सेट
MAGGI
2-Minute noodles
हमारा पता है : दि मैगी क्लब
पी.ओ. नं. : 5788, नई दिल्ली-110055
और यही नहीं : अगर तुमने अभी तक 'ट्रैवल इंडिया गेम' नहीं लिया है तो आज ही लो!
HTA 667 HIN